पहली बार २०००
सन् उन्नीस सौ पैंतीस
मूल्य आठ आना

पूज्य मालवीयजी की अपील

"'सस्ता साहित्य मण्डल' ने हिन्दी मे उच्चकोटि की सस्ती पुस्तकें निकालकर हिन्दी की बड़ी सेवा की है। सर्वसाधारण को इस सस्था की पुस्तकें लेकर इसकी सहायता करनी चाहिए।"

मदनमोहन मालवीय

मुद्रक
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस,
दिल्ली

# दो शब्द

दस वर्ष पहले की बात है। मैं शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा से लखनऊ गया था। हृदय मे साहस मात्र था। कुछ दिन बाद मुझे आर्थिक सकट मे पड जाना पडा। मुझे चारो ओर निराशा ही निराशा दिखाई देती थी। न कोई सहायक था और न कोई सहानुभूति के दो शब्द ही कहनेवाला था। मुझे एक कविता की दो पक्तिया बारबार याद आती थी—

भला सुनेगा यहाँ कौन अब,
मेरी करुण कहानी।
जीवन की उलझन मे भूले,
जग के सारे प्राणी॥

सच है, उस वैभवपूर्ण नगरी मे कौन किसकी सुननेवाला था? एक दिन बाजार मे घूमते-घूमते स्वेट मार्डन की "पुशिग टू दी फ्रन्ट" नामक रचना रद्दी कागजो म हाथ लग गई। थोडे से मूल्य पर मैंने पुस्तक खरीद ली और एक रात में ही उसे पढ डाला।

पुस्तक पढने पर ऐसा मालूम हुआ कि कर्मयोगी वीरो के लिए निराशा नाम की तो कोई चीज ही नही है। पुस्तक क्या थी उच्च विचारो का खजाना। वह एक अमोघ शक्ति सिद्ध हुई। पतन और असफलता मे तो उसके एक-एक शब्द जादू का काम करते थे। इस फटी हुई पुस्तक ने मेरे जीवन की काया पलट दी। कई बार पुस्तक को भारतीय नवयुवको के हाथ मे पहुँचाने की इच्छा हुई परन्तु अनेक विपत्ति परिस्थितियो मे पडे रहने के कारण यह स्वप्न सफल न हो सका।

पाठको, जव आपका भाग्य अधकारमय दीखता हो, जव विपत्तियो के वादल चारो ओर घिर रहे हो, जव आप कर्त्तव्य भ्रष्ट हो रहे हो, जव जीवन की नौका—इस वेकारी के युग में—डवाडोल होकर डूवना चाहती हो तव आप "आगे वढो" को उठाइए। एकवार आदि से अत तक पढ जाइए। आपको साहस की सजीवनी शक्ति प्राप्त होगी। आप का मार्ग कष्ट मय होते हुए भी आशा और सुख की प्रभा से दीप्त हो जायगा। आप अपने ध्येय की ओर दृढता से बढ सकेंगे। मेरे इन शव्दो की सचाई आपको यह पुस्तक पढने से ही ज्ञात हो सकेगी। सच तो यह है कि आप विद्यार्थी हो, व्यापारी हो, नौकर हो, युवा हो, बूढे हो, गरीव हो, अमीर हो, सुख मे हो, दुख मे हो—कही कैसी भी परिस्थित मे हो, यह ग्रन्थ आपकी मदद करेगा। आपका सच्चा मित्र सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय मे ससार के महान् पुरुषो के जीवन चरित्रो का—चुने हुए उदाहरणो का—वडे ही रोचक ढग से समावेश हुआ है। उनके जीवन चरित्रो की ये चुनी हुई वाते हरेक के जीवन को लाभदायक और उन्नति के पथ पर ले जानेवाली है। आप उन्नति के शिखर पर चढना चाहते हो तो इन वातो का मनन कीजिए और उन्हे अपने जीवन मे प्रयोग कर देखिए। ये चरण चिन्ह अमर चिन्ह है। इन पर चलकर भूले भटके लोग सफलता के द्वार पर अवश्य पहुँच सकेंगे।

जिस ग्रन्थ से लाखो ने लाभ उठाया उससे आप भी लाभ उठा अपने जीवन को सुखी वनाने मे समर्थ हो—यही मेरी कामना है।

विनीत

जवलपुर
५-९-३५

नाथूराम शुक्ल

# विषय-सूची

# आगे बढ़ो !

[ १ ]

# मनुष्य और अवसर

"कोई भी आदमी जबतक किसी चीज के लिए मिहनत नहीं करेगा तबतक वह चीज उसे मिल नही सकती ।"

—गारफील्ड

"सतर्कता से अवसर की ताक मे रहना, कौशल और साहस से अवसर को प्राप्त करना, शक्ति और दृढता के द्वारा अवसरो को सर्वोत्तम सफलता पर पहुँचाना—निश्चय ही सफलता को देनेवाले प्रधान सद्‌गुण है ।"

—आस्टिन फेल्प्स

"क्या तुम सच्चे हृदय से उद्योगी हो ? तो इस मिनट को व्यर्थ मत जाने दो। जिस बात को तुम कर सकते हो अथवा जिस बात का तुम स्वप्न देख सकते हो, उसे शुरू करदो ।"

"मै रास्ता ढूढ लूगा या अपना रास्ता स्वय बना लूगा ।"

—वर्ग्ले

नील नदी का युद्ध समय पास आ रहा था। नेलसन ने अपने सेनानायकों के सामने लडाई का नकशा पेश किया। कप्तान वेरी उसे देखकर हर्षित हो उठा और वोला—"यदि हमारी जीत हो गई तो दुनिया क्या कहेगी ?"

नेलसन चुप न रह सके। वह वोल उठे—"यदि के लिए कोई स्थान नहीं है, जीत निश्चय ही हमारी होगी। हाँ, हमारे विजय की कहानी कहनेवाला कोई वचेगा या नहीं, यह प्रश्न दूसरा है।" थोड़ी देर मे उसके कप्तान-गण जाने लगे। तव निश्चयपूर्वक नेलसन ने कहा—"कल इस समय के पहले ही या तो मुझे विजय प्राप्त हो जावेगी या मेरे लिए वेस्टमिस्टर के गिर्जे मे कब्र तैयार हो जायगी।"

सब लोग चले गये। जिस वात मे उसके अन्य साथियों को हार की सम्भावना दीखती थी वही उसकी तीव्र दृष्टि और साहसी आत्मा को एक शानदार विजय का अवसर दीख रहा था।

सेन्ट वरनार्ड की घाटी का निरीक्षण करके लौटे हुए एंजीनियरों से नेपोलियन ने पूछा—"क्या रास्ता पार करना सम्भव है ?" एजीनियरों ने कुछ झिझकते हुए कहा—"हाँ, शायद हम पार कर लेंगे।"

"सिपाहियो आगे वढो।" सामने दिखाई देनेवाली वहुतसी महान् कठिनाइयों की ओर जरा भी ध्यान दिये विना नेपोलियन के मुँह से निकल पड़ा। इग्लैण्ड और आस्ट्रिया के लोग इस नाटे कद के नवयुवक की वातो को सुनकर हँसते थे और कहते थे कि ६० हजार मनुष्यों की सेना, सैकडों मन युद्धास्त्र के साथ, आल्पस पहाड को भला कैसे पार

कर सकती है ? परन्तु उसी समय जीनेवा में उसका साथी मासेना शत्रुओं से घिरा भूखों मर रहा था। विजयी आस्ट्रियन नीस के फाटकों पर धावा कर रहे थे। क्या ऐसे संकट के समय नेपोलियन अपने साथियों से मुँह मोड सकता था ?

जब यह असम्भव बात सम्भव होगई तो लोग कहने लगे—"वाह! यह कौनसी बडी बात है, ऐसा तो पहिले भी हो सकता था।" दूसरे लोग राह की भीषण कठिनाइयों के कारण उसे दुस्तर कार्य कहते थे। बहुत से कमान्डरों के पास भी सेना हथियार और अन्य उपयोगी सामग्रिया थीं, परन्तु उनके पास वह दृढ इच्छा शक्ति नहीं थी जिसके कारण बोनापार्ट का कलेजा कठिनाइयों को देखकर वज्र हो जाता था। वह बडो से बडी आपत्ति के आजाने पर अपनी आवश्यकताओं के द्वारा ही अपने अवसरों का मालिक बन बैठता था।

क्या ये सब बाते अपने-आप हो गई, जब होरेशस ने केवल दो साथियों के बल पर ९० हजार टसकनों की सेना को टाइबर के पुल के टूटने तक रोक लिया था, जब लियोनिडूस ने थर्मापोली पर जरजेक को रोका था, जब सीजर ने हार होते देख भाला लिए हुए आगे बढकर युद्ध की कायापलट करदी थी, जब विकल रीड ने अपनी छाती को अस्ट्रेलियन भालों के सामने करके स्वतंत्रता का मार्ग खोल दिया था, जब कि वर्षों तक नेपोलियन किसी युद्ध मे पराजित नही हुआ था ?

इतिहास के पन्ने ऐसे हजारों उदाहरणों से भरे पड़े है जिनसे पता चलता है कि शीघ्र-निर्णय और आत्मा की पुकार पर किये हुये कार्य के सामने ससार मे कोई बाधा ठहर नहीं सकती।

कई लोग असाधारण अवसर की बाट जोहा करते है। साधारण अवसर उनकी दृष्टि मे उपयोगी नहीं रहते। परन्तु वास्तव मे कोई अवसर छोटा-बडा नहीं है। छोटे से छोटे अवसर का उपयोग करने से, अपनी बुद्धि को उसीमे भिडा देने से, वही बडा होजाता है।

ई० एच० चेपिन ने ठीक ही लिखा है कि सर्वोत्तम मनुष्य वे नही है जो अवसरों की बाट देखते रहते है, परन्तु वे है जो अवसर को अपना दास बना लेते है। लाखों अवसरों को खोजने से शायद ही ऐसा अवसर मिले जो खास तौर से तुम्हारी सहायता कर सके। परन्तु तुम्हारे सामने हमेशा ही अवसर उपस्थित रहते है। यदि तुममे इच्छा-शक्ति है, काम करने की ताकत है, तब तो तुम स्वय ही उनसे फायदा उठा सकते हो। ईश्वर की कृपा-रूपी इस बहती हुई गगा मे स्नान करके अपने जीवन को क्यों नही सफल कर लेते?

अवसर न मिलने की शिकायत कमजोर और हिचकिचानेवाले मनुष्य ही हमेशा किया करते है। अवसर? स्कूल अथवा कालेज का प्रत्येक पाठ एक अवसर है। प्रत्येक परीक्षा जीवन का एक अवसर है। कठिनाई का प्रत्येक पल एक अवसर है। प्रत्येक सदुपदेश एक अवसर है। प्रत्येक व्यापार-सम्बन्धी बात एक अवसर है। उस अवसर से तुम नम्र हो सकते हो, मनुष्यत्व प्राप्त कर सकते हो, ईमानदार हो सकते हो, और मित्र बना सकते हो। विश्वासपात्रता का हरएक सुबूत एक अवसर है। तुम्हारी शक्ति और तुम्हारे ईमान पर छोडा हुआ उत्तरदायित्व अमूल्य है। जीवन अवसरों की एक धारा है।

आलसी आदमी ही शिकायत किया करते हैं कि उन्हे समय नहीं है, उन्हे अवसर प्राप्त नही है, पर काम करनेवाले ऐसी बाते कभी नहीं कहते। कुछ नवयुवक छोटे-मोटे अवसरों को उपयोग मे लाकर इतना काम कर डालते है कि जितना दूसरे सारे जीवन मे भी नही कर पाते। शहद की मक्खियों के समान वे नवयुवक हरेक फूल से शहद इकट्ठा करते हैं। प्रत्येक मिलनेवाला व्यक्ति, दिन की प्रत्येक घटना उनके ज्ञान-भण्डार को या उनके व्यक्तित्व को बढाती है।

कारडिनल ने कहा है कि ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नही है जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो, परन्तु जब वह देखता है कि यह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नही नही है तब वह उलटे पैर लौटा जाता है।

राकफेलर ने अपना अवसर पेट्रोलियम (मिट्टी का तेल) मे देखा। उसकी आखों के सामने मन्द-मन्द दीपक के प्रकाश से जागृत होने-वाले सैकडों घर थे। पेट्रोलियम बहुत था किन्तु उसको साफ करने की क्रिया इतनी रद्दी थी कि उससे साफ तेल न निकलता था। यहीं राकफेलर का अवसर था। उसने सेम्युअल एण्डरूज नामक पोर्टर को अपना हिस्सेदार बनाया। उसने एक अच्छी विधि से तेल को साफ करना शुरू किया। उसका तेल बहुत साफ होता था। शीघ्र ही उनकी वृद्धि होने लगी। उन्होंने फ्लागर नामक एक तीसरे हिस्सेदार को शामिल कर लिया। परन्तु एण्डरूज शीघ्र ही असन्तुष्ट हो गया। एक दिन राकफेलर ने पूछा—'तुम क्या लोगे ?'

एण्डरूज ने बेपरवाही से एक पुरजे पर लिख दिया—"१० लाख डालर।" २४ घन्टों के अन्दर राकफेलर ने दस लाख डालर का चेक देते हुये कहा—"एक करोड़ की अपेक्षा दस लाख देकर सस्ते ही मे निपट गये।" वीस वर्षों मे वह छोटा-सा तेल साफ करने का कारखाना—जिसके यन्त्र की कीमत मुश्किल से एक हजार डालर होगी—'स्टैन्डर्ड-आइल ट्रस्ट' मे परिवर्त्तित हो गया, जिसका मूलधन ६ करोड डालर है, जिसके स्टाक का मूल्य १७ करोड डालर था और बाजार-भाव से जिसकी कीमत १ अरब ५ करोड डालर है।

ऐसे अनेक लोग है जो अवसर को पकडकर धनवान होगये और करोडपति कहलाने लगे। परन्तु अवसरों का क्षेत्र यहा समाप्त नहीं हो जाता। नई पीढ़ी के सामने ऐसे-ऐसे अवसर है जिनका उपयोग करके वे एजीनियर, विद्वान, कला-विशारद, कवि आदि बन सकते है। यद्यपि अवसरों के उपयोग से धन कमाना अच्छा काम है, परन्तु धन से भी कहीं श्रेष्ठ कार्य सामने है। धन ही जीवन के प्रयत्नो का अन्त नहीं है, मनुष्य-जीवन के लक्ष्य की चरम सीमा नहीं है, वल्कि एक घटना है। अतएव दूसरे प्रकार के अवसरों पर ध्यान देकर तुम अपने-को महत्त्वशाली व्यक्ति बना सकते हो।

एलिजाबेथ फ्राय नामक देवी ने इग्लैण्ड के जेलखानो मे अवसर देखा। सन १८१३ तक लन्दन के जेलखानों की बडी बुरी अवस्था थी। एक ही कमरे मे लगभग ३०० औरतें अर्ध-नग्न अवस्था मे वन्द कर दी जाती थीं। उनको न विस्तर मिलते थे और न कपडे। बूढ़ी-युवती और वालिकाये सभी घास, कचरे और चिथडों मे सोया करती

थी। कोई उनकी परवाह नहीं करता था। जिन्दा रखने मात्र के लिए सरकार उन्हे भोजन देती थी। श्रीमती फ्राय ने जेलखाने मे शिक्षा का प्रचार करना अपने जीवन का मुख्य काम बना लिया। जेल की स्त्रिया पहिले तो यह सुनकर आश्चर्य मे पड गई। कौन सोचता था कि इस भयंकर विकारपूर्ण दल के उद्धार लिए कोई आगे बढ़ेगा? किसे मालूम था कि माता के महान् प्रेम के द्वारा कोई रमणी इन पाप और अज्ञान मे डूबी हुई स्त्रियों को हृदय से लगावेगी? किन्तु अन्त मे शिक्षा का काम शुरू हो गया। शिक्षा ने बडा परिवर्तन किया। तीन महीने मे वे भयकर पशु शान्त और निर्दोप हो गये। सुधार का विस्तार होने लगा। अन्त मे सरकार ने इस बात को कानूनन जारी कर दिया। एक सदी बीत गई और आज श्रीमती फ्राय की स्कीम सभ्य ससार भर मे काम मे लाई जाती है।

एक लडका मार्ग से जा रहा था। मोटर के धक्के से वह गिर पडा। उसकी एक नस टूट गई और खून बड़े जोर से बहने लगा। किसीको कुछ नही सूझता था कि क्या करे। यदि थोडी देर और खून बहता तो सम्भव था कि लडका बडी बुरी अवस्था मे पड जाता। परन्तु उसी समय एक आस्ट्रले नामक युवक की नजर उसपर पडी। उसने नस के ऊपरी हिस्से को बाध दिया। इससे खून का जाना बन्द हो गया। लडके की जान बच गई। लोग युवक की खूब प्रशसा करने लगे। आस्ट्रले की छाती फूलकर दूनी हो गई। इसी उत्साह ने उसे संसार का एक प्रसिद्ध सर्जन बना दिया।

एक दिन हाथार्न और लागफेलो भोजन कर रहे थे। उनके एक

मित्र जेम्स फील्ड्स भी वहां मौजूद थे। उन्होंने कहा—"देखो मैं कितने दिन से हाथार्न से एक आर्केडियन दन्तकथा के आधारपर कहानी लिखने के लिए कह रहा हूं। कथानक यों है कि आर्केडियन लोगों की भागदौड़ में एक लड़की अपने प्रेमी से जुदा हो गई। उसने अपना सारा जीवन उसे ढूंढने में बिता दिया, और अन्त में एक अस्पताल में मृत्यु-शैया पर उसे पाया।" यह सुनकर लोंगफेलो आश्चर्य में पड़ गया। उसने हाथार्न से कहा—"अगर तुम्हारा विचार इस कहानी को लिखने का नहीं है तो क्या तुम मुझे इसपर कविता बनाने की आज्ञा देते हो?" हाथार्न ने स्वीकार कर लिया। लांगफेलो ने अवसर से लाभ उठाया और संसार के सामने "इवेंजेलिन" नामक काव्य उपस्थित कर दिया।

आंखें खोलकर देखो और हरेक जगह तुम्हें अवसर मिलेंगे। कान खुले रखनेवालों के पास असहाय मरनेवालों की आवाजें पहुंचे बिना न रहेंगी। खुले हृदयवालों को मुक्त हृदय से दान देने योग्य सुन्दर वस्तुओं की कमी नहीं होगी। और खुले हाथों के लिए महान कार्य करने के अवसर की कमी न होगी।

भला कौन नहीं जानता कि पानी से भरे किसी बर्तन में कोई एक ठोस चीज डुबोई जाती है तो थोड़ा पानी बह जाता है, परन्तु कोई अपने इस ज्ञान का उपयोग न कर सका। आर्किमिडीज की नजर इस चीज पर पड़ी। उसने देखा कि प्रत्येक पदार्थ अपने आयतन के अनुसार ही पानी बाहर फेंक देता है। उसी दिन से संसार को सब प्रकार के पदार्थों का आयतन निकालने का तरीका मिल गया।

कौन नहीं जानता था कि कोई भी लटकता हुआ पदार्थ जब हिला दिया जाता है तो वह इधर-उधर हिलता है। उसकी यह गति धीरे-धीरे हवा के विरोध और घर्षण से बन्द हो जाती है। किसीने भी इस घटना का मूल्य नहीं समझा, परन्तु बालक गेलीलियो ने एक दिन पाइजा नगर के गिरजाघर मे ऊँचाई से लटके हुए चिराग को देखा। हवा के झोंके के कारण चिराग झूलने लगा था। इसी झूलने की गति ने 'पेन्डुलम' के सिद्धान्त को जन्म दिया।

यह सब जानते है कि कोई भी चीज ऊपर से नीचे की ओर गिरती है। लेकिन पेड पर से सेब को नीचे गिरते देखकर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का सिद्धात न्यूटन ने ही खोजा था।

अवसर कोई पकी-पकाई रोटी तो है ही नही, कि झट कौर लिया और खाने लगे। उसे आखे खोलकर पहिचानना पडता है, उसमे उचित सुधार करना पडता है और कार्य और उद्देश्य के अनुकूल बनाना पडता है। अवसर का उपयोग तो बीज बोने के समान है। इस बीज से वृक्ष तैयार होता है, फिर फल लगते है, इन फलों से दूसरे लाभ उठाते है। भूतकाल मे उद्योग करनेवालों ने ज्ञान और उपयोग की अगणित चीजों को तैयार किया और आज वे अप्राप्य वस्तुए गली-गली मारी-मारी फिरने लगीं।

वर्तमान युग मे एक पढ़े-लिखे संयमी युवक के सामने, एक चपरासी के लडके के सामने, एक क्लार्क के सामने, एक गली-गली भटकने वाले अनाथ के सामने, पचासों बड़े-बडे सुगम मार्ग खुले पड़े है। पहले इनेगिने थे, आज अनेकों है। जो बाते भूतकाल मे इस श्रेणी के

मनुष्यों की सीमा के बाहर थी वे ही आज उनका स्वागत करने के लिए खडी है। अवसरों की कमी नहीं, भाग्य पलट देनेवाली घटनाओं की कमी नहीं, कमी है तो केवल कार्यशील दृढ युवकों की।

चित्रशाला मे एक व्यक्ति ने प्रवेश किया। बहुतसे चित्र उसे दिखलाये गये। एक चित्र मे एक चेहरा बालों से ढका हुआ था। पैर मे पंख लगे हुए थे।

दर्शक ने पूछा—"यह किसकी तसवीर है ?"

मूर्तिकार ने कहा—"अवसर की।"

"इसका मुंह क्यों छिपा हुआ है ?"

"क्योंकि जब यह मनुष्यों के सामने आता है तो वे इसे पहिचान नही सकते।"

"इसके पैरों मे पख क्यों लगे है ?"

"क्योंकि यह जल्दी चला जाता है, और एक बार चला जाता है तब इसको फिर कोई नही पा सकता।"

एक लेटिन लेखक ने लिखा है—"अवसर के चेहरे के सामने बाल रहते है और पीछे वह गजा रहता है। यदि तुम सामने के बालो को पकड लो तो उसे पकड़े रह सकते हो, परन्तु यदि तुम भाग जाने दोगे तो स्वयं देवता भी उसे फिर न पकड सकेगे।"

परन्तु जो लोग अवसर का उपयोग नही कर सकते, जो अवसरों का उपयोग करना नहीं चाहते और जो अवसरों का उपयोग भविष्य मे भी नही करेंगे, उनके लिए उम्दा से उम्दा अवसर भी किस काम का ?

जिसे हम जीवन की एक महत्वपूर्ण घड़ी कहते हैं वह अरनाल्ड महोदय के कहने के अनुसार एक ऐसा अवसर है जो हमारी पहले की सुरक्षित सारी ताकतों को इकट्ठा कर उनके द्वारा काम निकालता है। आकस्मिक घटनायें केवल उन्हीं लोगों के काम की है जिनके पास उनसे काम लेने का ज्ञान पहिले से ही मौजूद है। दूसरे अन्य लोगों के पास से ऐसी घटनायें यों ही निकल जाती हैं।

हमारी सबसे बडी कठिनाई यह है कि हम हमेशा एक ऐसे बहुत अच्छे अवसर की फिराक मे रहते हैं जिसके द्वारा हम क्षणभर मे महान् हो जायं। जुए के दाव के समान हम बिना कोशिश के ही विजय और धन-दौलत प्राप्त कर लेना चाहते हैं। हम बिना काम किये उस काम मे पारंगत कहलाना चाहते हैं, अध्ययन से दूर रहने पर भी ज्ञानवान् कहलाना चाहते हैं, उधार के धन पर श्रीमत बनना चाहते हैं। कैसा कपटपूर्ण व्यापार है। इस तरह की धोखे की टट्टी कबतक टिक सकेगी ? इस प्रकार जीवन का क्यों सत्यानाश करते हो ?

सारा दिन आप आलस्य मे क्यों बिताते हैं ? हाथ-पैर हिलाइए। काम कीजिए और ज्ञान की बढती हुई सम्पत्ति मे कुछ थोडा-सा जोडकर अपने को कृतार्थ कीजिए—मनुष्य बनिए।

ऐसे जमाने और ऐसे देश में आपका जन्म हुआ है कि जहाँ जगह-जगह पर कहीं पर न पाये जानेवाले साधन और अवसर आपके सामने पडे हैं। काम करने से शक्ति और बुद्धि आपको ईश्वर ने दी है। तब आपको ईश्वर की आज्ञा मागने के लिए क्यों रुकना चाहिए ? इस जगत् मे आपके करने को बहुत-सा काम पडा है।

मानव प्रकृति ऐसी बनी है कि बहुधा एक सुन्दर शब्द या एक तुच्छ सहायता किसी भाई की जीवन-नौका को आपत्ति से बचा सकती है, अथवा उसके जीवन को सफलता के पथ पर ले जा सकती है। हमारे सामने अगणित वीरों के उदाहरण हमे साहस देने और उत्साहित करने के लिए मौजूद है। ऐसे ससार और समय मे, हरएक क्षण हमे किसी न किसी नये अवसर के दरवाजे पर ले जाकर खडा कर देता है।

अपने अवसर की बाट मत देखो, उसे स्वय ही खोजो-पहचानो। फार्युसन नामक गड़रिये लडके के समान अवसर बनाओ। देखो उसने थोड़े से काच के टुकडों के द्वारा दूर आकाश के तारों की दूरी का पता लगाया। जार्ज स्टीफन्स के समान अवसर बनाओ। देखो उसने खरिया मिट्टी के एक टुकड़े की सहायता से कोयले की गाडियो के तख्तो पर गणित के नियमों को सीखा था। अपने-अपने अवसर उन हजारों स्वावलम्बी और निराश्रय बालकों के समान बनाओ। देखो उनके पास कुछ नहीं था, कड़ाके की ठड से उनका शरीर कॉपता था, मूसलाधार बारिश मे वे भीग जाते थे और कडी धूप मे वे नंगे पैर बिना छाते के दौडते फिरते थे। उनके पास पेट भर अन्न प्राप्त करने की ताकत भी नहीं थी, कभी अधपेट रहते तो कभी पानी पीकर ही दिन बिताते थे। उनका कोई सहायक नही था। ऊपर एक परमात्मा, और उनके हाथ पैर और हृदय की दृढता ही उनकी सगिनी थी। इन्ही के बल पर उन्होंने ससार की काया पलट दी। ससार उनका ऋणी है।

युद्ध और शान्ति के समय मे वीरों ने जिस तरह से अपने अवसर को स्वयं वनाकर सफलता हासिल की वैसा तुम क्यों नही करते ? उद्योगी पुरुप साधारण अवसर को भी स्वर्णमय वना लेते हैं।

जब भाग्य चमक रहा हो और कर्त्तव्य राह वतला रहा हो तो उस मौके को मत जाने दो, भय से कापकर दूर न हटो, यदि सुख अपनी वाटिका मे तुम्हे बुला रहा हो तो भी उधर मत झाँको। वीरता से अपने लक्ष्य की ओर वढते चले जाओ। अवसर तुम्हारी राह देखता वैठा है।

---

# [ २ ]

## अभागे बालक

"प्रत्येक आपत्ति श्राप के समान नही होती। जीवन की प्राथमिक आपत्तिया बहुधा आशीर्वाद रहती है। जीती हुई कठिनाइया न केवल हमे शिक्षा ही देती है बल्कि वे भविष्य के प्रयत्नो मे हमे साहसी बनाती है।"

—शार्प

"इसमे सन्देह नही कि बडे-बडे कारखानो के मालिको ने अपना जीवन 'गरीब लडकपन' से शुरु किया था।"

—सेथलो

कीटो नामक एक बहिरे लडके ने पढने की इच्छा बताते हुए कहा—"पिताजी मेरे भूखो मरने की बात से आप क्यों डरते हैं? हमारे पास सब कुछ है। मैं भूख दूर करने का तरीका जानता हूँ। हाटेनटाट नामक जगली बहुत समय तक केवल एक तरह की गोंद ही

खाकर जीते थे। जब उन्हे भूख लगती थी तब वे अपने पेट के चारों ओर पट्टी बाध लेते थे। क्या मैं भी यही काम नहीं कर सकता? झाडियों मे बेर और मकोय फलती हैं, खेतों मे शलजम पाये जाते हैं। क्या इनसे पेट का काम नहीं चल सकता?"

यह एक गरीब और बहरा लडका, एक शराबी पिता का पुत्र था। लोग कहते थे कि वह जूते बनाने के सिवाय कुछ नही कर सकता— लेकिन वही लडका संसार का महान् प्रतिभाशाली बाइबिल का पंडित हो गया था।

क्रियों एक गरीब गुलाम था। उसका दिमाग ललित कलाओं का घर था। सौन्दर्य उसका देवता था। लेकिन ग्रीस मे एक नवीन कानून बना। इस कानून के अनुसार कोई गुलाम एक आजाद व्यक्ति के समान ललित कलाओं का अध्ययन नही कर सकता था। उन दिनों ग्रीस का समाज दो भागों मे बँटा था। एक स्वतंत्र और दूसरे गुलाम। स्वतत्र व्यक्ति ही सब तरह की कलाओं और ऐश-आराम के अधिकारी थे। गुलामों के हाथ मे कठिन से कठिन काम था। जिस समय यह कानून जारी किया गया उन दिनों क्रियों एक सुन्दर मूर्ति-समूह को बनाने मे लगा था। संगमर्मर के टुकड़े मे उसने अपना दिमाग निकालकर रख दिया था, अपना हृदय उसमे उडेल दिया था, अपनी आत्मा रख दी थी। पेरीक्लीज से इनाम पाने की उसकी मुराद थी। लेकिन इस कानून ने तो मानों उसके हाथ काट डाले; उसका दिल मानों टूट गया।

क्रियों की एक बहिन थी। उसे भी इस घटना से बड़ा आघात

लगा। वह आखों मे आसू भर कर देवी-देवताओं से प्रार्थना करने लगी—"हे माता। हमारे घर की पूज्य देवी। मेरे भाई की रक्षा करो। तुम्हारे चरणों मे हमारा मस्तक अर्पित है। देवी। तुम्हारी कृपा ही हमारे जीवन की रक्षा कर सकती है।"

फिर उसने अपने भाई से कहाः—"भैया। तुम मकान के नीचे-वाले तहखाने मे अपनी चीजे लेकर चलो। और मैं थोड़ी देर मे दिया और खाना लेकर आती हूँ। तुम अपने काम को जारी रखो। मै तुम्हारी मदद करूगी। भगवान् जरूर हमारी मदद करेंगे।"

क्रियों तहखाने मे गया। वहाँ उसकी वहिन उसकी सेवा मे तैयार रहती थी। दिन और रात वह अपने अदभुत एव महान् प्रतिभाशाली काम को करता रहा।

इसी समय कला के नमूनों का प्रदर्शन देखने के लिए सारा ग्रीस प्रदेश एथेन्स की कला-प्रदर्शनी मे निमंत्रित किया गया। इसके लिए एगोरा नामक जगह चुनी गई। पेरीक्लीज उस उत्सव के सभापति वनाये गये थे। उनके पास ही श्रीमती एस्पेसिया बैठी हुई थी। फीडीयास, साक्रेटीज, साफोक्लीज आदि सब प्रख्यात आदमी भी पास मे थे।

वहुतसी उच्च कला-कृतियों के नमूने वहाँ थे। लेकिन एक समूह की ओर ही सवका ध्यान ज्यादा जा रहा था। यह अन्य समूहों की अपेक्षा कही अधिक सुन्दर था और ऐसा मालूम होता था मानों ललित कलाओं के देवता अपोलो ने ही स्वयं अपने हाथों से उसे वनाया है। दूसरे कला-विशारदों को उसे देखकर जलन हो रही थी।

"इसका बनानेवाला कौन है?"—दर्शकों ने पूछा।

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। बार-बार चोबदार ने यह प्रश्न किया, पर कही से कोई जवाब नहीं मिलता था। लोग मूर्ति बनानेवाले को जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे और तरह-तरह की बाते व प्रश्न कर रहे थे। इतने मे एक लडकी घसीटकर एगोरा मे लाई गई। उसके कपड़े तितर-वितर हो रहे थे, बाल बिखरे हुए थे, ओठ बन्द थे, परन्तु उसके चेहरे से दृढ़ता टपकती थी।

"यह लडकी कारीगर को जानती है, परन्तु उसका नाम नहीं बतलाती।" शाति-रक्षकों ने कहा।

लडकी से फिर पूछा गया। मगर वह चुप रही। उसे उत्तर न देने की सजा की सूचना दे दी गई, लेकिन उसने फिर भी अपना मुह नहीं खोला। तब पेरीक्लीज ने कहा—"कानून का अमल जरूर होना चाहिए। इस लडकी को कैदखाने मे ले जाओ।"

इन शब्दों के निकलते देर नही हुई थी कि भीड मे से एक युवक निकल पडा। उसके बाल उड़ रहे थे, आखों से प्रतिभा की ज्योति निकल रही थी। दौडकर वह पेरीक्लीज के पैरों पर गिर पडा और बोला—"क्षमा करो। उस लडकी को बचालो। वह मेरी बहिन है। अपराधी मैं हूं। इस मूर्ति-समूह को मेरे ही गुलाम हाथों ने तैयार किया है।"

गुलाम और कला। क्रोधी जन-समूह ने बात भी पूरी न सुनी और चिल्लाकर कहा—"लेजाओ, इसे जल्दी ही जेलखाने मे बन्द कर दो।"

लेकिन पेरीक्लीज ने खड़े होकर कहा—"नहीं, जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक ऐसा नहीं हो सकता। एक बार इस कला-समूह को तो देखो। देखो, कला के देवता भगवान् अपोलो खुद निर्णय कर रहे है कि ग्रीस

का यह कानून कितना जालिम है। कानून का सबसे ऊँचा उद्देश कला का विकास होना चाहिए। हमारा कला-प्रेम ही हमे अमर बना सकता है, जेलखाना नहीं। इस युवक का स्थान कैदखाने मे नही है, मेरे पास है। इसे मेरे पास ले आओ।"

और हजारों आदमियों के सामने एसपीशिया ने क्रियों के सिर पर मुकुट रख दिया। सब लोगों की तुमुल हर्षध्वनि के बीच क्रियों की बहिन का श्रीमती एस्पीसिया ने स्नेह से चुम्बन कर लिया।

अमेरिका के प्रेसीडेन्ट विलसन ने कहा था—"गरीबी मे मेरा जन्म हुआ था। अभाव मेरा पलना था। मै जानता हू कि जब माता के पास रोटी न हो उस समय रोटी मागना किसे कहते है। दस बरस की उम्र मे मैंने अपना घर छोड दिया और ग्यारह बरस तक उम्मेदवारी मे काम करता रहा। साल मे केवल एक महीने स्कूल की शिक्षा मिलती थी। ११ बरसों की कडी मिहनत से मुझे केवल ८४ डालर मिले। मैने एक भी डालर अपने सुख के लिए कभी खर्च नही किया। २१ बरस की उम्र तक मैं एक पसे तक को गिनता रहा। मीलों पैदल चलकर साथी मनुष्यों से काम करने की भीख माँगने की वेदना को मै समझता हू। २१ बरस की उम्र के पहले महीनों मे जंगल गया, बैलो को हाँका और लकडियाँ काटी। मै सवेरे बहुत ही जल्दी उठता था और शाम तक कठिन काम करता रहता था। इतने सब काम करने पर भी मुझे महीने मे ६ डालर ही मिलते थे। प्रत्येक डालर मुझे उस समय इतना बडा दीखता था जितना बडा कि आज की रात का चाँद दीख रहा है।'

आत्म-सुधार और स्वयं-शिक्षा के किसी अवसर को विलसन ने नही खोया। ससार मे बहुत कम आदमी बचत के मिनटों के मूल्य को इतना महान समझते हैं। विलसन हर एक मिनट को सोने के समान समझते थे, उसे फजूल नही जाने देते थे, और उससे जितना अधिक बन सकता था उतना लाभ निकाले बिना न रहते थे। २१ वर्ष की उम्र होने के पहिले उन्होंने एक हजार अच्छे-अच्छे ग्रन्थों को पढ डाला। इसके बाद नाटिक नामक शहर, को जो उनके गाँव से १०० मील दूर था, काम करने के लिए रवाना हुए। उन्होने बोस्टन शहर होते हुए जाना ठीक समझा जिसमे वे रास्ते के ऐतिहासिक स्थानों को देख सकें। सारे सफर मे उनका केवल एक डालर ६ सेन्ट खर्च हुआ।

एक साल में वे नाटिक की वादविवाद-सभा के खास वक्ता हो गये। ८ वर्ष भी नही बीतने पाये थे कि मासाचुसेट की व्यवस्थापक सभा मे गुलामी के विरुद्ध उनका पहला भाषण हुआ। बारह वर्ष के बाद वे वहाँ की राष्ट्रीय काँग्रेस मे आ गये। उनका प्रत्येक क्षण महान अवसर था। उन्होंने जीवन की प्रत्येक घटना को अपनी विजय का साधन बना लिया था।

लगभग १ हजार बरस पहिले लायोन्सनगर मे एक भोज दिया गया था। बड़े-बड़े लोग उपस्थित थे। प्राचीन ग्रीस की पौराणिक कथाओं के चित्रों के सम्बन्ध में कुछ विवाद हो पड़ा। मेहमानों मे इस तरह से विवाद बढ़ते देखकर गृह-स्वामी ने अपने एक नौकर को बुलाया और उस चित्र के विषय मे समझाने के लिए कहा। नौकर ने

स्पष्ट, संक्षेप, सरल और विश्वसनीय भाषा मे सारे विषय को समझा दिया। सब आश्चर्य मे पड गये और साथ ही सारे झगडे का भी अन्त हो गया।

एक मेहमान ने बडे आदर के साथ पूछा—"महाशय! आपने किस स्कूल मे शिक्षा पाई है?" नौजवान नौकर ने नम्रता से उत्तर दिया—"महाशय! मैंने कई स्कूलों मे शिक्षा पाई है, परन्तु 'विपत्ति के स्कूल मे' मैंने सब से अधिक समय तक अध्ययन किया है।" गरीबी से उसने कितना अच्छा लाभ उठाया। उन दिनो यद्यपि वह एक गरीब नौकर था, परन्तु जल्दी ही यूरोप मे उसकी कलम की कीर्त्ति गूज उठी थी, और आज कौनसा सभ्य देश है जो क्रान्तिकारी जीन जैक रूसो के ग्रन्थो से परिचित नही है?

आठ बरसों तक विलियम कार्बेट हल चलाया करता था। वहा से भाग कर वह लन्दन आया आठ नौ महीने तक वह कानून सम्बन्धी कागजों की नकल करता रहा। फिर पलटन मे भरती हो गया। अपने सैनिक जीवन के प्रथम वर्ष मे एक पुस्तकालय का सदस्य बन गया और उसकी अधिकाश पुस्तके पढ डाली। वह खुद लिखता है कि जब मै ६ पैसे प्रतिदिन तनख्वाह पाता था तब मैंने व्याकरण सीखा था। मेरी कोठरी का किनारा मेरे अध्ययन करने का कमरा था, सिपाही का झोला किताबें रखने की आलमारी थी, मेरी गोद मे पडा हुआ लकडी का तख्ता मेरी टेबिल थी। इस काम मे मुझे एक वर्ष से अधिक नही लगा। मोमबत्तियो और तेल खरीदने के लिए मेरे पास पैसा नही था, ठड के दिनो मे मुझे अधेरे मे रहना पडता

था, आग की रोशनी से मैं काम चलाता था। कलम या कागज खरीदने के लिए मुझे अपने खाने के रुपयों में से खर्च करना पडता था। अतएव मुझे आधे पेट ही रह जाना पडता था। मुझे कभी ऐसा समय नहीं मिला था जिसे मैं स्वतत्रता से अपना कह सकता। दस सिपाहियों की आपस की वातचीत, हँसी, गायन, सीटी और शोर-गुल के समय ही मुझे पढना पडता था। उनकी स्वतंत्रता पर मेरा कोई अधिकार नहीं था। कलम और स्याही के लिए खर्च हो जानेवाले एक फार्दिंग को आप मामूली चीज मत समझिए। वह एक फार्दिंग, ओह! मेरे लिए बडी भारी चोज थी। मेरा स्वास्थ्य अच्छा था और मैं खूव व्यायाम करता था। हरेक आदमी के लिए वाजार-खर्च दो पेंस प्रति सप्ताह मिलता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि एक समय मैंने एक आध पेनी वचाकर जेव में रख ली थी। मेरी इच्छा थी कि सवेरे इसकी एक लाल मछली खरीदूंगा। मुझे वडी भूख लगी और मैंने अपनी जेव में हाथ डाला तो वह विलकुल खाली था। अध-पेनी नदारद थी। भूख के मारे प्राण निकल रहे थे। लेकिन क्या किया जाय? मैं विस्तर पर अपना सिर रख कर वच्चे की तरह व्याकुलता से आँसू वहाता रहा।"

परन्तु कावेट महोदय ने अपनी दरिद्रता और कठिनाइयों का अपनी ज्ञान और सफलता की मुराद को पूरा करने के लिए उपयोग किया। वह लिखता है कि यदि मैं ऐसी परिस्थिति में ऐसा काम कर सका तो क्या संसार भर में कोई ऐसा युवक है,या हो सकता है, जो इस काम को न करने के लिए कोई वहाना ढूँढ निकाले?

थियोडर पारकर ने एक दिन कहा—"पिताजी ! क्या कल मुझे छुट्टी मिलेगी ? गरीब पिता ने यह बात सुनकर आश्चर्य से अपने छोटे-से लड़के की ओर देखा, क्योंकि दूसरे दिन काम बहुत था, परन्तु लडके की सच्ची इच्छा को देखकर उसने उसे छुट्टी दे दी। थियोडर प्रात.काल जल्दी उठा और दस मील पैदल चलकर हावर्ड कालेज पहुंचा। उसने वहा प्रवेश-परीक्षा मे भरती होने की इच्छा बताई । वह आठ बरस की उमर से ही नियमपूर्वक स्कूल नही जा पाया था। ठण्ड के दिनों मे वह केवल तीन महीने जाता था और बारम्बार अपने सबक को हल चलाते समय अथवा कोई और काम करते समय याद किया करता था। यहाँ-वहाँ बचा हुआ समय वह अच्छे-अच्छे ग्रन्थों के पढने मे लगाता था। बेचारा माग-मागकर किताबे पढता था। एक किताब वह माँग नहीं सका परन्तु उसकी उसे बडी जरूरत थी। एक दिन गर्मी के मौसम मे सूर्योदय से पहिले वह उठा और बेरों को चुन थैलों मे भरकर बोस्टन के बाजार मे बेच आया। उनकी बिक्री से जो पैसे मिले उससे उसने लेटिन कोप खरीदा।

जब थियोडर रात मे बडी देर से घर लौटकर आया और अपनी सफलता का किस्सा पिता को सुनाया, तब पिता ने कहा :—"शाबास थियोडर ! परन्तु तुम्हे मैं पढने का खर्च देने मे तो असमर्थ हू।" पुत्र ने जरा भी विस्मित न होते हुए कहा—"पिताजी। सच है। पर मैं स्कूल मे नही रहूगा, मैं घर ही मे पढाई करूंगा और अन्तिम परीक्षा मे बेठकर सार्टीफिकेट प्राप्त कर लूँगा।" और उसने ऐसा ही किया। बाद मे चलकर यही व्यक्ति देश का हार हो गया।

एल हूवरिट कहता है—"मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घडी वह थी जब मैने होमर की लिखी हुई इलियड की पन्द्रह पंक्तियाँ पढ़ी थी।" उसका पिता जब मरा था तब उसकी उमर १६ वर्ष की थी। वह लुहारी का काम सीखता था। दिन मे १०-१२ घंटे रोज उसे भट्ठी का काम करना पडता था। भट्ठी धोंकते समय वह अंकगणित के प्रश्न हल करता जाता था। दस बरस बाद उसने वुस्टर के पुस्तकालय का आश्रय लिया। उस समय वह रोज अपनी दिनचर्या लिखता था। उसकी कुछ सतरों पर दृष्टि डालिए :—

"सोमवार जून १८, सिरदर्द, ४० पृष्ठ कुवियेर की लिखी हुई, पृथ्वी-सम्बन्धी बातें, ६४ पृष्ठ फ्रेन्च, ११ घंटे भट्ठी धौंकना। जून १९, ६० लकीरें हिब्रू, ३० डेनिश, १० बोहेमियन, ९ पोलिश, १५ ताराओं के नाम, १० घंटे भट्ठी का काम। बुधवार जून २०, ७५ लकीरें हिब्रू, ८ लकीरें साइरिक, ११ घंटे काम।"

इस तरह से इस बालक का समय बीतता था। गजब का परिश्रम वह करता था। उसने १८ भाषायें और ३२ बोलियों को सीख लिया। वह 'विद्वान लुहार' के नाम से प्रसिद्ध हो गया था। इस भाग्यहीन बालक के अध्यवसाय को देखकर थोडी-सी सुविधावाले लडके यदि शिक्षा प्राप्त न कर सकते हों तो उन्हे शर्म से मुंह नीचा कर देने के लिए यह उदाहरण पर्याप्त है।

टान्पेज युवकों के साथ बातें करते-करते कहा करते कि "नवयुवको! क्या तुमको आपत्तियो को देखकर डर लगता है? क्यों तुम्हारी गरीबी तुम्हारे रास्ते मे बाधक हो रही है? एक बार सोचो,

तुम आज उसी जगह पर खडे हुए हो जिसपर अन्त मे सफलता पानेवाले भी खडे हुए हैं। मेरे शब्दो को ध्यान से सुनो और तीस बरस बाद इनपर विचार करना। तुम्हे पता लगेगा कि उस समय जो लोग देश के लखपती धनवान् प्रभावशाली वक्ता, प्रतिभावान कवि, ऐश्वर्यशाली सौदागर, बड़े-बडे मानवजाति के प्रेमी, राष्ट्र और धर्म के उद्धारक होंगे—वे सब इस समय तुम्हारी ही बराबर खडे हैं। एक इच ऊँचाई पर भी कोई नहीं है। वे भी बडी ही कठिन परिस्थितियों मे फंसे हुए है।

"यदि पास कुछ नही है, कोई सम्पत्ति नही है, तो नवयुवक! किसी पुस्तकालय मे जाओ, कुछ पुस्तकों को निकालो और उस परमेश्वर के बनाये इस आश्चर्यजनक यंत्र—अपने शरीर—के हाथ-पैर, आखों और कानों के बारे मे पढो, फिर किसी डाक्टर के साथ अस्पताल मे जाकर शरीर के भीतरी भागों को देखो और कभी भी भूलकर अपने मुंह से मत निकालो कि तुम्हारे पास जीवन-यात्रा शुरू करने के लिए पूँजी नहीं है। देखो हरेक गरीब से गरीब नवयुवक को खुद ईश्वर ने अच्छी तरह से सुसज्जित कर दुनिया मे भेजा है। मिहनत करो, और दुनिया मे अपनी ज्योति प्रकटाओ।"

अखबार बेचने का धन्धा जीवन की सफलता और सम्मान पाने के लिए क्या कोई अच्छी शुरुआत है? अखबार बेचकर रोज के भोजन का प्रबन्ध करना कोई बडी किस्मत की बात नहीं है। तिसपर भी अमेरिका के व्यापार का पुनर्जन्म करनेवाले एडीसन ने, ग्रान्ट ट्रन्क रेलवे पर अखबार बेचने का काम शुरू किया था। थामस एलवा

एडीसन उस समय १५ वर्ष का था। इतनी छोटी उमर मे ही उसने रसायनशास्त्र का अध्ययन करना शुरू कर दिया था।

एडीसन प्रतियोगिता मे हमेशा सर्वश्रेष्ठ निकलता था। थोडी सी उम्र ही मे उसने विज्ञान के धेय को अपना लिया था। हाल मे एक बार जब उससे उसकी सफलता का कारण पूछा गया तब उत्तर दिया कि मैं हमेशा नशे से दूर और कार्य को छोडकर दूसरी सब बातों मे बिलकुल सयमी रहा हू।

दो अशिक्षित और अज्ञात व्यक्ति एक सस्ते-से होटल मे आकर ठहरे। इन्होंने देश के खून मे मिदी हुई एक बुराई को मिटाने का निश्चय किया था। एक ओर ये थे साधनहीन और गरीब व्यक्ति, और दूसरी ओर थे देश के पढ़े-लिखे विद्वान् राजनीतिज्ञ, धर्मोपदेशक, धनशाली और वैभवशाली व्यक्ति। उन्हे राष्ट्र की एक रूढि के विरुद्ध सफल होने का क्या कोई अवसर था? हां। क्योंकि इन युवकों के दिलों मे ऊचे उद्देश्य की एक आग जल रही थी। उनका कार्य सच्चा था। उनमे से एक का नाम बेन्जिमन लॉन्डे था। उसने ओहियो से एक 'द जिनियस आफ युनिवर्सल लिबर्टी' (विश्व-स्वतत्रता की प्रतिभा) नाम का पत्र निकाला था। हर महीने वह उस पत्र की छपी प्रतिया छापेखाने से २० मील की दूरी पर पीठ पर लादकर ले जाता था। अपने ग्राहकों की सख्या बढाने के लिए उसने ४०० मील की यात्रा की थी। वह एक असाधारण व्यक्ति था।

विलियम लाइड गैरीसन को सहयोगी बनाकर उसने इस काम को और भी अच्छी तरह से चलाया। आम सडकों पर काम करनेवाले

गुलामों के दृश्यों ने, घर और कुटम्ब से अलग किये गये इन अभागे गुलामों से लदे हुए जहाजो ने, नीलाम-घर की हृदयविदारक बातो ने, गैरीसन के हृदय पर एक अमिट छाप लगा दी थी। गरीब माता के इस पुत्र ने, जिसे स्कूल की शिक्षा नही मिली थी परन्तु बचपन ही से अत्याचार का विरोध करना सिखाया गया था, इन दोनों को आजादी दिलाने के लिए अपने जीवन को अर्पण करने का निश्चय कर लिया था।

पत्र के पहिले ही अक मे गैरीसन ने "गुलामी से शीघ्र मुक्ति" विषय पर एक जोरदार अग्रलेख लिखा। सारे समाज ने उसे गालियाँ देना शुरू किया। वह पकड लिया गया और जेलखाने मे भेज दिया गया। यह खबर उसके मित्र जान जी० व्हिटियर को मिली। उसने एक धनी मित्र हेनरी बले को लिखा कि आप मिहरबानी करके जुर्माना देकर गैरीसन को छुडा लीजिए। ४९ दिन की कैद के बाद वह छोड दिया गया। गैरीसन को २४ वर्ष की आयु मे अपने आजाद विचारों के कारण जेल भोगनी पडी थी। उसने अपनी जवानी मे एक राष्ट्र की एक बुराई का जोरों से विरोध किया था।

बिना धन, दोस्त और किसी जान-पहचान के उसने बोस्टन से 'लिबरेटर' (मुक्तिदायक) नामक पत्र निकालना शुरू किया। जरा इस युवक की पहिली घोषणा को तो पढिए। वह लिखते है—"मैं सत्य के समान कठोर और न्याय के समान दृढ रहूगा। मै हृदय से सत्य कहता हूँ, मैं व्यर्थ के शब्दों का जजाल नही रखूँगा। मैं क्षमा नही करूँगा। मै एक इंच पीछे नही हटूँगा, मेरी बाते सुननी पडेंगी।"

जिस युवक के खिलाफ सारी दुनिया हो उसके लिए ये कितनी ढिठाई की बाते है ?

दक्षिण करोलिना के आनरेबल राबर्ट हेने ने बोस्टन के मेयर को लिखा—"मेरे पास किसी ने 'लिबरेटर' की एक प्रति भेजी है। कृपया उसके प्रकाशक का नाम लिख भेजिए।" मेयर को पता लगा कि एक युवक इसे एक कोठरी मे छापता है। उसके साथ मे एक हब्शी लडका रहता है तथा कुछ आदमी भी और काम करते है।

परन्तु इसी युवक ने एक कोठरी से 'लिबरेटर' निकालकर सारे संसार के विचारों मे क्रांति मचा दी। लोगों ने सोचा कि इसे जरूर दबाना चाहिए। करोलिना को 'विजीलेन्स असोसियेशन' ने 'लिबरेटर' की प्रति बेचनेवाले को पकडने के लिए १५ सौ डालर का इनाम रखा। एक-दो रियासतों के गवर्नरों ने सम्पादक के सिर के लिए इनाम की घोषणा की। जोर्जिया की कानून-सभा ने ५ हजार डालर का इनाम उसे पकडने और अपराधी साबित करने के लिए रखा।

गैरीसन और उसके साथियों को हर जगह से धमकी दी जाती थी। परन्तु वे अपने उद्देश्य पर डटे ही रहे। अंत मे सफलता मिली और सारे राष्ट्र ने उसका सम्मान किया।

लन्दन की एक घुडसाल मे माइकल फराडे नाम का एक लडका रहता था। वह अखबार बेचा करता था। सात वर्ष की उम्र मे वह एक जिल्दसाज को दूकान मे काम करने लगा। इनसाइक्लोपीडिया नामक पुस्तक की जिल्द बाधते समय उसकी निगाह बिजली के एक लेख पर पडी। उसने उसे पढ़ा। छोटी-मोटी चीजे इकट्ठी करके प्रयोग करने

शुरू किये। एक ग्राहक उस लडके के उद्योग को देख वडा प्रसन्न हुआ और उसे सर हेम्फ्री डेवी का भापण सुनने के लिए ले गया। माइकल ने भापण पर नोट लिख लिये और फिर उन्हे डेवी के पास भेज दिया। इस महान् व्यक्ति ने इसे अपने यहाँ यंत्रों को व्यवस्थित रूप से रखने के लिए नौकर रख लिया। वालक डेवी के प्रयोगो को वड़े ध्यान से देखा करता था। कुछ समय मे यही भाग्यहीन वालक एक वडी भारी सभा मे भापण देने को निमन्त्रित किया गया। वाद मे वह वुलविच की रायल एकेडेमी का अध्यापक नियुक्त कर दिया गया और विज्ञान-ससार मे चमत्कार करने लगा।

भाग्यहीन वालक डिसरेली ने कहा था—"जो वातें एक वार हो चुकी है वे ही फिरसे हो सकती है। मै गुलाम नही हूँ, कैदी नहीं हूँ, और अपनी ताकत से वाधाओं को दूर कर सकता हूँ।" उसके खिलाफ सब कुछ था, उत्साह देने के लिए केवल हजारों वर्षो के उदाहरणमात्र थे। वह सोचता था कि जब जोसफ नाम का गरीव यहूदी ४ हजार वर्ष पहले परिश्रम से मिश्र का प्रधान मंत्री हो गया, तब क्या वह भी प्रधानमंत्री नही हो सकता ? वह छोटे दरजेवालों के बीच से आगे वढा, मध्यम दरजेवालों के बीच से आगे वढा, ऊचे दरजेवालों के वीच से ऊपर निकला, और राजनैतिक तथा सामाजिक शक्ति का मालिक वन वैठा। पार्लमेंट मे लोगों ने उसकी हँसी उडाई, उसे घृणा की नजर से देखा, अपनी अनिच्छाओं को प्रदर्शित किया, परन्तु उसने केवल यही कहा—"समय आवेगा जब तुम मेरी वात सुनोगे।" और समय आया जब वह भाग्यहीन वालक इग्लेण्ड का

प्रधानमंत्री हो गया। लगभग २५ वर्ष तक वह राज्य का भाग्य-विधाता वना रहा।

एक गरीब विधवा थी। उसके तीन वालक थे। परन्तु इन तीन के पास पहिनने को दो ही पायजामे थे। उसे वडी चिन्ता लगी रहती थी कि ये किसी तरह पढ जावें। इसलिए वह अपने हिसाव से उन्हे भेजती थी। शिक्षक को मालूम हो गया कि हरेक लडका तीन दिन मे केवल एक दिन स्कूल आता है। उस गरीव ने जैसा वन सका उनको शिक्षा दी। एक लडका प्रोफेसर, दूसरा डाक्टर और तीसरा लडका पादरी हो गया। "अवसर नहीं है," "भाग्यहीन है," इस तरह की पुकार मचाकर जीवन नष्ट करनेवालों के लिए यह कैसा सुन्दर उदाहरण है।

सफलता पाने के केवल कुछ रास्ते है, उन्हीं रास्तों से लोग विजयी हो सकते है। नवयुवक मे दृढ इच्छाशक्ति होनी चाहिए, उसे काम से घृणा नही करना चाहिए, कोई भी ईमानदारी से किया गया काम उसकी जात को नीचा नही करता। ऊँचे कुल का लड़का वढई का काम करने से वढई नही हो सकता। क्या तुम वाधाओं का सामना कर सकते हो? क्या तुम नाकामयाव होने पर भी नाकामयावी के कारणों को ढूंढकर फिर से आगे वढने के इच्छुक हो? क्या तुम अपने पैरों पर अपने को खडा करने की ताकत रखते हो? क्या तुम मनुष्य के महान भविष्य पर भरोसा करते हो? तो तुम्हारे मार्ग को गरीवी रोक नही सकती, भूख और प्यास तुम्हारी आकाक्षाओ को दवा नही सकती, धन और सहायता की कमी तुम्हारे उत्साह को हटा नही सकती, जनता की हसी और मजाक से तुम अपने कार्यो को

नही छोड सकते। तुम्हारे स्वगत के लिए कही दूरी पर नकली बादलों की ओट मे छिपे हुए मन्दिर मे सफलतादेवी विराजमान है। केवल दृढता से उस ओर बढने ही की जरूरत है।

एक गरीब लडका था। उसे स्कूल की शिक्षा नही मिली थी। परन्तु अपने कार्यों से वह मानवजाति की प्रशसा का पात्र हो सका। अमेरिका के युद्ध के समय वह वहा का सभापति था और उसने ४ लाख गुलामों को मुक्त कर दिया।

इस लम्बे कद के, दुबले-पतले, भद्दी सूरतवाले नवयुवक को झाड काटते हुए कल्पना कीजिए। सोचिए, उसके मकान का फर्श अच्छा नही है, खिडकिया नहीं हैं, वह साझ के समय आग के उजाले मे गणित और व्याकरण का अध्ययन कर रहा है। ब्लेकस्टोन के ग्रन्थ को पढने की इच्छा से वह चार मील की यात्रा करता है और उस अमूल्य पुस्तक को लाता है। रास्ते मे वह सौ पृष्ठ पढ लेता है। यही अब्राहम लिंकन अमेरिका का भाग्यविधाता हो गया।

ओहियो के जंगल की एक झोंपडी मे एक विधवा १८ मास के बालक को लेकर चिन्ता कर रही थी कि किस तरह से भेडिये से बालक की रक्षा हो सकेगी ? थोडे दिनों मे लडका बडा होता है। लकडी काटता, खेत जोतता और माता की मदद करता है। हरेक फ़ुरसत के घन्टे को वह उधार ली हुई पुस्तकों के अध्ययन मे खर्च करता है। १६ वर्ष की उम्र मे वह खच्चर हाकने का काम करता है। जल्दी वह एक पुस्तकालय मे झाडू लगाने और घटी बजाने के काम के लिए दरख़ास्त देता है। वह मंजूर होती है और इससे उसका कुछ खर्च निकल जाता

है। दूसरी जगह वह कपड़े धोने और सामान लाने आदि के काम पर एक डालर प्रति सप्ताह के वेतन पर काम करने लगता है।

शीघ्र ही वह विलियम कालेज मे जा पहुचता है और दो साल मे सम्मान-सहित पास हो जाता है। २६ वर्ष की उम्र मे राज्य की सीनेट मे पहुंचता है और ३३ वर्ष की उम्र में कांग्रेस में प्रवेश करता है। इस तरह से हेरम कालेज मे घन्टे बजाने का काम करनेवाला लडका जेम्स ए गारफील्ड २७ वर्ष मे संयुक्तराष्ट्र अमेरिका का राष्ट्र-पति हो जाता है।

नवयुवको। सबके लिए ससार मे स्थान है। सबके लिए प्रसिद्धि और ख्यति पाने के साधन है। गरीब होते हुए भी लोग जगत् मे बडे-बड़े लेखक हो गये, कवि हो गये, राष्ट्र-निर्माता हो गये, लक्ष्मीपति हो गये, चित्रकार हो गये। फिर तुम क्यों उदास बैठे भाग्य को कोसते हो ? आगे बढो और सफलता तुम्हारी राह देख रही है।

---

# [ ३ ]

## फ़ुरसत की घड़ी

क्या तुम्हे अपने जीवन से प्रेम है ? तब ममय को व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योंकि जीवन उसीसे बना है ।

—फ्रेंकलिन ।

मैंनें समय को नष्ट किया और अब ममय मुझे नष्ट कर रहा है ।

—शेक्सपियर

बड़ी देर तक बेंजमिन फ्रॅंकलिन की दूकान के सामने घूमनेवाले एक आदमी ने अन्त मे पूछा :—

"इस किताब की क्या कीमत है ?"

क्लर्क ने उत्तर दिया—"एक डालर ।"

"एक डालर । क्या इससे कम नहीं ?"

"नहीं ।"

खरीदनेवाले ने थोडी देर इधर-उधर देखने के बाद उससे पूछा—

"क्या मि० फ्रैंकलिन भीतर है ?

"हां, अभी काम मे लगे हुए है।"

"मैं जरा उनसे मिलना चाहता हूँ।"

मालिक बुलाये गये और खरीददार ने पूछा—"मि० फ्रैंकलिन, आप इस पुस्तक की कम से कम क्या क़ीमत लेंगे ?"

"सवा डालर।"

"सवा डालर। अभी तो आपका क्लर्क एक डालर कहता था।"

"ठीक है। लेकिन अपना काम छोड़कर आने मे मेरा समय भी तो खर्च हुआ न ?"

खरीदार आश्चर्य मे पड़ गया और अपनी बातचीत को खत्म करने के विचार से उसने फिर पूछा—"अच्छा, अब इसकी कमसे कम कीमत बता दीजिए तो मैं लेलूँ।"

"डेढ डालर।"

"डेढ डालर। वाह। अभी तो तुम सवा डालर ही कह रहे थे।"

"हां, मैंने वह कीमत उस समय कही थी। पर अब तो डेढ़ डालर होगा, और ज्यों-ज्यों आप देर करते जायेंगे किताब की कीमत बढती जायगी।"

ग्राहक ने जेब से पैसे निकालकर दे दिये और किताब लेकर घर का रास्ता लिया। उसे आज समय को धन अथवा विद्वत्ता मे परिवर्तित कर देनेवाले स्वामी से एक उत्तम शिक्षा मिल गई।

एल हूवरिट कहता है—"ये सब बातें जो मैंने करके दिखा दी हैं

अथवा जिन्हे कर दिखाने का मै अभिलाषी हूं, वे सब धीरे-धीरे धैर्य से और चिऊंटी के समान सतत कार्य-दृढता के द्वारा पूरी की गई है, अथवा की जावेगी। मैं एक घटना के बाद दूसरी घटना, एक विचार के बाद दूसरे विचार, के बल पर आगे बढा हूँ और यदि मैं कभी भी महत्वाकाक्षा से प्रेरित हो उठता हूं तो इसी आशा से कि अपने देश के नवयुवकों के सामने एक ऐसे उदाहरण को उपस्थित करूं जिसके द्वारा वे समय के अमूल्य टुकडों को—जिन्हे क्षण कहते है—काम मे लाना सीखे।"

जो लोग संसार मे बढे है उन्होंने समय के मूल्य को समझा है। जब मनुष्य सोते थे तब एल हुबरिट काम करते थे, जब दूसरे ऐश-आराम मे मग्न थे तब वे सिर झुकाये अपने कार्य मे लगे रहते थे। पार्लमेन्ट मे बर्क का चकित करदेनेवाला भाषण सुनकर उसके भाई ने कहा था—"बड़े आश्चर्य की बात है कि 'नेड' ने कुटुम्ब की सारी प्रतिभा पर अपना ही अधिकार जमा लिया है। परन्तु मुझे याद आता है कि जब हमलोग खेला करते थे तब वह काम करता रहता था।"

दिन मित्रों के वेश मे हमारे सामने आते है और कुदरत की अमूल्य भेंट लाते है। अगर हम उनका उपयोग नहीं करेंगे तो वे चुप-चाप चले जावेंगे।

प्रत्येक सुन्दर प्रभात सुन्दर चीजे लेकर उपस्थित होता है। पर यदि हमने कल के तथा परसों के प्रभात की कृपा से लाभ नहीं उठाया तो आज के प्रभात से लाभ उठाने की शक्ति क्षीण होती चली

जायगी। यदि यही रफ्तार जारी रही तो फिर हम इस शक्ति को बिलकुल ही खो बैठेंगे। किसी विद्वान् ने ठीक ही कहा है कि खोई हुई सम्पत्ति कमखर्ची और परिश्रम से प्राप्त की जा सकती है, भूला हुआ ज्ञान अध्ययन से प्राप्त हो सकता है, नष्ट किया हुआ स्वास्थ्य दवा और संयम से लौटाया जा सकता है, परन्तु नष्ट किया हुआ समय चला जाता है—हमेशा के लिए चला जाता है—वह स्मृति की एक चीज़ हो जाता है—अतीत की एक छायामात्र रह जाता है।

"अरे! अब भोजन करने मे दस-पाँच ही मिनट रह गये है। भाई, अब कोई काम नहीं हो सकता।"—यह बात घर-घर मे सुनी जाती है। लोग यह कभी नहीं सोचते कि इन्हीं क्षणों के द्वारा, इन्हीं पलों के द्वारा, भाग्यहीन कहलानेवाले बालकों ने दुनिया में बड़े-बड़े काम किये है। अब भी यदि हम इन घण्टों को उपयोग मे ला सकें तो निश्चय ही सफलता हमारी होगी।

हेरेट वीचरस्टोव ने अपनी सर्वोत्तम रचना "टाम काका की कुटिया" को घर-गृहस्थी के झंझटों के बीच ही मे लिखा था। भोजन का इन्तजार करने मे जो समय बीत जाता था उसी समय मे बीचर ने फ्राउड की रचना 'इंगलैंड' को पढ़ा था। जितने समय तक काफी उबलती थी उतने समय का प्रतिदिन उपयोग करके लाग-फेलो ने 'इनफरनो' नामक ग्रन्थ का अनुवाद कर डाला था।

कवि बर्न्स ने खेतों पर काम करते समय अपनी अमर कीर्ति से साहित्य को अलंकृत किया। 'पेरेडाइज लास्ट' का लेखक महाकवि मिल्टन अंग्रेजी "कामन वेल्थ" और "प्रोटेक्टरेट" का मन्त्री था। उसने

अपने कामकाज के समय के क्षणो का उपयोग करके इस अमर महा-काव्य की रचना की। जान स्टुअर्ट मिल ने अपना सर्वोत्तम ग्रंथ ईस्ट-इन्डिया हाउस के क्लर्क के जीवन मे लिखा था। गेलीलियो डाक्टरी करता था परन्तु उसके वचे हुये क्षणों के उपयोग के आविष्कारों से संसार ने कितना लाभ उठाया ? ग्लेडस्टन सरीखा प्रतिभाशाली व्यक्ति अपनी जेव मे एक छोटी-सी पुस्तक हमेशा लेकर निकलता था। उसे चिन्ता रहती थी कि कहीं कोई घड़ी व्यर्थ न चली जाय। तव हम-जैसे साधारण अवस्था के मनुष्यों को अपने अमूल्य समय को नष्ट होने से वचाने के लिए क्या न करना चाहिए ? एक-एक क्षण संचित करनेवाले इन लोगों का जीवन हम हजारो नवयुवकों और नवयुवतियों के जीवन का कितना उपहास कर रहा है। वड़े-वड़े पुरुष समय के छोटे-छोटे टुकड़ो को वचाकर महान हो जाते हैं और अपनी असफलता पर आश्चर्य करनेवाले उन्हे योही उड जाने देते हैं। उन्हे जीवन भर मे कभी भी समय का मूल्य मालूम नहीं होता।

माइकिल फरेडे किताबों की जिल्द वाधा करता था। साथ ही अपने वचत के समय को वैज्ञानिक प्रयोग करने मे लगाया करता था। एक समय उसने अपने एक मित्र को लिखा—"मुझे समय की आवश्यकता है। क्या ही अच्छा होता यदि मैं किसी सस्ते भाव पर वर्तमान महाशयो की वचत के घन्टे—नहीं. दिनों को खरीद सकता।"

प्रतिदिन एक घन्टे काम सीखने से अज्ञान व्यक्ति होशियार हो सकता है। एक घन्टा प्रतिदिन पैसा कमाने से मनुष्य दो दैनिक, दो साप्ताहिक, दो मासिक और लगभग एक दर्जन पुस्तकों के खरीदने

लायक धन पैदा कर सकता है। एक घन्टे मे प्रतिदिन २० पृष्ठ पढनेवाला लडका एक वर्ष मे कई हजार पृष्ठ तथा लगभग १८ ग्रन्थों को पढ सकता है। एक घन्टे रोज के उपयोग से साधारण आदमी महान हो सकते है। इस प्रकार दिन का एक घण्टा एक अप्रसिद्ध व्यक्ति को प्रसिद्ध और एक निरुपयोगी पुरुष को अपने देश और जाति का परमोपयोगी आदमी बना डालता है। जब एक घण्टे की इतनी विशेषता है, जब एक घण्टे में जीवन के उलट-फेर करने की इतनी प्रधान शक्ति है, तब दो-चार-छै घण्टे प्रतिदिन खो देनेवाले नवयुवक और नवयुवतियों के जीवन संसार मे क्या करके न दिखा देंगे, यदि वे व्यर्थ जानेवाले समय की रक्षा कर उसका सदुपयोग करे ?

हरेक नवयुवक को अपने फुरसत के समय को किसी अच्छे काम मे लगाना चाहिए। उसे आनन्द मे परिवर्त्तित कर देना चाहिए। यह काम भले ही उनके प्रधान काम से सम्बन्ध न रखना हो—उन्हे चाहिए कि वे अपने हृदय को केवल उसीमे लगादे।

कुछ लडके समय के इधर-उधर के टुकड़ों को बचाकर अच्छी शिक्षा प्राप्त कर लेते है, दूसरे उन्हे खोकर हाथ मींजा करते है। ऐसा कौन नवयुवक है, जो आत्म-सुधार के लिए प्रतिदिन एक घण्टा भी निकाल नहीं सकता ? चार्ल्स फ्रास्ट नामक चमार एक घण्टे रोज अध्ययन करके संयुक्तराष्ट्र का सबसे प्रधान गणित का आचार्य हो गया। जान हण्टर और नेपोलियन केवल चार घण्टे सोते थे। थामस एडीसन केवल तीन घण्टे सोता था।

हण्टर की इकट्ठी की हुई सामग्री को व्यवस्थित रूप मे लाने के

लिए प्रोफेसर ओवन को १० बरस लगे। वह २० घण्टे रोज काम करते थे। हन्टर ने अपने उद्योग से हजारों नमूने इकट्ठे किये थे। भला इससे अधिक उद्योगी उदाहरण किसके जीवन मे मिल सकता है ?

जान एडमूस का समय जब कोई नष्ट करता था तो उसे बड़ा बुरा लगता था। इटली के एक विद्वान् ने अपने कमरे के द्वार पर लिख रखा था—"जो व्यक्ति यहाँ रुकना चाहता है, वह मेरे काम मे मदद देवे।"

महान आदमी हमेशा ही समय के कजूस होते है। सिसेरो कहता था—"जिस समय को अन्य व्यक्ति जनता के दिखावे तथा मानसिक और शारीरिक आराम के लिए खर्च कर देते है उसे ही मै तत्त्वज्ञान के अध्ययन मे लगाता हूँ।" चान्सलर का काम करने के बाद के समय का उपयोग करके लार्ड बेकन ने कीर्त्ति प्राप्त की। एक बड़े राजनीतिज्ञ से भेंट करते समय महाकवि गेटे को अकस्मात एक विचार सूझा। उन्होंने थोडी देर की क्षमा मागी और बगल के कमरे मे जाकर उसे लिख डाला। सर हेम्फ्री डेवी ने अपने समय को काम मे लाकर बड़े-बड़े आविष्कार कर दिखाये। पोप हमेशा रात्रि को उठता था और अपने उन विचारों को लिख लेता था जो उसके कामकाज मे लगे हुए दिवस के जीवन मे नहीं आ पाते थे। ग्रोटे ने अपनी 'ग्रीस का इतिहास' नामक अद्वितीय रचना अपने बचे हुए समय मे लिखी थी।

जार्ज स्टीफनसन फुरसत के समय को सुवर्ण समझता था। उसे वह व्यर्थ नहीं जाने देता था। माजार्ट प्रत्येक मिनट मे कुछ न कुछ

आत्म-सुधार अवश्य करता था। वह इतनी देर तक काम करता रहता था कि सोना भी भूल जाता था। कभी अपने कार्य को समाप्त करने के लिए दो-दो दिन और रात लिखता रहता था। उसने अपनी मृत्यु-शैया पर अपनी प्रसिद्ध रचना 'रेक्यूयम' को लिखा था।

सीजर कहा करता था—"भयंकर दुश्मनों के बीच मे भी मुझे अपने तम्बू के नीचे अन्य कई बातों को सोचने का अवसर मिल जाता था।" एक बार उसका जहाज डूब गया। वह अपने साथ एक पुस्तक की हस्तलिखित प्रति ले गया था। जब जहाज डूब रहा था तब वह अपना ग्रन्थ देखने मे लगा हुआ था।

डाक्टर मारसन गुड लन्दन मे एक रोगी को देखने आ रहे थे। रास्ते मे उन्होंने लुक्रेशियस का अनुवाद कर डाला। डाक्टर डरवन ने अपनी बहुत-सी रचनाओं को कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखा था। वह अपने विचारों को उसी समय लिख लेता था। हेनरी किरक ह्वाइट ने ग्रीक भाषा को दफ्तर से आने-जाने के समय मे पढ़ा था। डाक्टर बरने ने इटालियन और फ्रेंच भाषा को घोड़े की पीठ पर सीखा था।

वर्तमान काल एक कच्ची सामग्री है, जिसके द्वारा हम अपनी इच्छित वस्तुओं को बना सकते है। भूलकर भी भूतकाल और भविष्य की बातों का स्वप्न देखना अच्छा नहीं। अपने सामने की घड़ियों को पकड लो और उनसे कुछ न कुछ पाठ अवश्य ही सीख लो। सच पूछा जावे तो किसी घण्टे के मूल्य को समझनेवाला और उसका उपयोग अच्छी तरह से करनेवाला अभी तक संसार मे पैदा नहीं

हुआ है। किसीने कहा है—"ईश्वर एक बार एक ही क्षण क देता है और दूसरे क्षण को देने के पहले पहलेवाले क्षण को छीन लेता है।"

प्रेसीडेण्ट क्वीनसे हमेशा सोने को जाने के पहिले दूसरे दिन के कार्यों की सूची बना लेता था। इस तरह से समय-विभाग कर लेने से समय नष्ट होने नहीं पाता और हृदय को भी बडी शान्ति रहती है, संध्या को अपने किये हुए कार्य को देखकर बडा हर्ष होता है। यह प्रणाली विद्यार्थी, लेखक, नेता सभी के बड़े काम की है।

काम मे लगे नवयुवक के लिए कोई भी चिंतित नहीं रहता। वह कुछ न कुछ कर ही दिखावेगा। परन्तु वह किस स्थान पर अपने दोपहर का भोजन करता है? अपने निवासस्थान को छोडकर वह रात को कहाँ जाता है? व्यालू करने के बाद वह क्या करता है? रविवार और छुट्टी के दिन वह कहाँ व्यतीत करता है? अपने फ़ुरसत के समय को जिस तरह वह बिताता है उसीसे उसका आचरण प्रकट होजाता है। अधिकाश नवयुवक व्यालू के बाद के समय को सोने मे लगाकर अपने जीवन का नाश कर डालते है। ख्याति और कीर्त्ति पर चलनेवाले अपने सध्या के समय को अध्ययन करने और काम करने मे व्यतीत करते है। वे सन्ध्या को ऐसे व्यक्तियों के ससर्ग मे व्यतीत करते है जो उनके सुधार मे सहायक हो सकें। प्रत्येक सन्ध्या एक नवयुवक के जीवन-मरण का प्रश्न है। व्हीटियर की इन लकीरों मे बडा ही गूढ रहस्य छिपा हुआ है:—

"आज के दिन हम अपने भविष्य को बनाते हैं, अपने भाग्य के

जाले को बुनते है। आज के दिन, आगे के समस्त समय के लिए हम पवित्रता अथवा पाप को चुनते है।"

समय ही द्रव्य है। हमे एक मिनट व्यर्थ नष्ट न करना चाहिए। द्रव्य का खोदेना समय खोने की बराबरी नहीं कर सकता। समय के नष्ट करने का अर्थ है शक्ति का नाश, सामर्थ्य का नाश और अपने आचरण का पतन। इसका मतलब है अवसरों को सदा के लिए खो देना।

एडवर्ड एवेरेट ने लिखा है—हर एक के हाथ मे अपनेको उपयोगी, कीर्त्तिवान् और सुखी बनाने के साधन है। बुद्धि-सुधार के द्वारा, गृद्धदृष्टि से सुधार के प्रत्येक अवसर की ताक मे रहकर, विकारों को तुच्छ समझकर, इन्द्रिय-जनित सुखों को घृणा की दृष्टि से देखकर, उपरोक्त बाते हो सकती है।

---

## [ ४ ]

# प्रतिकूल परिस्थिति

जीवन का सबसे बडा पुरस्कार, जीवन की सबसे बडी दौलत, है—किसी एक बात की ओर प्रवृत्ति लेकर जन्म लेना। इसीकी पूर्ति करने मे मनुष्य को सुख मिलता है।"

—इमरसन

"मै एक आवाज सुन रहा हूँ, वह आप नही सुन सकते। वह मुझे कह रही है—'ठहरो मत।' मुझे कोई हाथ देकर बुला रहा है, परन्तु आप उस हाथ को नही देख सकते।"

—टिकेल

राबर्ट वाटर्स का कथन है कि एक न एक दिन ऐसा अवश्य ही आता है जब प्रतिभावान् मनुष्य किसी एक जबरदस्त शक्ति के द्वारा विधाता के लिखे हुए कार्य की ओर खिच जाता है। चाहे

कठिनाइयों के बादल घिरे हों, और भविष्य कितना ही निराशा-जनक दीखता हो, वह तो आनन्द से और दिल लगाकर केवल उसी एक काम को करेगा। जब उसके प्रयत्न विफल होते हैं, वह गरीब हो जाता है, आवश्यकतायें उसकी ओर ताकती हैं, वह भूखों मरने लगता है, लोग उसे त्याग देते हैं, तब वह भले ही लम्बी सास छोडते हुए कहने लगे—"बडी गलती हुई। मैं फलाँ कार्य करता तो मेरी ऐसी हालत न होती।" परन्तु इस प्रकार के विचार क्षणिक रहा करते है। अन्त मे स्वाभाविक भावना की ही विजय होती है।

तुम मे पलने मे पड़े हुए उस छोटे-से खिलौने के भाग्य मे लिखे हुए विधाता के लेख को पढ़ने की सामर्थ्य नहीं है। क्या तुम दिशा-सूचक यंत्र की सुई मे उत्तरीय ध्रुव को देख सकते हो? ईश्वर ने उसके जीवन की सुई को इस तरह से बनाया है कि वह अपने भाग्य के तारे की तरफ देखती रहती है। तुम भले ही उसे कृत्रिम सलाह से अथवा जबरदस्ती की शिक्षा से कला, कानून डाक्टरी आदि अपने इच्छा के कार्यों के तारों की ओर झुकाने का प्रयत्न कर उसके अमूल्य वर्षों को नष्ट कर दो, परन्तु जब उसे स्वतंत्रता मिलेगी तब वह अपने स्थान पर लौट आवेगी और अपने भाग्य के तारे की ओर ही अपनी दृष्टि रखेगी।

सभ्यता उस समय अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जावेगी जब प्रत्येक व्यक्ति अपने उचित काम को चुन लिया करेगा। जबतक मनुष्य को अपना सच्चा स्थान नहीं मिलता तबतक वह आदर्श रूप मे सफल नहीं हो सकता।

किसी पिता का अपने पुत्र को अपनासा ही बनाने का प्रयत्न करना एक बडा भारी स्वार्थ है। प्रकृति एक ही जैसे दो व्यक्ति कभी नहीं बनाती। प्रत्येक जन्म मे वह अपने ढाचे को बदल डालती है। वही जादूमय मिश्रण दूसरी बार काम मे नहीं लाया जाता।

फ्रेडरिक को गाली दी जाती थी, क्योंकि उसे कला और सगीत से बडा प्रेम था। वह सैनिक शिक्षा से घृणा करता था। उसके पिता इन बातों को पसन्द नहीं करते थे। कहते है कि एक बार उन्होंने अपने पुत्र को मार डालने तक का विचार किया, परन्तु स्वयं उनकी मृत्यु से फ्रेडरिक २८ बरस की उम्र में सिंहासन पर बैठ गया। इसी सगीत और कलाप्रेमी लडके ने प्रुशिया को यूरोप का सब से अधिक प्रतिभा-शाली राष्ट्र बना दिया।

गेलीलियो का पिता उसे डाक्टर बनाना चाहता था और जब उसे शरीर-शास्त्र की पुस्तकें पढने पर बाध्य करता था तब वह उनके नीचे गणित की पुस्तकें छिपाकर बैठता था और चोरी से कठिन-से-कठिन सवालों को हल किया करता था। आठरह बरस की उम्र मे उसने गिरजाघर मे पेण्डुलम के सिद्धान्त का अविष्कार किया। उसने दूरबीन और खुर्दबीन ढूँढकर मनुष्य-जाति के ज्ञान और शक्ति को कई गुना बढा दिया।

माइकल इंजीलो के पिता ने घोषित कर दिया था कि मेरी किसी सन्तान को कला जैसा घृणित कार्य न सीखना चाहिए। उसने उसे दीवारों पर चित्र बनाने के लिए सजा भी दी, परन्तु उसके हृदय मे जलनेवाली चित्रकला की ज्योति को उस महान् चित्रकार ने प्रज्वलित

किया था और उसने उसे कभी सुख से नहीं सोने दिया, जबतक कि उसने सेण्टपीटर और सिसटाइन के गिरजे मे अपने अमर चित्रों को नहीं चित्रित कर लिया।

हेण्डल चाहता था कि उसका लडका वकील हो और इसी कारण वह उसे संगीत से दूर रखने का प्रयत्न करता था। परन्तु लडके को कहीं से एक टूटा हुआ बाजा मिल गया, उसे ही लेकर वह घास के ढेर मे छिपकर बजाता था। एक दिन उसका पिता ड्यूक आफ वेसनफील्ड् के यहाँ गया। लडके ने बाजा बजाकर सबको चकित कर दिया और शीघ्र ही उसके बाजे को सुनने के लिए लोग इकट्ठे होने लगे। एक दिन ड्यूक भी सुननेवालों में था, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। लडका उसके सामने लाया गया। ड्यूक ने लडके को उत्साहित किया और पिता को लड़के की प्रवृत्ति में बाधा न डालने का निवेदन किया।

डेनियल डेफो व्यापारी रहा, सेक्रेटरी रहा, एक फैक्टरी का मैनेजर रहा, कमिश्नर अकाउण्टेण्ट रहा तथा कई छोटी-मोटी पुस्तकों का रचयिता रहा, तब कहीं अन्त मे उसने अपनी संसार-प्रसिद्ध 'राबिन्सन क्रूसो' नामक रचना की थी।

इरस्कीन ने समुद्री बेड़े के कार्य मे चार वर्ष व्यतीत किये और उन्नति की आशा से सेना मे भरती हो गया। इस काम को भी वह दो वर्ष तक करता रहा। एक दिन वह यों ही न्यायालय मे पहुँचा। न्यायाधीश इसकी जान-पहिचान का था। उसने इसे अपने पास बिठलाया और कहा—"देखो, ये इंग्लैण्ड के बड़े-बड़े कानूनदाँ लोग हैं।"

इरस्कीन के हृदय की स्वाभाविक चिनगारी भड़क उठी। वह वहाँ बैठे-बैठे हर एक के व्याख्यान को सुनता रहा। अन्त मे निर्णय निकला कि 'मै इन सबसे आगे निकल सकता हूँ।' बस उसी दिन से उसने कानून के अध्ययन मे अपना मन लगाया और उस क्षेत्र मे वह अपने देश का एक प्रकाड विद्वान् तथा वक्ता हो गया।

वह युवक सुखी है जो अपने मधुर स्वप्नों के कार्य को पा जाता है। यदि उससे वह काम भी अच्छी तरह नहीं करते बनता तो फिर वह कोई कार्य न कर सकेगा। प्रकृति मनुष्य के पीछे पड़ी ही रहती है, जबतक कि वह अपने विधाता के लिखे कार्य मे नहीं लग जाता। वह उसको आगे धकेलती है, प्रेरणा करती है, कष्ट देती और अन्त मे उसे ठिकाने पर पहुचा देती है। लोग भले ही कोशिश करे कि दिशा-सूचक यंत्र की सुई गुरु अथवा शुक्र के तारे की ओर देखने लगे, परन्तु ऐसा होना असम्भव है। उन्हे परीक्षा कर लेनी चाहिए तब कहीं अपने पुत्र को अपनी इच्छाओं की कठोर धार पर लिटाने का साहस करना चाहिए।

यदि किसी गाडी खींचनेवाले घोडे को घुडदौड़ मे शामिल करो तो कैसा मजाक होगा? इससे कहीं ज्यादा हास्यास्पद बात हमारे दिमागों के विचार है। हम समझते है कि कानून, डाक्टरी और प्रोफेसरी ये ही तीन बाते हमारे युवकों के जीवन के लिए निर्दिष्ट की गई है। और क्या दूसरे धन्धे नही है? किसी देश के ८० प्रतिशत ग्रेजुएटों का कानून सीखने के लिए भरती होना कितनी हँसी की बात है? कितने नवयुवक माता-पिता के धन्धे के बुरे नक्काल बनते है, कितने बुरे डाक्टर और वकील

होते है ? देश भर मे ऐसे नवयुवक भरे पडे है. जो निराश हैं, नष्ट हो रहे है, बेकारी मे फँसे हैं, गरीव हो रहे है, भीख मागने पर भी भूखो मर रहे है, साहसहीन हो रहे हैं, तडप रहे है, अगणित दुखों को भोग रहे हैं और ईश्वर से जीवन-मुक्ति की प्रार्थना कर रहे हैं। यह सव क्यों हो रहा है ? क्योंकि वे अपने सच्चे कार्य को नहीं जानते। केवल नौकरी ही उनका लक्ष्य हो रहा है।

दस वर्ष की आयु तक वहुत कम लडकों मे प्रतिभा अथवा किसी एक कार्य की प्रवृत्ति ज्ञात होती है। वहुतसे लडके ज्ञान विस्तृत हो जाने पर और थोड़ी-वहुत शिक्षा पा लेने पर भी अपने भाग्य की लिखावट का वीस वर्ष की आयु तक निर्णय नहीं कर पाते। प्रत्येक व्यक्ति अपने दिमाग के दरवाजे पर ठोकर लगाता है और अपने काम को जानना चाहता है, परन्तु उत्तर नहीं मिलता। इतने पर भी यह कोई कारण नही दीखता कि अपने हाथ के काम को ठीक रीति से न किया जावे। सेमुअल स्माइल्स एक ऐसे धन्धे मे शिक्षित किया गया था जो उसकी रुचि के प्रतिकूल था, परन्तु फिर भी वह उसमे वडी धीरता और योग्यता से भिडा रहा। इससे उसके लेखन-कला के कार्य मे वड़ी सफलता मिली।

अपने प्रतिदिन के कार्य के साथ सचाई तथा ईमानदारी और स्वयं अपने तथा अपने माता-पिता, स्वामी एवं ईश्वर के साथ उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार करते रहने से एक न एक दिन मुख्य कार्य मिल ही जावेगा।

गारफील्ड संयुक्तराष्ट्र का राष्ट्रपति कभी न हुआ होता, यदि वह एक अच्छा शिक्षक, जिम्मेदार सैनिक तथा कुशल राजनीतिज्ञ

न होना। इसी तरह न तो लिंकन और न ग्रान्ट ही बचपन से राजनीति के लिए प्रयत्न कर रहे थे। आदमी का काम है कि वह जिस परिस्थिति मे फेंक दिया गया है उसीमे अच्छी तरह से काम करे। अपनी सारी शक्ति लगादे और मौका मिलते ही अपनी रुचि के मैदान की ओर दौड पड़े। कर्त्तव्य को अपना पथ-प्रदर्शक तारा बनाओ, तुम्हारी योग्यताओ और दृढ़ता के अनुकूल सफलता तुम्हे अवश्य मिलेगी।

यदि हृदय और रुचि बढई के काम को पुकारते है तो बढ़ई हो जाओ, यदि दवाई की ओर है तो डाक्टर हो जाओ। दृढ़-निश्चय के साथ काम करने पर किसी भी नवयुवक के सामने सफलता के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यदि कोई रुचि ही नही मालूम पडती, तो अपने अवसरों और योग्यता के अनुकूल सावधानी से कार्य चुन लेना चाहिए। संसार मे सभी के लिए कुछ न कुछ कार्य है। सच्ची सफलता अपने काम को अच्छी तरह से करने मे ही है, और यदि शरीर मे उत्साह है तो भला इसे कौन नहीं कर सकता?

जो लोग पहले गधे, आलसी और मूर्ख कहलाते थे, वे ही जब सफल होगये तब ससार ने उनके साथ बडा ही दयापूर्ण व्यवहार किया। परन्तु जब वे निराशा और मिथ्या जजालों के बीच मे खड़े होकर सिर उठाने के प्रयत्न कर रहे थे, तब ससार उनके मार्ग मे रोडे अटकाता था, उनके सिर पर डंडा जमाकर सिर नीचे ही रखने को बाध्य करता था। प्रत्येक लडके और लड़की को मौका दो उसे ठीक उत्साह दो, और उसकी भूलो के लिए उसका बिलकुल तिरस्कार करके

हृदय के नवअंकुर को जलाने का प्रयत्न मत करो। यदि तुम्हे उसमे उसकी मूर्खता दीखती है, वेवकूफी दीखती है, तो याद रखो कि बहुत से बेक्राम मूर्ख कहलानेवाले लड़के केवल अपने अनुकूल परिस्थिति मे नही है।

वेलिंगटन को उसकी माता मूर्ख कहती थी। वह ईटन स्कूल मे बड़ा ही आलसी और नासमझ विद्यार्थी था। उसने उस समय तक कोई प्रतिभायुक्त कार्य करके नही दिखाया और सेना मे काम करने के अयोग्य वह प्रतीत होता था। माता-पिता समझते थे कि जबतक पुत्र परिश्रम नही करेगा तबतक वह किसी तरह से असफलता से मुक्त नही हो सकता। परन्तु ४६ वर्ष की उम्र मे उसने ससार के उससे बड़े सेनापति को हरा दिया।

गोल्डस्मिथ शिक्षकों की हसी-मजाक की सामग्री था। लोग उसे 'लकडी का चम्मच' कहकर चिढाते थे। साहित्य की ओर उसकी रुचि थी। उससे डाक्टरी काम करते नहीं बनता था और यदि बन भी जाता तो फिर 'विकार आफ वेकफील्ड' अथवा 'डेजरटेड विलेज' की रचना किसने की होती? डाक्टर जानसन ने देखा कि यह युवक बड़ी विपत्ति मे है और कर्ज अधिक हो जाने के कारण कैदकर लिया जानेवाला है तो ऐसे समय मे उसने 'विकार आफ वेकफील्ड' की हस्तलिखित प्रति एक प्रकाशक को बिकवाकर उसका कर्ज चुका दिया। इस रचना ने गोल्डस्मिथ को प्रसिद्ध कर दिया। सर वालटर स्काट को शिक्षक 'मूढ' कहा करते थे, परन्तु उस मूढ ने ही सैकडा शिक्षकों को शिक्षा देने और संसार के मनोरंजनार्थ अनेकों उपन्यास लिख डाले थे।

इन्हीं सब कारणो से कहा जाता है कि अपनी बुद्धि और प्रतिभा को समझनेवाला आदमी कभी भी दुनिया की हंसी-मजाक की सामग्री नहीं हो सकता और जो भले है वे अपनी प्रतिभा को समझने मे भूल भी नहीं कर सकते।

घबराने और व्यथित होने की आवश्यकता नहीं है। थोडी-सी विवेक-बुद्धि से काम लेकर संसार की यात्रा करना और अपने कार्य को ढूँढ निकालना कोई असम्भव काम नहीं है।

---

## [ ५ ]

# जीवन का उद्देश

"जो कुछ तुम्हारी वृत्ति है उसीमे लगे रहो, अपनी वृद्धि के मार्ग को मत छोडो। प्रकृति तुम्हे जो कुछ बनाना चाहती है वही बनो, तुम्हे विजय मिलेगी। इसके विपरीत यदि तुम और कुछ बनना चाहोगे तो कुछ भी न होसकोगे।"

—सिडनी स्मिथ

"ससार का सचालन करने के लिए मै बधा हुआ नही हूँ, लेकिन ईश्वर ने मेरे लिए जो काम बनाया है उसे अपनी सारी ताकत लगाकर पूरा करने के लिए मै बधा हुआ हूँ।"

—जीन एन्जीलो

हरेक आदमी ससार मे कोई न कोई काम लेकर तो अवश्य ही पैदा होता है। जिस काम की ओर तुम्हारी रुचि हो वही काम तुम्हारा सच्चा काम है। तुम्हारे भाग्य का अधिकार तुम्हारे आचरण के

मार्ग से दिखाई देता है। यदि तुम्हे अपना उचित स्थान प्राप्त हो गया तो अपनी सारी मानसिक और शारीरिक ताकत उसको सफल बनाने मे लगादो, तुम्हे सफलता मिलेगी। क्या कारण है कि दो दूकान खोलनेवालों मे एक सफल होता है लेकिन दूसरा धन खोकर रह जाता है ? सफल होनेवाले की सच्ची प्रवृत्ति और योग्यता दूकान के कार्य की ओर थी लेकिन दूसरे ने केवल दूकान से होनेवाले लाभ को देखकर ही एक के दो रुपये बनाने की कोशिश की थी।

सम्भव हो सके तो ऐसा कार्य चुनना चाहिए जिसमे तुम अपने अनुभव और वृत्ति को सबसे अधिक परिमाण मे केन्द्रीभूत कर सको। ऐसा करने से न केवल तुम्हे अपने कार्य मे आनन्द ही आवेगा बल्कि उसमे तुम अपनी सब से अधिक योग्यता और बुद्धि लगा सकोगे—यही तुम्हारा सब से श्रेष्ठ मूलधन है।

अपनी रुचि की ओर ही बढो। अपनी महत्वाकाक्षाओं के विरुद्ध तुम अधिक समय तक युद्ध नहीं कर सकते। माता-पिता, मित्रगण, दुर्भाग्य भले ही तुम्हारे हृदय की लालसा को रुचि-विरुद्ध कार्य करने या तुम्हे दबाने की कोशिश करे, परन्तु ज्वालामुखी के समान अन्दर की आग एक दिन भडक ही उठेगी। वह अपने इच्छित काम मे चमक उठेगी। जिस काम मे तुम्हारी रुचि नहीं है उसे तुम पूर्णता से नहीं कर सकते। प्रकृति अधूरे और भद्दे कामों को देखकर श्राप देती है, और उसका फल करनेवाले को भोगना पडता है।

फ्रेंकलिन का कहना है—"जिसके पास व्यवसाय है उसके पास एक रियासत है, जिसके पास धन्धा है उसके पास सम्मान और लाभ की

जगह है। अपने पैरों पर खड़े रहनेवाला घुटने टेकनेवाले से अच्छा है।"
इस कथन मे कितनी सच्चाई है। अपनी हीनावस्था मे नोकरी के लिए जान देनेवालों को जानना चाहिए कि व्यवसाय नोकरी से कई दर्जे अच्छा है। उसके लिए क्षेत्र है। दिमाग की प्रवृत्ति और इच्छा यदि उस ओर हो तो जीवन सुखी हुए विना नहीं रह सकता।

एक आदमी को वनाने के लिए दूसरी वातों की अपेक्षा उसका व्यवसाय अधिक उपयोगी है। इसमे उसके पुट्ठे कड़े होते हैं, शरीर मजबूत होता है, खून का प्रवाह तेज होता है, दिमाग शान्त हो जाता है, न्याय-वुद्धि शुद्ध हो जाती है, आविष्कारक प्रतिभा जागृत हो जाती है। उसकी आकांक्षा उठाती है, उसे मनुष्यत्व का ज्ञान होता है और वह उसे वतलाता है कि वह मनुष्य हैं, मनुष्य का कार्य उसे करना चाहिए और मनुष्य के भाग को ग्रहण करना चाहिए। मनुष्योचित व्यवसाय को न करनेवाला कभी नहीं समझ सकता कि वह मनुष्य है। वगैर काम का आदमी, आदमी नही है। काम करना मनुष्य-जीवन का उद्देश है। १५० पौंड हड्डी और मास मनुष्य नही है। हड्डी, मास और दिमाग अच्छी तरह जानते है कि मनुष्य का काम किस प्रकार किया जाता है? मनुष्योचित विचार कैसे सोचे जाते हैं?

कुछ लोग कहा करते है कि यदि कुछ काम न करना पडता तो जिन्दगी वड़े आराम से बीतती। लेकिन खाली पड़े रहना भले ही कुछ दिन अच्छा लगे परन्तु वह हमेशा आनन्द की वात नही हो सकती। पडे रहने से दिमाग तो चुप नही बैठेगा, वह भले-वुरे विचारों का ताना-वाना वुनता ही रहेगा, कुछ न कुछ शैतानी चक्कर चलाता ही रहेगा।

वह एक ऐसी चक्की है जो चलती ही रहती है। यदि उसमे अनाज डाला गया तो वह उसे पीसकर आटा कर देगी और यदि कुछ न डाला जायगा तो खुद ही को पीस डालेगा। ऐसी हालत मे धनी-गरीब छोटे-बडे, सभी के जीवन की एक ही निश्चित धारा है, प्रकृति का एक ही नियम है—काम करना।

जीवन-संग्राम मे विजय पाने की सबसे पहली विधि किसी काम को प्राप्त करना ही है। यदि कोई मुह फैलाये बैठा रहेगा तो आसमान से उसके मुह मे खाना टपक नहीं पडेगा। और फिर जो काम हाथ मे लिया है उसमे लगे रहना भी एक खास बात है। आज यहाँ और कल वहाँ करने से यहाँ और वहाँ दोनों ही से हाथ धो बैठना पडता है। साधारण अवस्थाओं मे, यदि किसी मनुष्य मे पथ-प्रदर्शक क्रियात्मक विवेक-बुद्धि है तो इन दो बातों से उसे सफलता अवश्य मिल जावेगी।

कई लोग ऊची जगह और बडी नौकरी की तलाश मे ही बैठे रहते है। छोटी से छोटी जगह से बढना नहीं जानते। भाई, जिस जगह हो वही से बढना सीखो। जो काम हाथ मे लिया हो उसीको नवीनता से करो। उसमे ऐसी निपुणता ला दो जैसी पहले कोई न ला सका हो। अपने दूसरे साथी-कार्यकर्त्ताओं की अपेक्षा अधिक फुरतीले, साहसपूर्ण और नम्र बनो। अपने काम का खूब अध्ययन करलो, उसके करने की नई-नई विधिया निकाल लो। काम करने की कला का उद्देश केवल सन्तोप देना ही नही है, केवल अपनी जगह को भरना ही नहीं है, परन्तु आशा से अधिक अच्छा काम करके दिखा देना है, और इसका परिणाम अच्छा निकले बिना रह नही सकता।

कई युवक कहते हैं कि यदि हमें अमुक काम नहीं मिलेगा तो हम घर ही मे बैठे रहेगे। भला यह भी कहीं की बुद्धिमानी है। घर बैठे-बैठे समय नष्ट करने से क्या लाभ? समय पैसा नहीं है, बल्कि वह तो जीवन है। शीघ्र से शीघ्र जो काम मिलता हो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। अपनी योग्यता और काम के दरजे पर ध्यान देना तो पतन का मार्ग है। यदि तुम उसी काम मे मनुष्यत्व को सच्चे ढंग से लगाओगे तो उस काम का भी मूल्य और महत्व बढ जायगा। एक पढा-लिखा व्यक्ति यदि बढई के काम को करने लगे तो बढ़ई के धन्धे मे जीवन आ जायगा और नई-नई कल्पना की चीजें बनने लगेंगी।

ग्लेडस्टन कहा करते थे कि मनुष्य के शरीर अथवा दिमाग से काम लेने की भी सीमा है और वही आदमी बुद्धिमान है जो अपनी शक्तियों को ऐसे कामो मे खर्च नहीं करता जिनके लिए वह अयोग्य है।

इसी तरह कारलाइल ने भी लिखा है—"वह मनुष्य भाग्यशाली है जिसे अपना काम मिल गया है। किसी दूसरे सुख के लिए उसे अब इच्छा नहीं करनी चाहिए। जो उसे मिल गया है उसे ही वह करेगा।"

काम का चुनाव करते समय अपने हृदय से कभी मत पूछो कि कौन-सा व्यवसाय करके तुम प्रसिद्धि पा सकोगे या धन प्राप्त कर सकोगे। परन्तु उसी काम को चुनो जिसमे तुम अपनी सब मनुष्यता की शक्ति को लगा सकते हो और अपनेको ऊंचा बना सकते हो। तुम्हारे लिए न तो धन की आवश्यकता है, न प्रसिद्धि की और न कीर्त्ति की— तुम्हे केवल शक्ति की जरूरत है। मनुष्यत्व धन और कीर्ति से अच्छा होना है। आचरण किसी भी जीवन-व्यापार की

अपेक्षा अच्छा है। प्रत्येक इन्द्रिय को शिक्षित करना चाहिए, नहीं तो तुम्हारे कामों मे कमी दिखाई देगी। हाथ को सुन्दर, मिहनती और मजबूत होने की, आखों को बारीक और सावधान निरीक्षण करने की, हृदय को कोमल, सच्चे और सहानुभूति पूर्ण होने को, स्मरण-शक्ति को शुद्ध, स्मृतिपूर्ण, समझने की योग्यता प्राप्त करने की शिक्षा देनी चाहिए। ससार नहीं चाहता कि तुम वकील, मत्री, डाक्टर, किसान, वैज्ञानिक अथवा व्यापारी हो जाओ। वह तुम्हारे काम को निर्धारित नहीं करता। वह तो केवल यही चाहता है कि जिस किसी काम मे तुम हाथ लगाओ उसपर तुम्हारा पूर्ण अधिकार रहे और उसमे तुम प्रवीणता प्राप्त करलो। यदि तुम अपने काम मे सफल हो जाओगे तो संसार तुम्हारी प्रशसा करेगा और तुम्हारे लिए सब दरवाजे खुल जावेंगे। लेकिन याद रखो, ससार असफलता और अपूर्णता को बहुत बुरी नजर से देखता है।

फ्रान्स के प्रसिद्ध पुरुष रूसो ने कहा है कि "जो मनुष्य अपने कर्त्तव्य को अच्छी तरह से करने की शिक्षा पाचुका है वह मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाले सभी कामों को भली प्रकार करेगा। मुझे इसकी कोई फिक्र नही है कि मेरे शिष्य सेना, धर्म अथवा न्यायालय के लिए बनाये गये है। समाज से सम्बन्ध रखनेवाले किसी कार्य के पहले प्रकृति ने हमे तो मानव-जीवन से सबन्ध रखनेवाले कार्य करने के लिए बनाया है। यही मैं अपने शिष्य को सिखाऊगा। जब उसे यह शिक्षा मिल चुकेगी तब वह न सिपाही होगा न पादरी और न वकील ही। वह पहले मनुष्य होगा, बाद मे और कुछ।"

जिस उद्देश्य के बारे मे तुम्हे जरासा भी सन्देह है, जिसके न्याययुक्त और भले होने मे तुम्हे जरासा भी शक है, उसे एकदम छोड देना चाहिए। आजकल भूलों को सजाकर सुन्दर दिखाने की कला का बडी तेजी से प्रचार होरहा है। बड़े आश्चर्य की बात है कि तर्क के दबाव के द्वारा मनुष्य की भली और शुद्ध भावनाये दबा दी जाती है। एक बडे प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने कहा है कि मनुष्य अगर कुछ परिश्रम करे तो वह ऐसे-ऐसे तर्क निकाल सकता है कि जिसके द्वारा वह मनुष्य की सुशीलता और लज्जा को आसानी से भगा दे। अतएव जब किसीके सामने सन्देहजनक परन्तु आकर्षक भविष्य रखा जाता है तो बुरी-से-बुरी बातों को तर्क के द्वारा भली दिखाने का लालच होने की सम्भावना है। परन्तु इसमे कोई सन्देह नही कि जिस उद्देश मे दुराचार का जरासा भी कीटाणु है वह अवश्य विफल होगा।

इसमे कोई सन्देह नही कि प्रत्येक मनुष्य को जीवन मे किसी एक विशेष कार्य की ओर रुचि रहती है। उनमे से कुछ को हम प्रतिभावान् व्यक्ति कहते हैं—इसके चिन्ह उनके बचपन मे भी दिखाई देते हैं।

इसीको तुम अपना सच्चा स्थान कह सकते हो जिसके स्मरण-मात्र से तुम्हारी सब शक्तिया जागृत हो उठे, जिसे तुम्हारी प्रवृत्ति सहर्ष स्वीकार करती हो, जिसे छूने से तुम उत्साहित हो उठते हो। यदि दुर्भाग्य से अरुचिकर कार्य मे तुम फंस गये हो, तो जितने शीघ्र हो सके उससे छुटकारा पाने की कोशिश करो।

यदि तुम्हारा व्यवसाय या कार्य निम्न श्रेणी का है, तो दूसरे

व्यक्तियों की अपेक्षा उसमे अधिक मनुष्यत्व का उपयोग करके उसे ऊचा उठालो। उसमे दिमाग, हृदय, शक्ति और मितव्ययता का समावेश करो। नवीनता से उसका विस्तार करो, परिश्रम और उद्योग से उसे बड़ा कर दो, उसका अध्ययन करो, उसकी बारीकियां को सीखलो, अपनी योग्यता को उसपर केन्द्रित करदो। याद रखो महान विजयें उन्ही लोगों के लिए सुरक्षित है जो एक उद्देश से कार्य करते है, जिनकी आत्मा का राज्य अभिन्न है। दूसरे का स्थान छीनने की अभिलाषा करने की अपेक्षा अपने स्थान को ही सुशोभित करना अच्छा है।

ऊची-से-ऊची चोटी पर और ऊचे-से-ऊचे शिखर पर पहुचना हो तो अपने उद्योग की नीची-से-नीची सतह से ही काम शुरू करो। अपने काम से जिस बात का सबन्ध हो ऐसी किसी भी बात को व्यर्थ और निरुपयोगी मत समझो। उनका पूरा ज्ञान प्राप्त करो।

जिस तरह विवाहित जीवन को सुखी बनाने के लिए, उसे जीवन की कठोरताओं और आपत्तियो से लेजाने के लिए निर्मल अटूट प्रेम की आवश्यकता है, उसी तरह किसी व्यवसाय मे सफल होने के लिए उसके प्रेमी हुए बिना मार्ग मे आनेवाली कठिनाइयो का वीरता से सामना नही हो सकता। जिस वस्तु से तुम्हे प्रेम हो जावेगा उसके लिए तुम आसानी से अपने प्राणों को निछावर करने को हमेशा तैयार रहोगे। जब प्राणो को तुच्छ समझकर तुम काम करोगे तो निःसन्देह बाधाओ पर विजयी हो जाओगे और अपने कार्य मे सफलता प्राप्त करोगे।

इस युग मे मित्र और सिफारिशहीन युवकों को जीवन मे सफल होने का मार्ग बतलाते हुए श्री० रसेल लिखते हैं कि सबसे पहला काम है एक काम को प्राप्त करना, दूसरा है अपना मुह बन्द रखना, तीसरा है अवलोकन करना, चौथा है विश्वासपात्र होना, पाचवा है मालिक को यह बतला देना कि हमारे बिना तुम्हारा काम नही चल सकता, और छठा है नम्र होना। इन बातों पर ध्यान देने से किसी भी क्षेत्र मे निराश नहीं होना पडेगा।

---

## [ ६ ]

# एकाग्रता

"यदि जीवन मे बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है, और यदि कोई खराब बात तो वह है अपनी शक्तियो को बिखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इसमे क्या ? वही चीज अच्छी है जो हमारे खिलवाड और भ्रम की चीजो को दूर कर देती है और हमे हृदय से अपने काम को करने के लिए भेजती है।"

—इमरसन

"जो व्यक्ति जीवन मे केवल एक बात ढूढता है वह आशा कर सकता है कि जीवन समाप्त होने के पहिले उसे वह प्राप्त हो जावेगी।" –

—थोएन मेरेडिथ

मन की दृढ इच्छा-शक्ति को किसी एक काम मे केन्द्रित कर देने को एकाग्रता कहते है। एकाग्रता पैदा होने पर संसार मे ऐसा कोई काम नही जो न हो सकता हो।

सफल और असफल मनुष्यों मे क्या अन्तर है ? क्या एक न कम काम किया और दूसरे ने ज्यादा ? क्या यही दोनों के परिश्रमो के परिणामों का कारण है ? नहीं, बात कुछ और ही है। सफल व्यक्ति ने अपना कार्य बुद्धिमत्ता से किया, एकाग्रता से किया, उसमे अपने दिमाग को लगाया था। असफल व्यक्ति ने बोझा ढोया था। ऐसे लोग काम तो बहुत करते है, परिश्रम भी करते है, लेकिन उसमे अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं करते है। उनके काम और परिणाम को देखकर दया आती है। वे परिस्थितियों को पकडकर अवसरों का रूप नहीं देना जानते। उनमे असफलता को प्रशसनीय सफलता मे रूपान्तर करने की योग्यता नहीं रहती।

ऐसे व्यक्तियों से पूछो कि 'तुम्हारे जीवन का उद्देश्य क्या है ?' तो वे कह उठेगे—"हमे नही मालूम। हम यह भी नही जानते कि हममे कौन-सा काम करने की योग्यता है। हम कठिन परिश्रम पर विश्वास करते है और हमने जीवन भर परिश्रम करने का ही तय किया है। हम जानते है कि कुछ-न-कुछ अवश्य हाथ लगेगा।" लेकिन इस प्रकार कुछ भी हाथ नही लग सकता। क्या कोई आदमी सोना और चादी की तह पाने भर के लिए सारे महाद्वीप को खोदना पसन्द करेगा ? किसी खास बात की खोज मे एकाग्र हुए बिना कुछ हाथ नही लगता। मिलेगा वही जैसा प्रयत्न होगा।

स्पष्ट उद्देशों की शक्ति का असर जीवन पर बडा गहरा होता है। जब कोई व्यक्ति बुद्धिवाद द्वारा अपनी जीवन-यात्रा शुरू करता है तब उसकी आवाज, पोशाक, दृष्टि और गति उसीके अनुकूल हो जाती है।

जब कोई स्वावलम्बी पुरुप किसी भी हेतु से अपना कोई काम शुरू करते है तो उनके कपडों से और उनकी बोली से उनके कार्य की गति-विधि का पता चल जाता है। वे अपने पैरों पर खड़े रहते हैं, आत्मसम्मान और आत्मसतोप की चाल से चलते है। फटे कपडे उन्हे छिपा नही सकते, रेशम की साडियाँ उनकी सुन्दरता को नही बढा सकतीं, और न बीमारी और थकावट ही उन गुणों को खींच-कर फेंक सकती है।

एक कहावत है, जो नाविक अपनी यात्रा के अन्तिम बन्दरगाह को नही जानता उसके अनुकूल हवा कभी नही बहती।

कारलाइल कहता है कि सबसे कमजोर प्राणी अपनी शक्तियो को एक चीज पर एकाग्र करके कुछ-न-कुछ कर सकता है। इसके विपरीत सबसे शक्तिशाली उन शक्तियों को बहुतसी बातों मे फैलाकर, हरेक काम मे असफल हो सकता है। लगातार गिरनेवाली बूद से कठोर से कठोर चट्टान मे छेद हो जाता है परन्तु शीघ्रगामी पानी का प्रवाह भयंकर आवाज करता हुआ निकल जाता है, उसका कोई चिन्ह भी पीछे नही रह जाता।

एक बुद्धिमान् शिक्षक कहता है कि युवावस्था मे मैं सोचा करता था कि बादलों की गरज मृत्यु का कारण होती होगी, परन्तु बडा होने पर मुझे पता चला कि मृत्यु का कारण बादलों का गरजना नही पर बिजली है। बस उसी दिन से मैंने गरजना कम कर दिया और चमकना शुरू कर दिया।

सब शक्तियों को किसी एक काम मे लगा देने से समय बीतते

देर नहीं मालूम पडती। सिडनी स्मिथ कहते हैं कि सबसे मूल्यवान अध्ययन तो वही कहलाता है कि पढने मे इतने निमग्न हो जाओ कि भोजन करने का समय निश्चित समय से दो घंटे पहले आ जाय। अपने पाठ्य ग्रन्थ के आगे संसार की सब बातों को भूल जाना ही एकाग्रता है।

पुस्तक पढते समय तुम्हारी आँखों के सामने सारा चित्र खिच जाने दो। तल्लीनता और एकाग्रता तुम्हे वर्तमान बाह्य आकर्षणों से दूर कर देगी और यदि तुम्हारा मित्र भी एक बार तुम्हारे पास खडा रहे तो भी तुम्हे उसकी उपस्थिति का ज्ञान न होगा।

प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक चार्ल्स डिकिन्स कहा करता था कि ध्यान एक उपयोगी, सुरक्षित, निश्चित लाभदायी और प्राप्त करने-योग्य गुण है। मै तुम्हे सचमुच विश्वास दिलाता हूं कि मेरे आविष्कारों या कल्पनाओं ने मेरी ऐसी मदद कभी न की होती यदि मुझमे साधारण, नम्र, दृढ रूप से ध्यान देने की आदत न होती। हमेशा पूर्ण आदमी बनने की कोशिश करनी चाहिए। चाहे सुलेखक बनकर देश की विचारधारा मे क्रान्ति उत्पन्न कर दीजिए, चाहे अच्छे खिलाडी होकर प्रतिद्वन्द्वियों को हरा दीजिए, चाहे गायक होकर ससार को मोह लीजिए। कुछ भी कीजिए, परन्तु उसमे अपने शरीर और मन को मिला दीजिए। आप और वह एक हो जाइए। अपने उद्देश के साथ खिलवाड मत कीजिए।

चार्ल्स किगस्ले ने कहा भी है—"जब मैं किसी काम मे लगता हूं तो उस समय संसार की और कोई बात मेरे सामने नहीं रहती।

यही उद्योगी पुरुषो की कुञ्जी है, परन्तु इसे लोग अपने मनोरंजन के समय मे भी साथ नहीं रख सकते।"

"मेरा कर्ममय जीवन देखकर बहुत-से आदमी मुझसे पूछते—'आप इतनी किताबों को लिखने का समय कब पाते हैं? ससार का इतना काम आपसे कैसे होता है?' मेरे जवाब को सुनकर वे आश्चर्य मे पड गये। मैने कहा—'मैं कभी कोई काम बहुतसा नहीं करता, इसीलिए इतना कर पाता हूँ। यदि मनुष्य कोई काम करना चाहता है तो उसे थकावट से बचना चाहिए। यदि वह आज बहुत काम करेगा तो कल वह बहुत कम काम कर पायगा। कालेज छोडने के बाद जब मैने सच्चे दिल से अध्ययन करना शुरू किया तब-से आजतक मैने बहुतसे ग्रन्थो को पढ डाला, बहुत यात्रा की, और बहुत-कुछ देखा। राजनीति मे भाग लिया और जीवन की अन्य बातों मे भी भाग लिया। इस सबके अतिरिक्त मैने ६० ग्रन्थों की रचना की। कुछ के लिए विशेष अध्ययन करना पडा। क्या तुम बतला सकते हो कि लिखने और पढने मे मैंने कितना समय लगाया होगा? तीन घंटे से अधिक मैंने कभी इसमे खर्च नहीं किये, और जब पार्लमेन्ट का अधि-वेशन रहता था उस समय तो ये तीन घन्टे भी नहीं मिलते थे, परन्तु इन तीन घन्टों मे मेरा सारा ध्यान मेरे सामने के काम मे रहता था।" यह थी एडवर्ड बुलवर लिटन के जीवन की महत्ता।

एस० डी० कालरिज के दिमाग मे विचित्र शक्ति थीं, परन्तु उसके सामने निश्चित उद्देश नहीं था। वह बहुचित्तता के वायु-मडल मे रहता था। इसी वायुमडल ने उसकी शक्ति को खा लिया,

उसे चूस डाला और उसके जीवन को दुःखमय और असफलतामय बना दिया। सपनों मे उसका जीवन बीतता था और कल्पनाओं ने उसकी मृत्यु-शय्या तैयार की। रात-दिन उसके नये-नये मसविदे बना करते थे, रोज ही नया निश्चय आकर खडा होजाता था। बहुत दिन-तक यही हाल रहा। वह कुछ-न-कुछ करना चाहता था, परन्तु उसने कुछ नहीं किया। एक दिन वह इस संसार से विदा होगया। उसके कमरे के कागज-पत्रों की खोज करने से पता चला कि दर्शन और मनोविज्ञान पर लगभग ४० हजार निबंध उसने लिखे थे, लेकिन सब अधूरे रखे थे। उसने एक को भी पूरा नहीं किया। एक को शुरू करता कि कुछ समय बाद दूसरे विषय पर लिखने की उसकी इच्छा होती थी। इसी डावाडोल स्थिति मे उसने एकाग्रता की शक्ति के मूल्य को न समझ पाया और संसार उसके ज्ञान से लाभ उठाने से वंचित रह गया।

एडम्स कहा करते थे कि लार्ड ब्रोम केनिग के समान ही बहुत प्रतिभावान् व्यक्ति थे। यद्यपि उन्होंने कानून के पेशे मे लार्ड चान्सलरशिप प्राप्त करली थी, वैज्ञानिक खोजों के कारण प्रशंसा प्राप्त की थी, फिर भी उनका जीवन असफल था। वे सब-कुछ थे परन्तु कभी एक कार्य मे न टिक सके। इतनी योग्यता होने पर भी इतिहास अथवा साहित्य मे उनका कोई चिरस्थायी स्थान न रह सका। उनकी कीर्त्ति उन्हींके जीवन मे समाप्त होने लगी थी।

मिस मारटिनो उनके जीवन की एक घटना का वर्णन करती है—"एक दिन हमलोग उनके घर पर थे। एक चित्रकार ने सब लोगों के साथ उनके महल का चित्र लेना चाहा। लार्ड महोदय से भी

निवेदन किया कि आप पाच सेकन्ड तक विना हिले-डुले बैठे रहिएगा। उन्होंने स्वीकार तो कर लिया परन्तु वे हिल गये। फलतः चित्र मे धब्बा पड गया।"

इसमे एक वडे महत्व की वात है। अपनी शताब्दी मे वह बडे भारी व्यक्ति होगये होते परन्तु उनमे स्थिरता नहीं थी। जहाँ जाते वहाँ धब्बा पडा ही करता था। ऐसे कितने ही जीवन है जिनपर एकाग्रता और स्थिरता की कमी के कारण धब्बे पड जाया करते है।

नौकरी की तलाश मे घूमनेवाले नवयुवकों से पाश्चात्य देशों मे यह नही पूछा जाता कि 'तुमने किन-किन स्कूलों व कालेजों मे शिक्षा पाई है? तुम्हारे वाप-दादा कौन थे?' उनसे केवल एक प्रश्न पूछा जाता है, कि तुम क्या कर सकते हो?

वैज्ञानिक लोगों का कहना है कि एक एकड भूमि की घास मे इतनी शक्ति फैली हुई होती है कि उसके द्वारा ससार की सारी मोटरों और चक्कियो का सचालन किया जा सकता है। केवल उस शक्ति को एक भाफ के इजन के पिस्टन रॉड पर एकाग्र करने की आवश्यकता है। परन्तु वह आराम से छिन्न-भिन्न अवस्था मे पड़ी हुई है। अतः विज्ञान और उपयोगिता की दृष्टि से वह किसी काम की नहीं है। इसी तरह ऐसे हजारों मनुष्य है जो ज्ञानी है, उनमे शक्ति भरी हुई है, परन्तु वे उसे एकत्र करके किसी निश्चित स्थान पर लाने मे असमर्थ है, इसी कारण उन्हे हमेशा विफल होना पड़ता है। शक्तियों को बखेर देने से शक्ति का अपव्यय ही नहीं होता वल्कि शीघ्र कार्य करने का उत्साह भी नष्ट हो जाता है।

केवल कल्पना, और धुन पर ही कार्य करना कभी अच्छा नहीं होता। जो-कुछ करना हो उसका मसविदा तैयार कर लेना चाहिए। फिर उसीके अनुसार अपने कदमों को साहस और स्थिरता से बढ़ाते जाना चाहिए। हमारे विद्यार्थी आखिर करते क्या है? उनका जीवन रोते हुए क्यों जाता है? इसलिए कि उनका कोई उद्देश नहीं रहता। वे ऐसी पुस्तकों को पढ़ते हैं जो उनके वर्तमान कार्य से सम्बन्ध नहीं रखतीं, पर ऊपर से घमण्ड करते है कि आगे चलकर काम आवेगी। जो हो रहा है उसपर ध्यान न देकर भविष्य की किसी मधुर आशा पर वर्तमान को संटकमय बना लेना बडी भूल है।

नवयुवकों को हमेशा सिखाया जाता है कि अपने उद्देश्यों को खूब ऊचा रखो, परन्तु उन्हे यह कोई नही बतलाता कि जिस निशाने को मार सकते हो उसीको उद्देश्य बनाओ। आकाश की ओर मुह करके इस आशा से तीर छोड़ना कि वह वृक्ष की चोटी को पार कर जायगा केवल पागलों का ही काम है। धनुष से छूटा हुआ बाण वायुमंडल मे यहाँ-वहाँ नही घूमता, वह अपने चारों ओर नहीं देखता फिरता। वह सीधा उठता है, उसका लक्ष्य एक ही रहता है, उसीको जाकर वह छेदता है। कुतुबनुमा की सुई की नोक आकाश मे चमकनेवाले सभी तारों की ओर नहीं झुकती। वह केवल एक प्रकाश की ओर ही ताकती है। उसे कौन अपनी तरफ खींचने की कोशिश नहीं करता? सूर्य उसे चकाचौंध करता है, पुच्छल-तारे उसे मार्ग दिखाते हैं, छोटे-छोटे तारागण उसकी तरफ देखकर झिलमिल-झिलमिल चमकते है और उसकी प्रीति के भागी होना चाहते हैं। परन्तु

अपने उद्देश्य की प्यारी, अपनी वृत्ति की सच्ची, सुई भूलकर भी दूसरे की ओर नहीं देखती। सूर्य का प्रकाश होता है, तूफान उठते हैं—सब कुछ होता है, परन्तु उसका मुँह तो ध्रुवतारे की ओर ही रहता है। इसी तरह हमारे जीवन के मार्ग में दूसरे सैकड़ों प्रकाश हमें अपने रास्ते से भटका देने के लिए चमकेंगे—हमें अपने कर्त्तव्य और सत्य से डिगा देने का प्रयत्न करेंगे, परन्तु अपने उद्देश्य की सुई को आशा के ध्रुवतारे की ओर से कभी न हटने दो।

---

# [ ७ ]

## समय की पाबन्दी

"दौडना व्यर्थ है। मुख्य बात तो समय पर निकलना है।"

—लाफ़ॉन्टेन

"हमेशा हमारे भाग्य के धागों को कौन देख सकते हैं ? क्षणभर के लिए हितकारी अवसर आता है, हम उसे खोदेते हैं और महीनों तथा वरसों का नाश हो जाता है।

"धीरे-धीरे' के रास्ते पर चलकर मनुष्य 'कभी नहीं' के मुकाम पर पहुँचता है।"

—कारलाइल

"आज का दिन घूमने में खोदो—कल भी यही हालत होगी, और फिर अधिक सुस्ती आवेगी।

—शेक्सपियर

पुराने समय में जब रेल-तार आदि नहीं थे उस समय चिट्ठी-पत्री, सरकारी डाक आदि ले जाने के लिए डाकिये रहा करते थे। उनको बतला दिया जाता था कि तुम यदि रास्ते में ठहरोगे और देरी

से पत्र पहुंचाओगे, तो मृत्यु-दण्ड पाओगे। इस प्रकार उनको समय नष्ट करने का परिणाम भोगना पड़ता था।

जिस कार्य को करने मे पुराने समय मे बहुत समय लग जाताथा, रास्ते को भयंकर कठिनाइयो का सामना करना पड़ता था, वेही अब कुछ घन्टों मे हो जाता है। जो बात आज हम एक घन्टे मे कर सकते है उसे हमरे पूर्वज २० दिन मे भी नहीं कर पाते थे। परन्तु इतना होने पर भी हम अपने पूर्वजों से गये-बीते है। हमने इस वैज्ञानिक सभ्यता से क्या लाभ उठाया ? कजूस को दस रुपये मिले तो भी कुछ लाभ नहीं, और हजार मिल तो भी वैसा ही है। वह उन्हे सन्दूक मे बन्द कर नष्ट किये बिना नहीं रहेगा यही हालत हमारी है। अब समय अधिक मिलने लगा तो उसका व्यर्थ का प्रयोग भी वसा ही बढ गया।

देरी करने का भयकर परिणाम होता है। सीजर ने राजसभा मे जाकर एक खबर पढने मे देरी की और अपनी जान खो बैठा। कर्नल राहल ताश खेल रहा था। एक नौकर ने वाशिगटन की सेना के रवाना होने का सूचना-पत्र उसे लाकर दिया। बिना पढे ही उसने उसे जेब मे रख लिया और ताश खेलने मे लगा रहा। खेल समाप्त होने पर उसने अपने आदमियो को सामना करने के लिए तैयार किया। लेकिन वे कैद कर लिये गये और तलवार के घाट उतार दिये गये। केवल कुछ मिनटो की देरी से वह अपनी इज्जत, स्वतंत्रता और जीवन खो बैठा।

प्रत्येक के जीवन मे कुछ ऐसी घड़िया आती है जिनपर भाग्य

का बनना और बिगडना निर्भर रहता है। यदि मन जरा भी हिच-किचाया या डरा तो सब-कुछ चला जाता है।

जब मनुष्य का एक काम समाप्त हो जावे तो उसके बाद उसे दूसरे मे लग जाना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि एक काम समाप्त होने पर लोग विश्राम करने लगते हैं। वह विश्राम क्या है? आलस्य-भरी शराब का प्याला है। उस विश्राम मे अपने पूर्वसंचित समय के मूल्य को वे खो बठते हैं। उस विश्राम मे उन्हे फिर वर्तमान और भविष्य का धुंधला प्रकाश भी नहीं दीखता। अतएव प्राकृतिक विश्राम के सिवा मनुष्य-जीवन मे विश्राम के द्वारा समय नष्ट करने की आवश्यकता नहीं है।

रस्किन का कहना है कि जवानी का सारा जीवन एक प्रकार की रचना, एक प्रकार के सुधार और शिक्षण का है। एक भी घन्टा ऐसा नहीं है जो भाग्य के विधान के लिए उपयोगी न हो। ऐसी एक भी घडी नहीं जाती जिसका निश्चित किया हुआ कार्य फिर से किया जा सकता हो। क्या लोहा ठण्डा हो जाने पर घन पटकने से लाभ हो सकता है?

नेपोलियन सर्वोत्कृष्ट अनुकूल समय पर बड़ा ही ध्यान देता था। उसे अपने हाथ से न जाने देकर वह बड़ी-बडी शत्रु-सेनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता था। उसका कहना है कि पाच मिनटों का मूल्य न समझने के कारण ही आस्ट्रेलियन हार गये। इसी तरह उसके पतन और वाटरलू की हार का प्रधान कारण कुछ घडियों की देरी ही थी। ग्राउच समय पर नही आया और उसके लिए नेपोलियन को

ठहरना पडा। वस इतनी-सी घटना नेपोलियन को सेन्ट हेलेना के टापू पर भेजने के लिए काफी थी, उसे कैदी बनाने के लिए शक्तिमान थी।

जो काम कभी भी हो सकता है वह कभी नहीं हो सकता। जो काम अभी होगा वही होगा। जो शक्ति आज के काम को कल पर टालने मे खर्च हो जाती है उसी शक्ति के द्वारा आज का कार्य आज ही किया जासकता है। इसके अतिरिक्त जो काम कल पर टाल दिया जाता है उसे कल करने मे भी कितनी कठिनाई पडती है? मन कितनी गडवडी मचाता है, तबियत कैसी घवराती है कि वह कार्य भाररूप मालूम पडने लगता है। जो वात आज बडे आनन्द और सुख के साथ की जा सकती है, वह कल हमे दु:ख पहुचानेवाली और जीवन का काटा हो जाती है। पत्रो का उत्तर जितनी उत्तमता से तत्काल दिया जा सकता है उतनी खूबी से वह कल नहीं दिया जा सकता। वडी-वडी दूकानों और कारखानेवाले अपने पत्रों के उत्तर को कभी कल पर नही टालते।

फुरती आलस्य और भार को भगा देती है। टाल देने का मतलव प्राय. छोड देना रहता है और "करने ही वाला हूँ" का अन्त "नही ही करनेवाला हूँ" पर रहता है। एक कहावत है "असाढ का चूका किसान और डाल का चूका बन्दर कहीं का नहीं रहता।" "कार्य करना" भी तो एक तरह का बीज वोना है। यदि वह ठीक समय पर नही वोया जायगा, यदि वह ठीक ऋतु मे खेत के गर्भ मे नहीं पहुचेगा, तो ग्रीष्म ऋतु उसे वढाने और फलो को पकाने मे समर्थ नहीं हो सकती।

मेरिया एजवर्थ का कहना है कि वर्तमान के समान कोई घडी नही है, कोई ताकत और कोई शक्ति नही है। कोई व्यक्ति तुरंत के निश्चयो को पूरा नहीं करता है तो बाद मे उनके पूरे होने की कोई आशा नही है। वे छिन्न-भिन्न हो जावेंगे, संसार के कोलाहल मे विलीन हो जावेंगे, अथवा आलस्य के कीचड मे फॅस जावेगे।

कावेट लिखता है कि मेरी विजय मेरी स्वाभाविक योग्यताओं की अपेक्षा हमेशा तत्पर रहने के कारण हुई है। इसी गुण के कारण सेना मे मेरी उन्नति हुई। यदि मुझे दस बजे जाना होता था तो मैं नौ बजे से ही तैयार रहता था। किसी आदमी को कभी भी मेरे लिए नही ठहरना पडा।

सर वाल्टर रेले से एक व्यक्ति ने पूछा—"आप इतना अधिक काम इतने कम समय मे कैसे कर डालते है ?"

उत्तर मिला—"मुझे जो कुछ करना होता है उसे मै उसी समय जाकर कर डालता हूं।"

जो व्यक्ति तत्काल ही काम करके दिखाता है वह उस काम मे भूले कर बैठता है तो भी अच्छा निर्णय करनेवाले भविष्यवक्ता की अपेक्षा फायदे ही मे रहेगा और उसे विजय प्राप्त हो ही जावेगी।

एक फरासीसी राजनीतिज्ञ से पूछा गया कि "तुम कैसे इतना काम करते हो और साथ ही समाज के अन्य कार्यों मे भी भाग लेते हो ?"

उसने उत्तर दिया—"मै आज का काम आज ही कर डालता हूँ।"

कई लोग आज के काम को कल पर डालकर ससार मे पीछे ही पडे रहे। केवल ५ मिनट पीछे रहने के कारण वे प्रतिद्वन्द्विता मे हरा दिये

गये। उनके सम्बन्धियो ने, उनके मित्रों ने तथा उनके साथियों ने उन स्थानों पर अपना अधिकार जमा लिया जो कि पाच मिनट की देरी न करने से उनके होते। समय निकल जाने पर मिलता क्या है—निराशा, शोक और पतन। क्या दौड के मैदान मे पाच मिनट की देरी करने से कोई भी प्रतिद्वन्द्वी जीतने की आशा कर सकता है? और जीवन की दौड तो और भी कठिन है।

एक विद्यार्थी निश्चय करता है कि वह आज शाम से कम-से-कम १० बजे रात तक पढा करेगा। देखने मे बात बिलकुल साधारण है। शाम होती है, चारो ओर अंधेरा फैलता है, दीपक अपनी ज्योति से घर को प्रकाशित करने लगता है। वह भोजन करता है, धीरे-धीरे आलस्य उसपर धावा करता है, उसके निर्णय की दीवाल हिलने लगती है, नये-नये तर्क उसके सामने आते है, वह सोचता है—"अभी तो परीक्षा के कई दिन बाकी है। इतनी जल्दी करने को क्या जरूरत है। अब कल से शुरू करूगा।" बस तर्क-कुतर्क कर वह अपना काम छोड देता है। यही घडी उसकी विजय की घडी है, इसे ही अवसर कहते है, उसके जीवन पर सफलता अथवा असफलता की छाप लगाने के लिए यही पाच मिनट का समय मिलता है। विद्यार्थी फिर कभी इस गये हुए मौके को न पा सकेगा। विद्यार्थी ही क्यों, प्रत्येक व्यक्ति कुछ-न-कुछ करना चाहता है। उसकेनिश्चय के प्रतिकूल आलस्य अपनी सारी सेनाओं को लेकर खडा हो जाता है। इनके भयंकर दल को जीतकर जो अपना झण्डा जीवन के मैदान मे गाड़ सकता है, वह गली का भिखारी होने पर भी सम्राटों से कहीं अच्छा है।

'कल' शैतान का दूत है। इतिहास के पृष्ठों पर इस कल की धार पर कितने प्रतिभावानों का गला कट गया ? कितनों की स्कीमे अधूरी रह गईं ? कितनों के निश्चय मौखिक ही रह गये ? कितने 'हाय कुछ न कर पाया' कहते हाथ मीजते रह गये ? कल असमर्थता और आलस्य का द्योतक है।

-उस आलस्य का कब मनुष्य के शरीर पर आक्रमण होता है— इसका पता लगाना कठिन है, क्योंकि आदत पड जाने से और प्रेम की बात हो जाने से उसके आने के समय एक ऐसा वायुमडल तैयार हो जाता है कि शीघ्र ही ज्ञान-शून्यता का आभास होने लगता है। कुछ मनुष्यों को वह दोपहर भोजन के समय आ घेरता है, कुछ के सिर पर ब्यालू के बाद आ खडा होता है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन मे एक बडा ही कठिन समय दिन मे एक बार आता है, यदि समय का कुछ भी प्रेम है तो उसे जाने न देना चाहिए। प्रातःकाल की घड़िया ही जीवन-विजय की सूचक रहा करती है।

एक व्यक्ति मेन के साहस और कौशल की प्रशंसा हेनरी के सामने कर रहा था। थोडी देर मे हेनरी ने शान्त-भाव से कहा— "तुम्हारा कहना ठीक है,वह एक अच्छा सेनानायक है, परन्तु मैं हमेशा ही उससे ५ घन्टे आगे रहता हूं।" अर्थात् हेनरी चार बजे उठता था और मेन करीब दस बजे। यही उन दोनों का अन्तर था। इसी अन्तर मे सारी प्रतिष्ठा और सम्मान छिपा हुआ था। अनिश्चितता एक बीमारी होजाती है और भविष्यवक्ता बनने की आदत उसकी अगुआ रहती है। अनिश्चय के शिकारों के लिए एक दवाई है, वह है तत्काल

निर्णय करना। अन्यथा यह बीमारी सफलता की जानी दुश्मन रहती है। जो जरासा 'हां' और 'ना' के बीच मे पड जाता है वह डूब जाता है।

प्रातःकाल जल्दी उठने की आदत की तो सभी लेखकों और उपदेशकों ने बडी प्रशसा की है। वास्तव मे ससार के महान व्यक्ति प्रातःकाल ही उठा करते थे। रूस का महान बादशाह 'पीटर दि ग्रेट' प्रकाश होने के पूर्व उठता था। वह कहा करता था कि मैं अपने जीवन को जहाँतक हो सके बढाना चाहता हू इसलिए कम सोता हू। 'अलफ्रेड दि ग्रेट' सवेरे उठते थे। प्रातःकाल के घन्टों मे ही कोलम्बस ने अमेरिका की यात्रा की स्कीम तैयार की थी। नेपोलियन की बडी-बडी विजयो की तैयारी प्रातःकाल ही हुई थी। कोपरनिकस तथा ज्योतिष-ज्ञान के अधिकाश पंडित गोधूलि के पहले उठनेवाले है। अमेरिका का धुरंधर विद्वान वेब्स्टर कलेवा करने के पहले २० से ३० पत्रों का उत्तर लिख डालता था।

इंग्लैण्ड का महान उपन्यासकार सर वाल्टर स्काट बडा ही नियमानुकूल कार्य करनेवाला व्यक्ति था। यही उसके विशाल कार्यों की कुजी थी। वह पाच बजे उठता था। कलेवा करने के पूर्व ही उसके दिन के कार्य का अधिकाश भाग समाप्त हो जाता था। एक युवक को सलाह देते समय उसने लिखा था—"समय पर ठीक रीति से काम न करने की आदत का खयाल रक्खो। जो कुछ करना हो शीघ्र ही कर डालो, और काम कर लेने के बाद आराम करो, आराम पाने की कोशिश मत करो।"

हेमिल्टन लिखते है—"एक विचित्र दुर्भाग्य हमारे कुछ मित्रों पर आ पडा है। जब ईश्वर ने उन्हे अस्तित्व दिया तभी उन्हे काम भी सौंपा और उपयुक्त समय भी दिया। उसने यह सब इस हिसाब से किया कि यदि वे उसे उचित समय पर शुरू करें, उसमे अपनी योग्य शक्तियों को लगा देवे, तो उनका समय और काम दोनों ही एकसाथ समाप्त हो जावे। परन्तु कुछ वर्ष पूर्व एक आपत्ति आपडी। दिये हुए समय का कुछ हिस्सा उन्होंने खो दिया। वे स्वय नहीं बतला सकते कि उस समय का क्या हुआ? पर इसमे तो कोई सन्देह ही नही है कि वह कहीं रह गया। समय और काम दो समानान्तर लकीरों के समान है। परन्तु उक्त घटना के कारण एक लकीर दूसरी की अपेक्षा कुछ इंच छोटी हो गई। अब काम समय की रेखा से दस मिनट आगे रहने लगा। अब वे समानान्तर नहीं रहे। उनके पत्र उस समय डिब्बे मे डाले जाते जब कि डाक चली जाती। वे बन्दरगाह पर पहुंचते है तो देखते है कि जहाज अभी ही छूटा है, वे स्टेशन पर पहुचते है तो उन्हे दरवाजे बन्द होते दीखते है। वे किसी भी प्रतिज्ञा को नही तोडते और न किसी कर्त्तव्य से मुख ही मोडते हैं, परन्तु वे नियमित रूप से देर मे ही पहुंचते है और हमेशा उसी भयकर प्राण लेनेवाली घडी की ही उन्हे देर हो जाती है।" इन वचनो मे बडा ही गूढ रहस्य छिपा हुआ है। एक-एक वाक्य मानव-जीवन की विजय के लिए गूढ कुजी है।

विवाह के सम्बन्ध के समान ही प्रतिज्ञा की पवित्रता की रक्षा करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। एक व्यक्ति जो अपनी प्रतिज्ञा को तोड

देता है तथा उसे तोडने के जबरदस्त कारण नहीं दे सकता, वह भूठा है और संसार भी उसे इसी दृष्टि से देखता है।

होरेस ग्रीले का कहना है कि यदि किसी व्यक्ति को दूसरे के समय की परवाह नहीं है तो उसे उनके द्रव्य की क्यो परवाह होगी ? एक व्यक्ति के एक घन्टे को छीन लेने मे और उसके पांच डालर छीन लेने मे क्या अन्तर है ? ससार मे ऐसे अनेक व्यक्ति पडे हुए है जिनके एक घन्टे का मूल्य इससे भी अधिक होता है।

राष्ट्रपति वाशिंगटन चार बजे भोजन करते थे। उन्होंने कांग्रेस के नवीन सदस्यो को एक भोज मे सम्मिलित होने का निमत्रण दिया। वे थोडी देर मे पहुचे तो उन्होंने राष्ट्रपति को भोजन करते देखा। उन्हे बडा सन्ताप हुआ। यह देख वाशिंगटन महोदय ने कहा—"मेरा रसोइया मुझसे कभी नहीं पूछा करता कि महमान आये या नहीं, वह केवल यही पूछता है कि भोजन का समय हुआ या नहीं ?"

एकबार उनके सेक्रेटरी ने देर होने की क्षमा मागी और अपनी देरी के लिए घडी की सुस्ती का कारण उपस्थित किया। इसपर वाशिंगटन ने कहा—"जनाब। या तो आप दूसरी घडी लीजिए, या मुझे दूसरा सेक्रेटरी बुलाना पडेगा।"

जो व्यक्ति काम न करके माफी मागने के लिए आगे बढता है वह किसी काम का नहीं। वह गड्ढे मे गिरकर पैर को टूटने से बचाने की कोशिश करता है। नेपोलियन ने अपने सेनानायक को भोजन करने के लिए बुलाया। नियुक्त समय मे आने मे उन्हे कुछ देर हो गई। नेपोलियन भोजन करने लगा। वह खाना समाप्त करके उठ ही रहा था

कि वे आ गये। उन्हें देखकर नेपोलियन ने कहा—"भोजन का समय हो चुका, आइए अब अपना काम शुरू करें।"

जान क्विन्सी एडम्स समय के बड़े पाबन्द थे। एक सभा मे कुछ मेम्बरों ने समय हो जाने पर कार्यारम्भ करने की बात पर जोर दिया, तब एक सदस्य ने कहा—"नहीं, अभी मि० एडम्स नहीं आये है।" थोडी देर में एडम्स आ गये। पता लगाने पर मालूम हुआ कि उस स्थान की घडी तीन मिनट तेज थी। एडम्स महोदय समय पर उपस्थित हुए थे।

नियमपूर्वक तथा समय पर कार्य करने से हृदय को बडा ही सन्तोष रहता है, किसी प्रकार की व्यग्रता नहीं रहती। एक समय का काम उसी समय करने से वह अच्छी तरह हो जाता है। दूसरे समय करने से दो समयों के कामों का भार आ पडता है, अतएव अड़चने भी दूनी हो जाती है, और इस गडबड मे अपने आसपास के काम बिगड जाते हैं। कामकाजी और व्यापारी आदमी तो थोड़े दिनों में नियमितता पर ध्यान न देने से मिट्टी मे मिल जाता है। जरा-सी देर होने से दिवाला निकल जाता है। लाखों रुपयों का नुकसान हो जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति को समय पर काम करने की आदत डालना चाहिए। एक ठीक समय बतलानेवाली घड़ी जरूर ही रखना चाहिए। जो घडी करीब-करीब ठीक है वह बुरे रास्ते पर ले जानेवाली है।

फुरती से काम करने से विश्वास पैदा होता है। यह इस बात की गारटी है कि हमारे सारे काम ठीक तरह से चल रहे हैं और व्यवस्थित

है।-इससे काम करने की हमारी शक्ति का लोगों को विश्वास होता है। जो आदमी नियमित है वह हमेशा अपने दिये हुए वचन का पालन करेगा और उसपर भरोसा किया जायगा।

एक रेल चलानेवाले की घडी जरा सुस्त हो जाती है और दो गाडियाँ लड जाती है। बहुत-से अमूल्य जीवन नष्ट हो जाते हैं और हजारों का नुक्सान हो जाता है। एक एजेन्ट समय पर रुपये भेजने मे देरी करता है और एक व्यापारी का दिवाला निकल जाता है। एक दूत पत्र समय पर पहुचाने मे देरी कर देता है और एक निरपराध व्यक्ति सूली पर चढा दिया जाता है। एक आदमी एक गप्प अथवा कहानी सुनने लगता है, एक दो मिनट की देर हो जाती है तव भागता है, स्टेशन पर पहुंचकर देखता है तो गाडी भकभक करती जाती हुई नजर आती है।

कुछ मिनटों की देरी ने कितनी आशा-लतायें नही सुखादी? कुछ मिनटों की देरी ने कितने हँसतों को रुला नहीं दिया? कुछ मिनटों की देरी ने कितनों के जीवन को दुःखी नही वना दिया? कुछ मिनटों की देरी ने कितने राष्ट्रों को गुलामी मे नही डाल दिया? फिर भी क्या कुछ मिनटों के मूल्य को तुम नहीं समझे?

———

## [ ८ ]

## शिष्टाचार

"शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य ससार मे अपनी उन्नति कर सकता है।"

—एक कहावत

"तुझे क्या चाहिए ? तुझे जो कुछ चाहिए उसे अपनी मुस्कराहट से प्राप्त कर, न कि तलवार के जोर से।"

—शेक्सपियर

"जीवन का तीन-चौथाई आधार, अच्छा चाल-चलन है।"

—मैथ्यू अर्नाल्ड

"'क्या तुम मेरे समान शक्ति नही चाहतीं ?" कहकर 'आँधी' अपनी छोटी वहन 'मन्दवायु' की ओर देखने लगी। कुछ उत्तर न पा वह फिर कहने लगी—"देखो। जिस समय में उठती हूँ

उस समय दूर-दूर तक लोग तूफान के चिन्हों से मेरे आने का सम्वाद चारों ओर फैला देते है। बड़े-बड़े जहाजों के मस्तूलों को मैं तिनके के समान तोडकर फैंक देती हूँ। समुद्र के जल के साथ ऐसा किल्लोल करती हूँ कि पानी की लहरों को पर्वत के समान ऊपर उछाल देती हूँ। सारे समुद्र के किनारे को जहाजों के टुकडों से पूर देती हूँ। मुझे देखकर मनुष्य अपने घरों मे घुस जाते है, पशु-पक्षी अपनी जान लेकर भागते फिरते है, कमजोर मकानों के छप्परों को भी उठाकर फैंक देती हूँ, मजबूत मकानों को पकडकर हिला देती हूँ। मेरी साँस से राष्ट्र के राष्ट्र धूल मे मिल जाते है। क्या तुम नही चाहती कि तुममे भी मेरे समान शक्ति आ आवे ?"

यह सुनकर वसन्त की मन्दवायु ने कुछ उत्तर न दिया परन्तु वह अपनी यात्रा को चल पडी। उसको आते देखकर नदियाँ, ताल, जगल, खेत, सभी मुस्कराने लगे, बगीचों मे तरह-तरह के फूल खिल उठे, रग-बिरगे फूलों के गलीचे बिछ गये, सुगन्ध से चारों ओर का वातावरण भर गया। भौंरे अपना सुरीला राग छेडने लगे। पक्षीगण कुजों मे आकर विहार करने लगे। चारों ओर चैन और आनन्द की वंशी बजने लगी—चारों ओर आनन्द छा गया। सभीका जीवन सुखदाई हो गया। इस तरह से अपने कार्यों द्वारा वसन्तु-वायु ने अपनी शक्ति का परिचय आँधी को करा दिया।

नम्रता बडा उत्तम गुण है। जो कार्य स्त्री का सौन्दर्य करके दिखा सकता है वही नम्रता करके दिखाती है। उसका तत्काल ही दूसरों पर प्रभाव पडता है।

जो व्यक्ति हँसमुख है, प्रसन्नचित्त है और दूसरों के साथ शिष्टाचार से व्यवहार करना जानता है, वह संसार मे कही भी जा सकता है। जिस छप्पर की छाया मे वह ठहरेगा, वही आनन्द की लहरे उठने लगेगी। जिस समाज मे वह प्रवेश करेगा, वही का वह रत्न हो जायगा। जिस देश में वह अपने कदम रखेगा, वही देश अपनेको भाग्यवान् समझने लगेगा। इस दुःख और व्याधिग्रस्त संसार मे जो दूसरों को क्षणभर के लिए भी स्वर्गीय आनन्द का मजा चखा सकेगा, भला उसका आदर और स्वागत कौन न करना चाहेगा?

कहा जाता है कि जब प्रसिद्ध उपन्यासकार चार्ल्स डिकिन्स कमरे मे प्रवेश करता था तो ऐसा मालूम होता था कि कही अचानक आग जल उठी है। इसी तरह जब जर्मनी का महाकवि गेटे किसी होटल मे प्रवेश करता था तो सब लोग खाना छोड हर्ष से उसकी ओर देखने लगते थे।

जूलियन राल्फ काम करने के बाद लगभग दो बजे रात को लौटा और किवाड भडभडाने लगा। थोडी देर मे देखता है कि अमेरिका के राष्ट्रपति ने आकर किवाड खोले और पूछा—"कहो, सब ठीक है?" जूलियन ने क्षमा मागी। इसपर राष्ट्रपति ने कहा—"यदि मैं न आता तो तुम्हे रात भर बाहर ही पडे रहना पडता। मेरे सिवा मकान मे यहाँ कोई नहीं है। हाँ, मै अपने नौकर को भेज सकता था पर वह सो रहा था। उस को जगाना मैंने ठीक नहीं समझा।"

सौभाग्य की बात थी कि नैपोलियन ने जोसेफाइन से शादी करली थी। यह स्त्री बडी ही हृदयहारी और आश्चर्यजनक शक्तिवाली

थी। नेपोलियन के एक दर्जन स्वामीभक्त नौकर जो काम नहीं कर सकते थे उसे वह अपनी मुसकराहट से कर देती थी। जिस तरह नेपोलियन युद्ध-क्षेत्र मे वीर रहता था उसी तरह से वह समाज मे वीरागना रहती थी।

शिष्टाचार शारीरिक अवयवों की कमी पूरी कर देता है। वही व्यक्ति सर्व-सुन्दर है जो अपने शिष्टाचार से दूसरों पर विजय प्राप्त कर लेता है। सौन्दर्य का बिना शिष्टाचार के कोई मूल्य नहीं। उसके बिना जीवन सुखी होना दुर्लभ है। यदि सौन्दर्य मे शिष्टाचार, प्रेम, दया, सन्तोप और सहृदयता नहीं है तो ऐसे सौन्दर्य को दूर ही से नमस्कार है। वह केवल देखने की वस्तु है, मनुष्य के व्यवहार-की नहीं।

मिराबो एक बडा ही कुरूप पुरुप था, परन्तु उसका शिष्टाचार सर्वश्रेष्ठ था। लोगों को उससे वातचीत करते समय उसकी कुरूपता का कभी आभास मात्र भी न हो पाता था।

चरित्र और जीवन में एक प्रकार का सौन्दर्य रहता है। हम दूसरों की भलाई करते है, परन्तु उसके करने का ढंग ज्ञात न होने के कारण उसके स्वर्गीय सुख को प्राप्त नहीं कर सकते।

एक कुत्ते को हड्डी का टुकडा फेंक दीजिए, वह उठाकर चला जायगा। तुम्हारी ओर एक दृष्टि भी नहीं डालेगा। इसके विपरीत अगर तुम कुत्ते को अपने पास बुलाओ, उसके सिर पर हाथ फेरो और उसे रोटी का एक टुकड़ा दो, तो वह बडे प्रेम से पूछ हिलावेगा और तुम्हारे कार्य के लिए कृतज्ञता प्रगट करेगा। एक पशु भी मनुष्य के

शिष्टाचार तथा व्यवहार को समझता है। यदि तुम अपने भले कृत्यों को योंही फेंक दोगे, तो उनसे लाभ उठानेवाले कोई धन्यवाद-सूचक एक मुस्कराहट भी न प्रगट करेंगे। उनके हृदय विशेष हर्ष से भी प्रदीप्त न होंगे।

सुशीलता स्वयं ही एक सम्पदा है। सदाचरण और शिष्टाचार-वाले विना धन के ही संसार-यात्रा करते हैं। उनके लिए सब दरवाजे खुले रहते हैं। वे विना खरीदे सब वस्तुओं का आनन्द लूटते हैं। सूर्य के उजाले के समान प्रत्येक घर उनके स्वागत के लिए तैयार रहता है। भला रहे भी क्यों न? आखिर वे सब जगह प्रकाश, आनन्द और उजेला लेकर ही जाते हैं। वे सबकी भलाई चाहते हैं और इस तरह ईर्ष्या और द्वेष का समूल नाश कर देते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि शहद से पुते हुए मनुष्य को मधुमक्खियां नहीं काटती?

सभ्य पुरुष कभी भी अपने हृदय मे ऐसे दुर्गुणों को स्थान नहीं देते जिनसे दूसरों के विकास और सुख मे वाधा पहुँचे। वे ईर्ष्या, द्वेष, वदला लेने की प्रवृत्ति आदि दुर्गुणों को दूर ही से नमस्कार करते हैं। शिष्टाचार को समझनेवाले व्यक्ति मे हृदय की उदारता, दूसरों की हित-चिन्तना आदि की वडी ही आवश्यकता रहती है।

परन्तु कई व्यक्ति वड़े ही विचित्र रहा करते हैं। वे अपने कुटुम्ब के लोगों और नौकरों को वात-वात पर झिडका करते हैं। घर-गृहस्थी के छोटे-छोटे कार्य मे पत्नी को डाँटा करते हैं। वे वड़े चिड़चिड़े होते हैं। परन्तु अकस्मात् कोई मिलने आता है, तव सीधे-सादे वनकर मिलने को आगे वढते हैं। क्षणभर पहले का गुस्सा न जाने कहां चला

जाता है। वे बड़ी नम्रता से पेश आते है, बडी उदारता दरसाते है, परन्तु उस आगान्तुक के बिदा हो जाने पर फिर वही पहले की उदासीनता, रुष्टता और दुर्व्यवहार वापस आजाता है।

एक भोज मे एक दिन गोल्डस्मिथ जानसन के पास ही बैठे थे। गोल्डस्मिथ ने जानसन से अमेरिकन इंडियन के बारे मे कुछ पूछा। इसपर आपने उत्तर दिया—"सारे उत्तरीय अमेरिका मे कोई भी ऐसा महामूर्ख नही है जो ऐसा प्रश्न पूछे।"

इसपर गोल्डस्मिथ को बहुत बुरा लगा। फिर भी, नम्रता से उस विद्वान ने कहा—"महाशय! एक भले आदमी से इस तरह बात-चीत करनेवाला दूसरा कोई भी गंवार अमेरिका मे नही है।"

अरस्तू ने लगभग दो हजार वर्ष पहले भद्र पुरुष की परिभाषा लिखी थी। वह लिख गया है कि—"वह गहरे मन का आदमी भले और बुरे दिनों मे हमेशा ही सादगी से वर्त्ताव करता है। वह न तो अपनी बहुत बडाई ही कराना चाहता है और न अपनेको नीच कहलाना चाहता है। उसे न तो सफलता से आनन्द होता है और न विफलता उसे दुखित करती है। वह न तो भयंकर बातों को चुनता और न उनकी खोज मे रहता है। वह कभी स्वयं अथवा दूसरों के विषय मे बात नहीं करता। न तो उसे इस बात की परवाह रहती है कि दूसरे उसकी प्रशंसा करे और न वह चाहता है कि दूसरों को दोषी ठहराया जावे।"

एक सभ्य व्यक्ति सभ्य ही रहता है। इस बात मे कोई कमी नहीं रहती। वह तो चमकता हुआ हीरा रहता है। भीतर-बाहर

सब दूर एक-सा ही रहता है। वह हमेशा नम्र, दयालु और सभ्य रहता है। दूसरों की दुष्ट बातें उसे बुरी नही लगतीं। वह कभी भी दूसरे के मन को दुखानेवाली बात नहीं कहता। अनिष्ट का अनुमान लगाने मे वह धीर होता है। क्योंकि वह उसका विचार भी नहीं करता। अपनी रुचियों को वह अंकुश मे रखता है और संस्कारी बनाता है, अपनी भावनाओं को दबाता है अपनी वाणी अपने काबू मे रखता है, और दूसरे व्यक्तियों को अपने समान ही भद्र और भला समझता है।

जब चौदहवाँ क्लेमेन्ट पोप हुआ तो बहुत-से प्रतिनिधियो ने उसका अभिवादन किया। उत्तर मे पोप ने भी अभिवादन किया। इसपर कार्य-संचालक ने कहा—"आपको उनके अभिवादन का उत्तर नहीं देना चाहिए था।"

पोप ने कहा—"क्षमा कीजिए, मुझे अभी पोप हुए इतना समय नही हुआ कि मै अपने शिष्टाचार को भी भूल जाऊँ।"

कोई व्यक्ति शिष्टाचार से होनेवाले भारी लाभ का अनुमान नहीं कर सकता। शिष्टाचार ही हमे प्रसन्न करता अथवा नाराज करता है, ऊपर उठाता अथवा गिराता है, हमे जंगली अथवा सभ्य बनाता है। वायुमंडल की हवा के समान ही उसका हमारे तथा हमारे पडोसियों के ऊपर प्रभाव पडता है। शक्ति जिस काम को कराने मे असमर्थ होती दीखती है शिष्टाचार उसे हँसते-हँसते करा लेता है। समाज की सुन्दर श्रृंखला को व्यवस्थित रूप मे रखने के लिए शिष्टाचार का मुस्कराता हुआ शासक चाहिए। वह सब कलह दूर ही कर देता है और सब एक-दूसरे को अपना समझने लगते हैं।

मगून का कथन है कि—"शिष्टाचार के जैसी तो कोई दूसरी नीति नही है। क्योंकि जहाँ बढिया-बढिया बातें कोई मदद नहीं करती वहाँ सुन्दर शिष्टाचार की विजय हो जाती है।" लोगों को खुश करने की कला ही दुनिया मे आगे बढ़ने की कुजी है।

एक समय सम्राट नेपोलियन सेन्ट हेलेना मे अपने साथी के साथ कहीं जा रहे थे। सामने से एक मजदूर बोझा लेकर आरहा था। नेपोलियन का साथी रास्ता नहीं छोडना चाहता था। यह देखकर भूतपूर्व साम्राट ने कहा—"बोझ का सम्मान कीजिए। रास्ते से एक ओर हट जाइए।"

नम्रता और शिष्टाचार से कभी-कभी अज्ञातरूप से जो प्रभाव पडता है उससे आर्थिक लाभ भी हुआ करता है। एक व्यापारी था। वह अपनी दूकान बन्द कर घर जारहा था। इतने मे एक लडकी धागा लेने के लिए आई। वह लौटा और दूकान खोलकर उसे धागा दे दिया। इस छोटीसी घटना ने गाव भर मे उसका नाम प्रसिद्ध कर दिया और उसकी खूब बिक्री होने लगी। कुछ दिनों मे वह धनवान् हो गया।

एक गरीब पादरी ने देखा कि कुछ लडके दो वृद्ध स्त्रियों के पुराने ढंग के कपडों को देखकर उनकी हसी उडा रहे है। स्त्रियों ने इस डर से कि गिरजाघर मे भी यही हालत होगी, भीतर जाना ठीक न समझा। यह देख वह पादरी आगे बढा और बडी नम्रता से उन्हे अपने साथ अन्दर ले गया तथा अच्छे स्थान पर बिठला दिया। यद्यपि देवियों से उसका कोई सम्बन्ध नही था परन्तु उसके बर्ताव से वे बहुत खुश हुईं और उसकी बहुत प्रकार से सहायता की।

दो व्यापारी व्यापार करते है। दोनों ही अपने कार्य मे तकली सहन कर परिश्रमपूर्वक कार्य करते है। एक बडी नम्रता औ भलमनसाहत से ग्राहकों के साथ पेश आता है, दूसरा जरा-जरा म गुस्सा हो बैठता है। परिणाम यह होता है कि नम्रता से व्यवहार करनेवाला व्यापार मे उन्नति कर लेता है और दूसरा हाथ मलता रह जाता है।

अभद्र व्यवहार से प्रामाणिकता, उद्योग और बडी-से-बडी शक्तियाँ भी व्यर्थ चली जाती है। इसके विपरीत शिष्टाचार से तो दूसरी कमियाँ होते हुए भी उसका आदर होता है और उसको काम मिलता है।

एक गरीब लडकी ने थोडा-सा सामान खरीदा। दूकान के मालिक ने कहा—"बेटी। धन्यवाद है, कृपया आती जाती रहना।" इस जरा-सी बात ने भिखारिन लडकी पर बडा प्रभाव डाला और वह सबसे कहती फिरती थी कि अमुक दूकानदार बडा भला है। थोडे दिनों मे दूकानदार की खूब बिकरी होने लगी।

लेकिन बहुत-से आदमी अगर लडने मे बहादुर होते हैं। या खतरे का सामना बहादुरी से करते है, तो उनमे यह भी कमजोरी होती है कि वे सभा मे डरपोक या झेंपू रह जाते है। वहाँ उनकी जबान नही खुलती। वे सभा-चतुर नहीं होते। अपना मत नहीं प्रदर्शित कर सकते। उनमे योग्यता तो होती है, लेकिन अपनी योग्यता का भान उनको नहीं होता। यह शिष्टाचार की अशिक्षा है। इसको दूर करने का उपाय तो यह है कि बालक को बचपन मे सामाजिक जीवन

की सब बातों की, बोलने-चालने, उठने-बैठने, लोगों के सम्पर्क मे आने आदि की शिक्षा देनी चाहिए। इसका खयाल रखने से उनकी झेंप मिटेगी। ऐसे लोगों को अपने कपड़े-लत्ते का भी जरा खयाल रखना चाहिए। वे बहुत तडक-भडकवाले नही लेकिन फिर भी साफ-सुथरे हों, सादे हों, और ढंग के हों। इसका भी लोगों पर असर पडता है। हमारे चरित्र के समान हमारे आचार-व्यवहार की भी हमेशा जाच-पडताल होती रहती है। अगर हम किसी जन-समुदाय मे जाते है तो सैकडों-हजारों आखों की तराजुओं पर हमारा आचार-व्यवहार चढ़ जाता है। वे आँखे नापती है कि यह अपने व्यवहारों मे कितना घटा और कितना बढा। वे तुलना करके देखते है कि सर्वांश मे यह आदमी कितना खरा है। इसलिए हमको अपने आचार-व्यवहार आदि के बारे मे अपने साथियों के क्या विचार है, वे हमारी क्या कीमत आकते है, इसकी भी जानकारी रखनी चाहिए। यह ध्यान मे रखना चाहिए कि कोई बहुत समय तक लोगों को धोखे मे नहीं डाल सकता है। क्योंकि न्याय की तराजू तो चौबीसों घण्टे उसके अन्त.करण मे भी मौजूद रहती है। वह अन्तर्यामी हमारी हलचलों को, हमारे व्यवहारों को, देखता रहता है। इसलिए अन्तःकरण की सत्यता शिष्टाचार का ऊंचे-से-ऊँचा गुण है।

---

## [ ६ ]

## उत्साह

"जिस परिश्रम से हमे आनन्द प्राप्त होता है वह हमारी व्याधियो के लिए अमृत-तुल्य है, वेदना का निवारण है।"

—शेक्सपियर

"मनुष्य की सचाई का एकमात्र निर्णयात्मक प्रमाण यह है कि अपने सिद्धान्त के लिए वह अपना सब-कुछ स्वाहा कर देने के लिए तैयार रहता है।"

—लावेल

उत्साह कार्य का प्राण होता है। उत्साह हीनता से कोई काम नहीं किया जा सकता। उत्साह न रहने से समस्त मानसिक शक्तियाँ कार्य मे भाग नहीं लेतीं। मन कहीं काम करता है तो हाथ कहीं जाते हैं। थोड़ी देर तक इस तरह स्वयं ही शरीर के भागों मे युद्ध होता

रहता है और घण्टे भर का काम कई घण्टों मे होता है। सो भी बुरी तरह से। उत्साह एक अग्नि है जो हमारे कार्यों को चलाने के लिए भाफ तैयार करती है।

हेनरी का कहना है—"जब मैं किसी प्रधान विषय पर बातचीत करता हूं तो मुझे बाहरी दुनिया की बिलकुल याद नही रहती। अपने सामने के विषय मे मग्न होकर मै समय और स्थान के ज्ञान को भी भूल जाता हू।"

संसार के प्रत्येक बालक के हृदय मे कोई-न-कोई अच्छे काम को कर दिखाने की शक्ति होती है—भले ही लडका होशियार हो या मूर्ख हो। जो होशियार है उनके विषय मे तो कुछ कहना ही नहीं है, परन्तु जो सुस्त और अल्हड दीखते हैं यदि उनके मन मे भले कार्य की इच्छाशक्ति जागृत करदी जावे तो धीरे-धीरे संसार से आलस्य विदा हो जावेगा और एक सद्शक्ति का प्रकाश उनके हृदय को भर देगा।

उत्साह से प्रभावित हुए नेपोलियन ने दो सप्ताह मे वह काम कर दिखाया था जिसे करने मे दूसरों को एक वर्ष से कम न लगता। आश्चर्य मे पडे हुए आस्ट्रियन कहा करते थे—"ये फ्रासीसी मनुष्य नहीं है, ये तो उडते है।"

नेपोलियन ने अपने इटली के पहले धावे मे ६ विजय प्राप्त करली, २६ झण्डों को छीन लिया, ५५ तोपों को हस्तगत किया, १५ हजार कैदियों को पकड लिया और पेडमांट पर अधिकार जमा लिया।

इस अचानक आक्रमण को देखकर एक आस्ट्रियन जनरल ने कहा था—"यह नवयुवक सेनानायक युद्ध-कला के विषय में कुछ नहीं

जानता। वह निरा मूर्ख है। इससे कोई सम्बन्ध न रखना चाहिए।" परन्तु उस छोटे-से सेनानायक का उसकी सेना इतने उत्साह से साथ देती थी कि उसे कभी असफलता नहीं मिलती थी।

वाइड कहता है—"कई प्रधान-प्रधान बाते ऐसी रहती है जिनमें अर्द्ध-हृदय और पूर्ण-हृदय से काम करने मे क्रमानुसार उतना ही अन्तर रहता है जितना अन्तर पूरी हार और सुन्दर विजय मे रहा करता है।"

सीधी अबोध आरलेन्स की कन्या जोन की पवित्र तलवार, उसके पूज्य झण्डे तथा एक बड़े कार्य करने के विश्वास से फरासीसियों की सेना मे उत्साह भर गया था। इतना उत्साह कोई राजनीतिज्ञ और राजा भी भरने की ताकत नही रखता था। उत्साह ने उसे प्रतिभा के शिखर पर चढा दिया। यदि प्रत्येक व्यक्ति समझ ले कि उसमे कितनी शक्ति है, तो वह गजब के काम करके दिखला सकता है। परन्तु अड़ियल घोड़े के समान मनुष्य अपनी शक्ति को पहचानता नहीं है।

वेस्टमिनिस्टर के गिरजे मे एक कब्र के ऊपर लिखा हुआ है—"इसके नीचे इस गिरजे और नगर को बनानेवाला क्रिस्टोफर रेन सो रहा है। वह ९० वर्ष तक जनता की भलाई के लिए जीवित रहा। यदि तुम उसका स्मारक चाहते हो तो चारों तरफ देखो।" जहा कही तुम लन्दन मे देखोगे वही तुम्हे रेन की कला का नमूना मिलेगा। उसने किसीसे शिक्षा नही पाई थी। ५५ गिरजाघर और ३६ बड़े-बड़े हाल उसने तैयार किये थे। उसका कौशल हम्पटन केंसिंगटन के महलों

मे, टेम्पिलवार, ड्रूरेलेन, नाटकघर, रायल एक्चेंज मे स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इसने ३५ वर्ष परिश्रम करके सेन्ट पाल के गिरजे को तैयार किया। यह उसकी सर्वश्रेष्ट रचना है। उत्साह ही उसके शरीर को शक्ति प्रदान किया करता था। यही उसका चिरसाथी था।

बेपरवाही कभी विजय प्राप्त करनेवाली सेनाओ का सचालन नहीं करती, कभी ऐसी मूर्तियों को नहीं बनाती जिनमे से जीवन विकसित होता हुआ दिखाई देता हो, कभी प्रकृति को शक्तियो पर अधिकार नही जमा सकती, और न ससार को सार्वभौम उदारता के कृत्यों मे प्रभावित कर सकती है। उत्साह ने सुई को दिशासूचक यत्र की धुरी पर रखा, उसीने पहले पहल छापखाने की मशीन को चलाया, उसीने गेलीलियो के दूरबीन की नलियों को बनाया जिन्होंने एक के बाद एक नवीन दुनिया के दर्शन कराये, उसीने उन पालों को ताना जिन्होंने तूफानो का सामना करके कोलम्बस को बहामा पहुंचा दिया, उसीने हाथों मे तलवार लेकर स्वतंत्रता का युद्ध किया, खून की नदिया बहाई, उसीने कुल्हाडी लेकर विकराल जगलों को धाराशयी कर सभ्यता का विस्तार किया, और उसीने उन विचित्र छायायादी पत्रोंको पलटा जिनपर शेक्सपियर और मिल्टन ने हृदय मे चिनगारिया उत्पन्न कर देनेवाले विचारों को लिपिबद्ध किया। उत्साह ने ही विक्टर ह्यूगो को अपने कपडे-लत्तों की भी परवाह न करने के लिए मजबूर किया था ताकि वह 'नाट्रोडेम' नामक अपने उपन्यास को पूरा कर सके। उत्साह से प्रफुल्लित व्यक्ति एक बार झूठी बात को इस तरह से कहता है कि लोगो को उसकी बात पर विश्वास होने

लगता है, परन्तु सच्ची बात को रोनी सूरत लिये प्रकट करनेवाला अपने परिश्रम को व्यर्थ ही जाता हुआ देखता है। जो वक्ता अपनी बातों को पूरे जोश और उत्साह के साथ जनता के सामने रखता है, वही विजयी है। उसके वचनों को सुनकर रोम-रोम खड़े हो जाते हैं, उसके हृदय से निकली हुई आवाज से सुननेवालों का दिल हिल उठता है।

माइकेल एनजिलो ने १२ वर्ष तक चीरफाड़-विद्या (सर्जरी) का अध्ययन किया था। इससे उसका स्वास्थ्य खराब हो गया था। परन्तु इस कार्य ने उसकी शैली, उसके अभ्यास और उसकी प्रतिभा को निश्चित कर दिया था। वह अपने चित्रों के खाके को बनाता था, फिर उनपर माँस पुट्ठे और चमड़ा चढ़ाता था। अपने काम मे आनेवाले सब औजारों को उसने खुद ही बना लिया था। चित्र रंगने के सब रंगों को वह अपने ही हाथ से मिलाकर तैयार करता था, किसी विद्यार्थी अथवा नौकर को हाथ नहीं लगाने देता था।

फ्रान्सिस पार्कमैन ने जिस उत्साह और उद्योग से अपनेको कार्य मे लगा दिया वह प्रशंसनीय है और संसार मे मुश्किल से दिखाई देता है। जब वह हारवर्ड मे विद्यार्थी था तब उसने उत्तरीय अमेरिका के फरासीसियों और अंग्रेजों का इतिहास लिखने का निर्णय किया। उसने अपना तन, मन, धन सब-कुछ इसी एक काम मे लगा दिया। इतिहास की सामग्री एकत्र करते-करते अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया था। उसकी आँखें खराब हो गई थीं। वह एक बार मे अपनी आखों को पाच मिनट से अधिक समय तक काम में नहीं ला सकता

था। फिर भी उसने अपने युवावस्था के किये हुए निर्णय को नहीं छोडा और इतिहास का एक सर्वोत्तम ग्रन्थ संसार को लिखकर देगया।

लिंकन ६ मील चलकर एक व्याकरण की पुस्तक मागकर लाया और फिर रात को घर जाकर एक मोमवत्ती के वाद दूसरी जलाते हुए अपनी अमूल्य पुस्तक का अध्ययन करता रहा।

युवक-जीवन मे क्या है? जवानी मे कौनसी ज्योति, कौनसी महत्ता है? युवक उत्साह की वारुणी मे मस्त रहते हैं। उन्हे अपने सामने अन्धकार नही दीखता—अपने सामने वाधाये नहीं दीखती—अपने सामने असफलता नहीं दीखती। वे समझते है कि जाति का उद्धार करने के लिए, संसार को अच्छे रास्ते पर ले जाने के लिए ही उनका जन्म हुआ है। उनकी ये सुन्दर आशाये, ईश्वर करे, कभी नष्ट न हों। इन्हींके प्रकाश को अपने नेत्रों के सामने रखकर वे आगे वढते चले जावें।

उत्साह से प्रेरित युवक सूर्य का सामना कर सकता है। युवा-काल ही हृदय पर, दिमाग पर और मनुष्यत्व पर शासन कर सकता है। सिकन्दर युवक ही था। उसने यूरोपियन सभ्यता को नष्ट कर देनेवाले एशियाई दलों की धज्जिया उडा दी थी। नेपोलियन ने २५ वर्षो की आयु मे इटली पर विजय प्राप्त कर ली थी। रोम्यूलस ने २० वर्ष की आयु मे ही रोम की स्थापना की थी। न्यूटन ने २१ वर्ष की आयु के पूर्व ही अपने सवसे वडे आविष्कार किये थे। लूथर २५ वर्ष की आयु मे महान सुधारक हो गया था। २१ वर्ष के चेस्टरटन की वरावरी कोई अन्य अंग्रेजी कवि नहीं कर सकता था। विक्टर ह्यूगो ने एक

दुःखान्त नाटक की रचना १५ वर्ष की आयु मे की थी, तीन पुरस्कार प्राप्त कर लिये थे और २० वर्ष की आयु मे एम० ए० तक का ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

संसार के अधिकाश प्रतिभाशाली व्यक्ति ४० वर्ष तक भी नहीं पहुंच पाये थे। वर्तमान ससार मे नवयुवकों को जितने अवसर हैं उतने पहलेवालों को नहीं थे। आज उत्साह से प्रेरित होकर वे ससार को हिला सकते है। यह युवकों और युवतियों का जमाना है। यही उनका मुकुट है, यही उनकी कीर्त्ति है और उनकी सम्पदा तथा वैभव है।

जिस तरह से उत्साह युवा-काल मे अपने सामने के काटों को ठोकरों से धूल में मिला देता है उसी तरह यदि वह बुढापे तक उसी तरह जागृत अवस्था में रहे तो आश्चर्यजनक काम कर सकता है। ८० वर्ष के ग्लेडस्टन मे कार्य करने की जितनी शक्ति थी उतनी २५ वर्ष के आजके युवक मे पाई जाना कठिन है। आयु का गौरव उसके उत्साह मे रहता है और सफेद बालों को दिया हुआ सम्मान वास्तव मे उत्साह-पूरित हृदय को दिया हुआ सम्मान है।

८० वर्ष की आयु में वेलिंगटन ने किलेबन्दी की सब स्कीमों का निरीक्षण किया था। बेकन और हम्बोल्ट मृत्युशैया तक बड़े परिश्रमी विद्यार्थी रहे थे।

डाक्टर जानसन ने अपनी सर्वोत्तम रचना "कवियों का जीवनचरित्र" ७८ वर्ष की आयु मे लिखी थी। 'राबिन्सन क्रूसो' प्रकाशित कराते समय डेनियल डेफो ५८ वर्ष का था। न्यूटन ने अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपिया' के नये संक्षिप्त वर्णन ८३ वर्ष की आयु मे लिखे

थे। ८१ वर्ष को आयु मे लिखते हुए प्लेटो की मृत्यु हुई थी। टाम स्काट ने हिब्रू भापा का अध्ययन ८६ वर्ष की आयु मे शुरू किया था 'गति के नियम' की रचना करते समय गेलीलियो की आयु लगभग ७० वर्प की थी। जेम्सवाट ने ८५ वर्ष की आयु मे जरमन भापा सीखी। हम्वोल्ट ने अपने 'कासमाम' को ९० वर्प की आयु मे समाप्त किया। ३५ वर्प की आयु मे ही वर्क ने पार्लमेन्ट मे जगह प्राप्त कर ली थी और ससार को अपने चरित्र की महिमा प्रकट कर दी थी। ४० वर्प तक अज्ञात मे रहनेवाला ग्रान्ट ४२ वर्प की आयु मे एक प्रसिद्ध सेनापति हो गया। एलिविट ने कालेज मे भरती होने का इरादा किया, तव वह २३ वर्प का था; ३० वर्प की आयु मे वह ग्रेजुएट हो गया, और अन्त मे उसके कपास के कारखाने ने दक्षिणीय रियासतों के एक उज्ज्वल भविष्य को खोल दिया। जर्मनी के भाग्य-विधाता ८० वर्प के विसमार्क मे क्या गजब की शक्ति थी? महाकवि लागफेलो, टेनीसन, व्हीटियर आदि की कुछ उत्तमोत्तम रचनायें ७० वर्प की आयु मे हुई थीं।

उत्साह को कभी मन्द न होने दो और उसके प्रकाश मे अपने जीवन के कार्यों को करते जाओ। कभी थकावट नही मालूम होगी, कभी असफलता दुखदाई प्रतीत न होगी।

ईश्वर करे हम उत्साह को ही अपना जीवन-सगी वनावे।

---

[ १० ]

## व्यवहार-कुशलता

"साधारण योग्यता को बुद्धिमानी से काम मे लाने से ही प्रशसा प्राप्त होती है। उससे इतनी ख्याति होती है जितनी वास्तविक चमक मे नही होती।"

—रोचेफोकाल्ड

एक गोरे अफसर को एक हबशी ने पकड लिया। इसपर उसने कहा—"मै काले आदमी को कभी आत्म-समर्पण नही करूगा।" परन्तु काला आदमी डरनेवाला नहीं था। उसने चट अपनी बन्दूक उसकी ओर की और कहा—"महाशय! मुझे बडा अफसोस है, हम आपको पकडने के लिए सफेद आदमी नही ला सकते। यदि आप सीधे मेरे साथ नहीं चलेगे तो मुझे गोली चलानी पड़ेगी।" तब गोरे आदमी को बात माननी पडी।

इस युग मे चातुरी के आगे बुद्धि की एक भी नही चलती। हमे केवल बुद्धि की विफलता चारों ओर दीखती है। निपुणता के द्वारा एक बुद्धि से इतना काम लिया जा सकता है जितना बिना चतुरता के दस बुद्धियों से नही हो पाता। बुद्धि दोपहर तक सोती रहती है, चतुराई छः बजे ही सोकर उठ बैठती है। बुद्धि शक्ति है, चतुराई कौशल। बुद्धि करने योग्य काम जानती है, चतुराई उसका करना जानती है।

बुद्धि कुछ है, चतुरता सब-कुछ है। उसे छठवीं इन्द्रिय तो नही कह सकते, परन्तु वह सब इन्द्रियों का जीवन है। वह खुली आँख है, शीघ्र सुननेवाला कान है, जाचनेवाला स्वाद है और सुन्दर स्पर्श है, वह सब पहेलियों को हल करनेवाली है। सब कठिनाइयों पर विजय पाती है और सब बाधाओं को दूर करती है।

ससार मे क्रियात्मक कार्यों से दूर रहनेवाले व्यक्ति भरे पड़े है। ये प्रायः दो प्रकार के रहते है। एक तो वे है जिन्होंने अपनी सारी योग्यताओं को एक कोटि मे रखकर केवल किसी एक योग्यता का राक्षसी विकास कर लिया है। उनकी दूसरी योग्यताओं का प्रायः नाश हो चुका है। ऐसे एक-योग्यतावालों को संसार प्रतिभावान् व्यक्ति कहकर पूजता है और उनकी अन्य कार्यो की आयोग्यताओं को भूल जाता है, क्योंकि वह अपनी ऑखों द्वारा उनके ऐसे कार्यों को देखता है जिन्हे संसार का दूसरा कोई मनुष्य नही कर सकता। एक व्यापारी यदि अपने कमरे मे मूर्खता से भी पेश आता है पर व्यापार मे महान् व्यापारी का कार्य कर दिखावे तो लोग उसकी गलती को भूल

जाते हैं। उसकी चकाचौंध कर देनेवाली प्रतिभा के सामने उसकी सब कमियाँ ढंक जाती हैं। एडम्स स्मिथ ने संसार को अपनी "राष्ट्रों की सम्पत्ति" नामक ग्रन्थ के द्वारा मितव्ययता का पाठ पढाया है, परन्तु वह अपने गृह-कार्यों मे मितव्ययी न हो सके।

ससार के महान पुरुषों के जीवन-चरित्रों को पढने से यह बात स्पष्ट रूप से दीखती है कि बड़े-बड़े पुरुष अपने गृह-कार्यों में बहुत निपुण न थे। सर आइजक न्यूटन विश्व के रहस्य को समझ सका, परन्तु काम करते समय बिल्ली की आवाज से घबराया करता था। बीथवन संसार-प्रसिद्ध संगीताचार्य था, परन्तु छः कमीजों और आधे दर्जन रूमालों के लिए उसने दरजी को ३००) रुपये दे दिये और आगे के काम के लिए भी दरजी को एक बडी रकम पेशगी दे दी। यह सब तो ठीक, पर कई बार इनको एक बिस्कुट और एक गिलास-भर पानी पर ही दिन बिताना पडा था। डीन स्विफ्ट सरीखा प्रतिभावान लेखक भूखों मरता था और वहीं उससे कम योग्यतावाले हलुआ-पूरी उडाते थे। नेपोलियन का एक सेनापति युद्ध-कला को अपने स्वामी ही के सामन जानता था, परन्तु वह उसके समान मनुष्यों का ज्ञान नही रखता था। उसमे विवेक-बुद्धि नहीं थी।

संसार के अद्वितीय कानूनदा डेनियल को अपने एक मुकदमे की फीस में एक हजार डालर के नोट मिले। उस समय वह पुस्तकालय मे बैठा हुआ पुस्तकें पढ रहा था। दूसरे दिन उसे कुछ रुपयों की जरूरत पडी, परन्तु उसे नोट नही मिले। बहुत दिनों बाद उसने अपनी एक किताब के पन्ने पलटते समय एक नोट रखा हुआ पाया। कुछ

पन्ने उलटने पर दूसरा मिला। इस तरह से उसका खोया हुआ सारा धन मिल गया। वह पढने की धुन मे निशान लगाने के लिए रद्दी कागज के टुकडे की जगह अपने नोट रखता चला गया था।

कई व्यक्ति कभी-कभी इतने ध्यानशून्य हो जाते है कि ऐसा मालूम होता है कि उनमे विवेक-बुद्धि बिलकुल है ही नहीं। विचार-मग्न प्रोफेसर लेसिंग अपने घर गये और दरवाजे को खटखटाने लगे। ऊपर से नौकर ने इनकी ओर देखा परन्तु अन्धेरे मे वह इन्हे पहचान न सका। अतएव इन्हे दूसरा कोई व्यक्ति समझकर उसने कह दिया—"प्रोफेसर साहब घर नही है।" "अच्छा।" कहकर लेसिंग महाशय वहा से चले गये।

वेन्डल फिलिप्स ने कहा है कि विवेक-बुद्धि आवश्यक बातों के सामने झुक जाती है और उनका उपयोग करती है।

ब्रिटिश भूमि पर पदार्पण करते समय सीजर को ठोकर लग गई और वह गिरने ही वाला था कि उसने झुककर किनारे की बालू मुट्ठियों मे उठाकर कहा—"देखो, यह हमारे विजय की सूचना है।"

इसी तरह नेपोलियन भी विवेक-बुद्धि और व्यवहार-बुद्धि का गजब का पडित था। एलबा टापू से भागकर जब वह फ्रान्स पर पुनः अधिकार करने के लिए आया तब एक सेना उसे रोकने और पकडने के लिए भेजी गई। नेपोलियन सिह के समान साहसी वीर था। अपने कोट के बटनों को खोलकर सिपाहियों के सामने जा खडा हुआ और जोर से बोला—"सैनिको। क्या तुम अपने सम्राट पर गोली चलाओगे?

नो लो, मेरा सीना तुम्हारे सामने है।" सिपाहियों का दिल फिर गया और वे नेपोलियन के पक्ष मे होगये।

शेक्सपियर और कवि गेटे की किसीने तुलना की। उसपर विचार करते हुए गेटे ने लिखा है कि शेक्सपियर हमेशा ठीक निशाना लगाता है परन्तु मुझे तो ठहरना पडता है, सोचना पडता है, उपयुक्त चुनाव करना पडता है, तब कहीं मेरा आघात होता है।

विवेक-बुद्धि से संचारित किये हुए छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़े भयकर तीरों और तोपों की चतुरता-हीन अग्निवर्षा से कहीं अधिक उपयोगी और कृतकार्य होते हैं।

थारलोवीड ने सबसे पहला पैसा एक सन्दूक को ठीक करके पेदा किया था। उसे संसार मे बढने के मौके नहीं थे, सुविधायें नही थीं, परन्तु उसमे व्यवहार-कुशलता और निपुणता थी। वह खुली पुस्तक के समान मनुष्यों को पढा सकता था और उन्हे अपनी इच्छा के अनुसार घुमा-फिरा लेता था। वह निःस्वार्थी था। उसकी निपुणता के कारण उसे बड़े-बडे कार्य सौंपे गये थे।

नेपोलियन एक सेना सहित एक नदी के किनारे पहुचा। नदी पर पुल नहीं था। उसने अपने प्रधान इजीनियर से पूछा, "इस नदी की चौडाई क्या है?"

"साहब, मै नही कह सकता। मेरे यत्र सेना के साथ हे और हम लोग दस मील आगे आ गये है।"

"इस नदी की चौड़ाई को जल्दी से नापो।"

"सरकार विचार से काम लीजिए।"

"नदी की चौड़ाई अभी बतलाओ, नही तो तुम्हे नौकरी से अलग करता हू।"

अब इंजीनियर को अक्ल आई। उसने अपने हेमलेट (ऊँचे टोप) के सहारे गणित के एक प्रसिद्ध नियम का उपयोग करके बताया कि इसकी चौडाई लगभग इतनी होगी। नेपोलियन ने उसकी पदोन्नति कर दी।

कार्य-कुशलता न रहने से हमेशा बने-बनाये काम विगड जाते है और मनुष्य हँसी की सामग्री हो जाता है।

विवेकबुद्धि-युक्त व्यक्ति हरएक बात को अपने ही कार्यानुकूल ढाल लिया करता है। यही उसके उत्थान और उसकी श्रेष्ठता का कारण होता है।

जिस कठिनाई को देखकर एक आदमी मार्ग-रहित हो जाता है वह कठिनाई विवेक-बुद्धिवाले के सामने एक खेल उपस्थित करती है और वह हंसते-हंसते विजय पा लेता है।

किसी आदमी को ठीक तरह से देखने के लिए यह अत्यन्त जरूरी है कि तुम ठीक स्थान से उसे देख लो। उसे अच्छे प्रकाश मे रखो। उसके गुण और दोप अच्छी दृष्टि को पाकर सामने ही प्रगट हो जाते है।

महाकवि शेक्सपियर मे आश्चर्यजनक चतुरता थी, वह प्रत्येक चीज को नाटक मे परिवर्त्तन कर देता था। वह राजा और आश्रित को, मूर्ख और छैलों को, कुमार और किसान को, काले और सफेद को, गहरी कामनाओं और आचरण को, कीर्त्ति और अपकीर्त्ति को

मिलाना जानता था। और इसके जरिये ऐसा चित्र तैयार करता था कि देखनेवाले दंग हो जाते थे।

कई व्यक्ति जरा-जरा-सी बातों पर क्रोध दिखलाकर अपनी विवेक-शून्यता का परिचय देते हैं। कई लोग गधे से न जीतकर गधैया के पीछे पड जाते है। कई महापुरुष इतने आगे बढ जाते हैं कि किसीकी बात को पूर्ण रूप से सुने बिना ही उसका उत्तर देने की कोशिश करते है। परन्तु विवेक-बुद्धिवाले व्यक्ति मिथ्या आरोपों पर बिलकुल ध्यान ही नही देते।

---

[ ११ ]

# आत्मसम्मान और आत्मविश्वास

"आत्मसम्मान मनुष्य के दुर्गुणो को वश मे रखने की पहली लगाम है।"

—बेकन

"आत्मविश्वास की कमी ही हमारी बहुतसी असफलताओ का कारण रहती है। शक्ति की निश्चयता ही मे शक्ति है। वे सबसे कमजोर है, चाहे वे कितने ही शक्तिशाली क्यो न हो, जिन्हे अपना तथा अपनी शक्तियो का विश्वास नही।"

—बोवी

एक गरीब स्काच जुलाहा हमेशा अपने विषय मे प्रार्थना किया करता था कि उसके विचार अच्छे हो जावे। क्योकि जबतक मनुष्य अपने आचरण द्वारा लोगो को अपना अच्छापन न दिखा देगा

तबतक वह लोगों से अपने लिए अच्छेपन की आशा कैसे रख सकता है ?

जब तुम दूसरे का सम्मान नहीं करते, तो तुम्हारा सम्मान करने की दूसरों को क्या परवाह ? वे क्यों तुम्हारा सम्मान करें ? आत्म-सम्मान तो उन्हीं सिद्धान्तों पर निर्भर है जिनपर कि दूसरों का आदर करना निर्भर करता है।

लिंकन महोदय का कथन है कि तुम सब मनुष्यों को भले ही कुछ समय के लिए धोखा देदो, भले ही कुछ मनुष्यों को सब समय के लिए धोखा देदो, परन्तु सब मनुष्यों को सब काल के लिए धोखा नहीं दे सकते। हम स्वयं ही अपनेको कभी धोखा नही दे सकते। यदि हम सम्मान चाहते है, तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे कार्य यह बतला देवे कि हम उसके योग्य है। एक खोटे सोने की मुहर कब-तक सच्चे सोने की कहलाकर पूजी जा सकती है ?

कालोना के स्टीफेन को जब उसके शत्रुओं ने कैद कर लिया, तब उससे पूछा—"बताओ, तुम्हारा किला कहाँ है ?" हृदय पर हाथ रखते हुए उसने उत्तर दिया—"यहाँ।"

वाशिंगटन इरविंग का कथन है कि अच्छी तरह से तैयार की गई और अच्छी तरह से सुशिक्षित की हुई बुद्धि को हमेशा ही स्थान मिल जाता है, परन्तु उसे अपने घर मे छिपी न रहना चाहिए। वह यह आशा न करे कि दूसरे उसे ढूँढ लेंगे। आगे बढ़नेवाले और ढीठ मनुष्यों की सफलता के बारे मे बहुतसी गलत बातें फैली हुई है। अच्छी योग्यतावाले एक कोने मे पड़े रह जाते है। सच बात

यह है कि आगे बढनेवाले मनुष्यों के पास कार्य करने की विधि के वे गुण मौजूद है जिनके बिना केवल योग्यता किसी काम की नहीं होती। लोग कहा भी तो करते है कि भोंकनेवाला कुत्ता सोये हुए शेर से अधिक उपयोगी है।

जान कालहम को दिन-रात अध्ययन मे लगे देखकर कालेज के एक विद्यार्थी ने हँसी की। उसे सुनकर कालहन ने कहा—"मुझे अपने समय को इस तरह से काम मे लाने की आवश्यकता है, क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं काग्रेस मे अच्छी तरह से कार्य कर सकू।" उसकी इस बात का स्वागत हँसी ने किया। तब उसने जरा जोर देकर कहा कि, "क्या तुम अविश्वास करते हो? मैं तुम्हे विश्वास दिलाता हूँ कि यदि मुझे यह विश्वास न होता कि तीन वर्षों के भीतर राजधानी की ओर से काग्रेस मे चुना जाऊंगा तो मै इसी समय कालेज को छोड देता।"

किसी व्यक्ति को इस तरह की बाते कहते सुनकर हम उसे अहकारी कहे बिना नही रह सकते। यह केवल विवेक-शून्यता की बात है। निस्सन्देह अधिकाश मनुष्य अहंकारी ही रहते है, परन्तु आगे चलकर महान् होनेवाले व्यक्तियों के ऐसे शब्द उनकी शक्तियों के विश्वास के आधार पर कहे जाते है। बड़े आदमी हमेशा ही अपनी योग्यताओं के मूल्य को समझकर उसीके अनुसार आत्म-विश्वास करना जानते है। कवि वर्ड्सवर्थ जानता था कि इतिहास मे उसका कौन-सा स्थान होगा और वह हमेशा ही इस बात को कहा करता था। जर्मनी के महाकवि ने अपने भविष्य को स्वयं ही बतला दिया था। तूफान से नौका

को डगमगाती देखकर नाव का स्वामी घबराने लगा तब सीजर ने कहा था—"घबराओ मत, तुम्हारी नौका मे सीजर और उसका भाग्य है।"

नैतिक दृष्टि से उसी आदमी पर विश्वास करना सुरक्षित है जो स्वयं अपने ऊपर विश्वास करता है। परन्तु जब कोई व्यक्ति अपनी ईमानदारी पर स्वयं ही विश्वास नही करता, तो भला दूसरे क्यों करेंगे? सच है, नैतिक पतन का आरम्भ घर से ही होता है।

आजकल दुनिया के पास इतना समय नहीं कि किसी कोने मे पडी हुई विद्वत्ता को खोज निकाले। मनुष्य का चुनाव उसके मुंह से बतलाई हुई योग्यता ही पर किया जाता है। यदि भविष्य मे वह इस योग्यता को प्रदर्शित न कर सका तो इसमे उसीकी हानि है। ससार साहस और मनुष्यत्व की प्रशंसा करता है और ऐसे व्यक्ति को घृणा की दृष्टि से देखता है जो संसार मे पैदा होने के अक्षम्य अपराध के लिए हमेशा क्षमा-प्रार्थी की सूरत बनाये घूमता है।

सेचलिग ने क्या ही सत्य कहा है, कि जो मनुष्य इस बात को जानता है कि वह क्या है वह शीघ्र ही जान लेगा कि उसे क्या होना चाहिए। पहले-पहल यह जरूरी है कि उसके विचार मे आत्मसम्मान अवश्य हो। फिर व्यवहार मे तो वह अपने-आप आ जायगा। दृढ़ता के साथ सामग्रियों को बार-बार अपने अधिकार मे घोषित करनेवाला वास्तव मे उसका अधिकारी हो जाता है। कोसूथ का कथन है कि, "नम्रता बुद्धिमानी का एक हिस्सा है और मनुष्यों के लिए शोभनीय है। परन्तु किसीको भी आत्मविश्वास को कम नहीं करना चाहिए। वही, सब गुणों मे, मनुष्य की मनुष्यता का सर्वश्रेष्ठ गुण है।" इसी

तरह फ्राउड का कहना है कि फल और फूल से एक पेड को पूर्ण करने के लिए उसकी जड को खूब नीचे तक जम जाना चाहिए। इसी बुनियाद पर मानसिक शिक्षण और सुधार की इमारत खडी की जा सकती है। एक नवयुवक को ऐसे आत्मसम्मान की आवश्यकता है जो उसे नीची कोटि से ऊपर उठाता है और उसे दूसरों के तिरस्कार से स्वाधीन कर देता है।

कारान ने एक मुकदमे की पैरवी करते हुए कहा—"मैंने अपनी सब कानून की पुस्तकों का अध्ययन कर लिया है और मुझे एक भी ऐसा मुकदमा नही मिला जहा विपक्षी के द्वारा घोषित किया हुआ हक ठीक बतलाया गया हो।"

जज राबिनसन ने बीच मे टोककर कहा—"महाशय। मुझे सन्देह है, मालूम होता है आपका पुस्तकालय छोटा है।"

नवयुवक कानूनदा ने शान्ति से जज महोदय के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा—"श्रीमन्। यह ठीक है कि मै गरीब हूं और परिस्थितियों ने मेरे पुस्तक-सग्रह को छोटा ही रखा है। मेरी किताबो की संख्या अधिक नही है। परन्तु वे चुनी हुई है और मुझे विश्वास है कि मैने उन्हे अच्छी तरह से पढा है। मैंने अपनेको इस ऊचे धन्धे के लिए थोडी-सी अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करके तैयार किया है। मैंने खराब पुस्तकें नही पढी। मुझे अपने गरीब होने की कोई शर्म नही है, परन्तु यदि मै खराब ढंग से द्रव्य पैदाकर धनवान हुआ होता तो बडी लज्जा आती। यदि मैं बडा आदमी नही हो सकूंगा तो कम से कम ईमानदार तो रहूंगा, और यदि इस मार्ग को त्यागकर

मैं बुरे रास्ते से ऊंचे पद को प्राप्त भी करलू तो वह पद मुझे बहुत ही अधिक घृणा के योग्य बना देगा।" आत्माभिमान और आत्म-विश्वास से पूर्ण इन शब्दों को सुनकर जज महोदय ने फिर कभी भी नवयुवक बॅरिस्टर की हंसी नही की।

माइकेल रेनाल्ड्स ने कहा है कि "आत्म-निर्भरता चरित्र का एक बड़ा ही बहुमूल्य तत्त्व है।"

आत्म-निर्भरता कोई हंसी-खेल की चीज तो है ही नहीं। उसके लिए कठिनाइया झेलना पडती है। अपने तन, मन और धन को निछावर कर देना पडता है।

अतएव मनुष्य की उन्नति के लिए, उसे ससार के मनुष्यों मे उच्च बनाने के लिए, उसके कार्यो मे सफलता और मनोहरता को लाने के लिए, आत्म-विश्वास एवं आत्म-सम्मान की अत्यन्त आवश्यकता है। आत्म-निर्भरता भी इन्हींके साथ रहनी चाहिए।

महाकवि शेक्सपियर ने एक जगह कहा है कि "जो कमजोर, आश्रित और आगापीछा करनेवाले है, वे आत्म-निर्भर रहनेवालों के उदार अहंकार को समझ नहीं सकते। आत्म-निर्भीक मनुष्य को इस बात की खुशी नही रहती कि उसे मुकुट मिल गया, बल्कि इस बात की खुशी रहती है कि उसमे मुकुट प्राप्त करने की शक्ति है।" आगे चलकर वह कहता है—"यदि तुम अपने साथ ईमानदार रहोगे, तो जिस तरह रात के बाद दिन का होना निश्चित रहता है उसी प्रकार तुम किसी आदमी को धोखा न दोगे।"

---

# [ १२ ]

## चरित्र-बल

"चरित्र एक शक्ति है, प्रभाव है। वह मित्र उत्पन्न करता है, सहायक और सरक्षक प्राप्त कराता है, और धन मान और सुख का निश्चित मार्ग खोल देता है।"

—जे हावेज

"चरित्र हर एक चीज का पोषक और मददगार होना चाहिए—धर्म, उपदेश, कविता, चित्र, नाटक। विना चरित्र के किसी भी वात का रत्तीभर मूल्य नही होता।"

—जे जी हालैन्ड

"महान् बनो और अन्य मनुष्यो मे होनेवाली महानता तुम्हारी सहायता से मिलने के लिए उठ खडी होगी।'

—लावेल

सिसेरो को एक सरदार ने कहा—"तुम तो नीच कुल के हो। हमारी-तुम्हारी क्या बराबरी?" रोम के उस महान वक्ता ने नम्रता से जवाब दिया—"मेरे कुल की कुलीनता मुझसे शुरू होती है और आपकी कुलीनता का अंत आपसे होता है।"

स्पार्टा का राजा और एक आगन्तुक बातचीत कर रहे थे। किसी विशेष बात के कहने का अवसर आता देखकर आगन्तुक ने राजा की दस वर्ष की सुकुमारी बालिका की ओर हाथ उठाकर कहा—"इसे थोड़े समय के लिए बाहर भेज दीजिए।" राजा ने कहा—"नही, जो-कुछ आपको कहना है, इसीके सामने कहिए।"

लड़की पिता के पैरों के पास बैठ गई। आगन्तुक धन के बल पर बादशाह की मदद खरीद पड़ोस के देश का राजा होना चाहता था। कन्या इन बातों को नहीं समझती थी, परन्तु वह मुख की भावनाओं को समझती थी। पिता के चेहरे पर सद्-भावनाओं और कुरुचि के होनेवाले चिन्ह को वह समझती थी। पिता के चेहरे पर विचारों को देखकर वह समझ गई कि कुछ ऐसी बात है जो मेरे पिता नहीं करना चाहते अन्यथा पिताजी की मानसिक हालत यह न होती। उसने पिता का हाथ पकड़ते हुए कहा—"पिताजी। चलो यहा से चले, यह आदमी न मालूम आपसे क्या करावेगा।" बालिका की बात को बादशाह न टाल सका। वह वहा से उठकर चला गया और स्वर्गदूत के हृदय मे निवास करनेवाली पवित्रता ने एक देश को कलंक से बचा लिया।

नंगे पैर चिथड़े पहने हुए लड़के ने आगे बढ़कर एक रास्ते चलते हुए सज्जन से कहा—"महाशय। कुछ दियासलाई खरीद लीजिए।"

"नहीं, मुझे नहीं चाहिए।"

"ले लीजिए। कीमत एक पैसा ही तो है।" कहकर लडका उनके मुंह की ओर देखने लगा। फिर भी इन महाशय ने कहा:—

"मुझे इनकी जरूरत नहीं है।"

"अच्छा तो, एक पैसे की दो डब्बियाँ ही ले लीजिए।"

किसी तरह से लडके से पिंड छुडाने के लिए महाशय ने एक डब्बी ले ली, पर जब देखा कि पास मे पैसा नहीं है तो डब्बी वापस कर दी और कहा—"मैं कल खरीद लूगा।" लडके ने फिर नम्रता से कहा—"आज ले लीजिए, मै पैसा भुनाकर लादूँगा।"

बालक की बात सुनकर उन्होंने उसे एक शिलिंग दे दिया। थोडी देर तक वह खड़े रहे, पर लडका नहीं आया। सोचा कि शायद अब बाकी का पैसा न मिलेगा, और थोडी देर राह देखकर वह अपने घर चले गये।

शाम को एक नौकर ने आकर खबर दी कि एक लड़का उनसे मिलना चाहता है। उत्सुकता से उन महाशय ने उसे अन्दर बुलाया। देखते ही वह समझ गये कि शायद यह उस लडके का छोटा भाई है। यह उसकी अपेक्षा और भो अधिक चीथडों से लिपटा हुआ था। उसके शरीर पर हड्डिया ही नजर आती थीं पर चेहरे पर एक प्रकार की तेजस्विता थी। थोडी देर चुप खड़े रहने के बाद उसने कहा— "क्या आपने ही मेरे भाई से दियासलाई की डब्बी खरीदी थी?"

"हा।"

"लीजिए इतने से पैसे बचे है। वह आ नही सकता। उसकी तबीयत

ठीक नहीं है। एक गाडी से वह टकरा गया और ऊपर से गाड़ी चली गई है। उसकी टोपी, डब्बिया और आपका शेप पैसा न मालूम कहा गया। उसके दोनों पैर टूट गये, वह अच्छा नहीं है। डाक्टर कहते है, वह नहीं बचेगा। उसने किसी तरह इतने पैसे भेजे है।" कहकर बालक रोने लगा। उन सज्जन का हृदय पिघल गया। वह उसे देखने गये।

जाकर देखते है कि बिना-बाप का बालक एक वृद्ध शराबी के घर मे रहता है। लड़का फूस पर लेटा हुआ था। इन्हे देखते ही वह पहचान गया और लेटे-लेटे बोला—"मैंने पैसे भुना लिये थे, महाशय, और लौटकर आ रहा था। घोड़े के धक्के से मै गिर पडा। मेरे दोनों पैर टूट गये। प्यारे छोटे भाई। प्यारे। मेरी मृत्यु आ रही है। भय्या! तुम्हारा क्या होगा? तुम्हारी देखभाल कोन करेगा? मेरे जाने पर क्या होगा? हाय! तुम क्या करोगे?"

यह कहते हुए उसने अपने छोटे भाई को गले से लगा लिया। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे।

इन सज्जन ने दुखो बालक के हाथ को अपने हाथ मे लेकर कहा—"बेटा! तुम चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे भाई की रक्षा करूंगा।"

बालक समझ गया। उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी, फिर भी शेप शक्ति के बलपर उसने इनकी ओर देखा। आँखों से धन्यवाद और कृतज्ञता के भाव साथ-साथ निकल रहे थे। हृदय कुछ कहना चाहता था, पर शब्द मुँह से नहीं निकलते थे। उसी समय उसकी आँखे बन्द हो गई और इस क्षणभंगुर शरीर को त्यागकर उसकी आत्मा जगत्पिता की गोद मे जा पहुची।

भगवान ने उस छोटे-से घायल और मरते हुए लडके को बहुत बड़े सिद्धान्त सिखाये थे। बड़े-बड़े धनियों की अपेक्षा वह कहीं अधिक ईमानदारी, सत्य, महानता, सहृदयता के मूल्य को समझता था। ये ही सद्गुण मनुष्य को देवता बना देते हैं। इन्हींके कारण मनुष्य इस लोक मे तथा परलोक मे पूजे जाते हैं।

पीले बुखार की महामारी के समय रोगियों की सेवा करनेवाले सेवकों की बडी जरूरत थी, परन्तु लोग मिलते न थे। रिलीफ कम्पनी हैरान थी। एक दिन एक असभ्य भद्दी शक्लवाले आदमी ने आकर कहा,—"मैं इस काम को करना चाहता हूं।"

डाक्टर ने उसे नीचे से ऊपर तक सावधानी के साथ देखकर कहा—"तुम इस कार्य के योग्य नहीं हो।"

उसने निवेदन किया—"मैं इस काम को करना चाहता हूँ। मुझे एक सप्ताह तक देख लीजिए। यदि आप मेरे काम से सन्तुष्ट न हों तो मुझे निकाल दीजिएगा, और यदि प्रसन्न हों तो मेरी मजदूरी दे दीजिएगा।"

"अच्छा तो, मै तुम्हे रख लेता हू। पर सच्ची बात तो यह है कि मैं जरा हिचकता हूँ।" इसके बाद मन ही मन डाक्टर ने सोचा—"इसपर गुप्त रूप से निगरानी रखना पडेगी।"

परन्तु कुछ दिन मे वह सबसे अधिक सेवा करने वाला सिद्ध हुआ। वह थकता ही नही था, उसे अपनी परवाह नहीं रहती थी। बीमारी के भयंकर से भयंकर स्थान मे वह वीर की तरह चला जाता था। मौत के मुह पडे हुए प्राणियों को जीवन-दान देने का प्रयत्न करता था।

उनकी सेवा मे दत्तचित्त होकर काम करता था। अपने प्रेमी सम्बन्धियों से त्यागे हुए और बिना मददगार के कोनों मे सड़नेवालों को वह स्वर्ग का दूत प्रतीत होता था। उसके चेहरे को देखकर बीमार एक-बार जी-से उठते थे।

लेकिन जिस दिन तनख्वाह मिलती थी उस दिन उसकी एक विचित्र हालत होती थी। वह सब लोगों की आँख बचाकर जाता और रोगियों की सहायता के लिए दान इकट्ठा करने की पेटी मे अपनी कमाई के पैसे को डाल आता था। कुछ दिनों मे वह बीमार हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। उसके शरीर की अन्त्येष्टि-क्रिया करते समय देखा गया कि उसके शरीर पर एक बडा भारी निशान था, जिससे यह मालूम होता था कि किसी समय इसने भयकर दुष्कर्म मे जेलखाना भोगा था।

यह युग एक प्रकार से पैसे का युग है। चारों ओर धन की पुकार मची हुई है। परन्तु इतने पर भी एक गरीब लेखक, एक कला-विशारद तथा विद्वान व्यक्ति का करोडपतियों से अधिक आदर होता है। धन हमेशा ही बुरी बातों को प्रोत्साहन दिये रहता है। पैसे की दुनिया मे एक आदमी की सफलता हजारों को दुःख और असफलता मे डाल देती है। बुद्धि की दुनिया मे, सफलता से समाज की उन्नति मे सहायता मिलती है। धनी-गरीब दोनों ही चरित्र के अधिकारी है। समाज के लिए दोनों से सुन्दर चरित्र की आशा है। लेकिन धनी धन के घमण्ड मे अपने चरित्र को खो बैठता है और दूसरा उसे ही अपना सब-कुछ समझकर अपनाता है। एक तरह से

दोनों ही भिन्न श्रेणी के व्यक्ति है। सच्चा व्यक्ति किसी को प्रसन्न करने के लिए अथवा किसी लाभ को प्राप्त करने के लिए अपने चरित्र को पवित्र नहीं रखता। वह तो चरित्र को ईश्वर का एक सन्देश समझता है, निःस्वार्थ-भाव से वह अपने कार्यों को करता है।

हम सब चरित्रवान् आदमियों मे भरोसा रखते है। एक महान पुरुप के नाम मे कैसी जादूभरी शक्ति होती है? थ्योडोर पार्कर कहा करते थे कि सुकरात की कीमत दक्षिण कारोलिना की रियासतों से बहुत ज्यादा है।

संसार मे विजय पाने के लिए चरित्र वडा मूल्यवान है। लार्ड केनिग ने लिखा है—"मैं चरित्र के मार्ग पर चलकर शक्ति प्राप्त करूंगा, मैं दूसरे मार्ग का अवलम्बन नहीं करूंगा, और मुझे विश्वास है कि यद्यपि यह मार्ग जल्दी से मुझे मेरे इच्छित उद्देश्य को प्राप्त नहीं करा सकता फिर भी वही बिलकुल निश्चित मार्ग है।"

हरएक इंजिन की शक्ति का बारीकी से हिसाब लगाया जा सकता है, परन्तु मनुष्य के अन्दर छिपे हुए चरित्र की शक्ति को कौन नाप सकता है? एक लडके अथवा लड़की पर स्कूल मे पडनेवाले संस्कार का कौन अंदाज लगा सकता है? एक-दो लडके अपने कार्यों के द्वारा परम्परा की बाते और चालों को बदल देते है। रूढियों को तोड़ने वाले इन वीरों के चरित्र को क्या कोई किसी यंत्र से नाप सकता है?

मास्को से एक सेना भाग रही थी। खून को जमा देनेवाली ठण्ड पड रही थी, बर्फ गिर रहा था। इस सेना का नायक एक जर्मन

राजकुमार था। उसके चारित्र्य के कारण सैनिक उसे अपने प्राणों से भी अधिक प्यारा समझते थे। एक ठण्डी रात को इस सेना की एक टुकड़ी राजकुमार सहित एक टूटी-फूटी झोपडी मे आकर ठहरी। सब थके और भूखे थे। राजकुमार को नीद लग गई। सबेरे वह अपने ऊपर पड़े हुए गरम कपड़ों को अलग फेंककर उठा। बर्फ का तूफान चल रहा था। उसने अपने सिपाहियों को पुकारा, परन्तु कोई न बोला। हवा की सन्नाहट मे उसकी आवज विलीन हो गई। उसने देखा तो मालूम हुआ कि उसके चारों ओर सारे सिपाही ठण्ड से अकड़े पड़े है। उनके शरीर पर कपड़े नही थे। उन्होंने राजकुमार को ठण्ड से बचाने के लिए अपने कपड़ों से ढक दिया था। अपने जीवन को देकर उन्होंने प्यारे राजकुमार को बचाया।

वालटेयर उन्ही आदमियों को महान समझता था जिन्होंने मानव-जाति का कुछ कल्याण किया हो, जिनके द्वारा किसी दुखिया का दुःख कम हुआ हो, जिन्होंने अपने बाहुबल से अनाथ और अबलाओं के उत्थान में मदद दी हो, जिन्होंने नवीन बातों को ढूंढकर रोगग्रस्त मानव-जाति की सहायता की हो, जिन्होंने सबको अपना भाई समझकर उनके आराम और सुख का प्रबन्ध किया हो, जिनका हृदय-आपत्तिग्रस्त को देखकर उसकी मदद को बढ जाता हो, जिन्होंने किसी राष्ट्र के उद्धार के लिए अपना बलिदान कर दिया हो। वास्तव मे मनुष्य अपने कृत्यों से ही जाचा जाता है।

क्या तुम उस मोटो सूरतवाले आदमी को सफल कहते हो ? क्या उसकी सूरत उसके धन-संचय की विधि को घोषित नहीं कर

रही है ? क्या तुम उस बडी तोंदवाले को सफल कहते हो ? क्या गरीबों को धोखा देकर धन पैदा करनेवाली उसकी विधि से तुम परिचित नहीं हो ? क्या तुम उसके चेहरे पर अनाथ बालकों और विधवाओं के दुःख का इतिहास नही पढ सकते ? क्या तुम उसे स्वय-निर्मित मनुष्य कह सकते हो, जो दूसरों को मिटाकर बना है, जो दूसरे के घर को गिराकर अपना घर बनाता है ? क्या दूसरों को गरीब कर देनेवाला आदमी वास्तव मे धनवान है ? क्या वह कभी सुखी रह सकता है, जिसकी नस-नस मे लोभ भरा हुआ है ? संसार जिन्हे सफल कहता है उनमे से बहुत ही कम मनुष्यों के चेहरे सुन्दर, शान्त, मधुरतापूर्ण दीखते है। प्रकृति उनके चेहरे के ऊपर उनके हृदय पर शासन करनेवाली भावनाओं की छाप लगा देती है। हृदय की दुर्गन्ध चेहरे से निकल भागती है।

जीवन मे असफल हो जानेवाला व्यक्ति सम्मान पाने योग्य नही है, खाने-पीने और पैसा इकट्ठा करनेवाला व्यक्ति सचमुच सफल कभी नहीं कहा जा सकता। ससार को उसके रहने से क्या लाभ हुआ, जो उसने कभी दुखिया के आँसू नहीं पोंछे, कभी निराश दिल को उत्साहित नहीं किया ? उसका हृदय पत्थर-सा है और उसका देवता सुवर्ण है।

ससार को ऐसे व्यक्तियों की बडी जरूरत है जो धन के लिए अपनी राय बेचते न हों और जिनका रोम-रोम ईमानदार है, जिनकी अन्तरात्मा दिशासूचक यंत्र की सुई के समान एक शुभ तारे की ओर देखती है,जो स्वर्ग से गिर जाने पर भी अपने अधिकार से नही हटते,

जो सत्य को प्रकट करने मे राक्षस का सामना करने मे भी नहीं डरते, जो कार्यों को देखकर हिचकते नही, जो अपने नाम की दुन्दुभी न बजाते हुए साहस-पूर्वक काम करते है, जो अपने काम को समझते है, उसमे दत्तचित्त रहना जानते है, जो कभी हृदय की भावनाओं को नहीं छिपाते और सच्ची अवस्था को निःसकोच प्रकट करने में नहीं डरते।

सर फिलिप सिडनी को बहुत बुरी चोट लग गई थी। रक्तस्राव के कारण प्यास बडी तेजी से सता रही थी। पानी उनके पास लाया गया। उसी समय एक घायल सिपाही को आदमी डोली पर लेजा रहे थे। उसकी दृष्टि पानी से भरी बोतल पर पडी। सिडनी ने उसकी आखों मे पानी की प्यास देखी। पानी की बोतल उसे देते हुए उन्होंने कहा—"मेरी अपेक्षा तुझे पानी की जरूरत ज़्यादा है।" और पानी उसे दे दिया। सिडनी मर गये, पर उनके इस कार्य ने उन्हे अमर बना दिया। समय, शक्ति और अपने जीवन को जो दूसरों के लिए—चाहे वह देश हो, जाति हो अथवा मनुष्य समाज हो, अर्पण कर देता है वह निश्चय ही महान् है।

हरएक देश मे ऐसे पुरुष-स्त्री रहते है जो मुख से वचन निकलने के पहले ही लोगों को जीत लेते है। अपनी योग्यता से अधिक उनका प्रभाव होता है। हरएक कौम के लिए चरित्र पर विश्वास करना स्वाभाविक है; क्योंकि चरित्र में ही शक्ति है। संगमर्मर के फर्श पर छुरे से घायल सीजर रोम के लोगों पर पहले की अपेक्षा अधिक प्रभाव जमा रहा था। प्रत्येक हृदय उसके लिए तडप उठा था और लोग उसके लिए आसू बहाते थे।

जनरल शेरीडन के बारे मे कहा जाता है कि यदि वह सिद्धान्त का पालन करनेवाला व्यक्ति होता तो उसने सारे ससार पर शासन किया होता। कितने कम नवयुवक जानते है कि उनकी सफलता उनके ज्ञान की अपेक्षा उनके चरित्र—उनके आचरण—पर अधिक निर्भर है। चरित्र के कारण ही लिंकन और वाशिंगटन संयुक्तराष्ट्र के प्रेसीडेन्ट चुने गये थे।

महान् आदमियों के चरित्र मे एक विशेषता होती है। वे वज्र के समान दृढ रहते हैं। चारों ओर ववंडर उठते हैं, मूसलाधार वर्षा होती है, पत्थरों के प्रहार होते है, पर उनका एक कण भी विचलित नहीं होता।

टर्की ने जब कोसूथ को मुसलमान-धर्म ग्रहण करने की शर्तपर आश्रय देने की बात कही, तब उस वीर ने कहा—"मृत्यु और शर्म, इन दो के बीच मैं कभी नहीं पडा। एक दिन मैं विशाल कौम का स्वामी था, आज अपने पुत्रों के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। ईश्वर के उद्देश्य की पूर्त्ति होने दो, मैं मरने को तैयार हूँ। मेरे ये हाथ खाली हैं, परन्तु इनपर कोई कालिमा नहीं लगी है।"

लिंकन कभी भी झूठे मुकदमे नहीं लेता था। एक दिन दो सौ डालर एक रमणी ने अपने मुकदमे की फीस के रूप मे दिये। मुकदमा देखने के बाद लिंकन ने कहा—"तुम्हारा मुकदमा टिक नहीं सकता. यह रुपया ले जाओ।

रमणी ने कहा—"यह मुकदमा देखने की आपकी फीस है।"

लिंकनः—"नही, यह ठीक नही। मैं अपने कर्त्तव्य-पालन की फीस नहीं ले सकता।"

मनुष्य के जीवन मे उसके धन्धे से—धन कमाने से—अच्छी भी कोई चीज होनी चाहिए। वह चीज प्रतिभा से अधिक वडी और कीर्ति से अधिक टिकनेवाली हो।

यदि संसार की कोई शक्ति है जो अपने प्रभाव का असर फैलाये विना नहीं रह सकती,तो वह है चरित्र। चाहे मनुष्य मे शिक्षा न हो, चाहे उसमे वहुत ही थोडी योग्यता हो, चाहे वह धनहीन हो, चाहे समाज मे उसका कोई स्थान न हो, फिर भी यदि उसमे सच्चा महान् चरित्र है तो उसका प्रभाव पड़ेगा और उसे सम्मान प्राप्त होगा।

एक सच्ची घटना एक विश्व मे फैले हुए तार को हिलाती है, सारी नैतिक विद्वत्ता को छूती है, ससार के कोने-कोने मे पहुँचती है। उसकी गति ईश्वर के हृदय को भी गतिवान कर देती है।

चौदहवे लुई ने कालवर्ट से कहा—"हम इतने वड़े धनशाली और जनशाली राष्ट्र का शासन करते है, परन्तु एक छोटे-से हालैण्ड देश को नहीं जीत सके।"

मंत्री ने नम्रता से उत्तर दिया—"महाराज। किसी देश की महानता उस देश की लम्वाई-चौडाई पर निर्भर नहीं करती वल्कि वहा के मनुष्यों के चरित्र पर निर्भर करती है।"

महापुरुषों का आचरण राष्ट्र के लिए एक विरासत है। इंग्लैण्ड के एक अंग्रेज चमार ने, जिसकी चमडा कमाने की ख्याति वहुत हो गई थी, कहा कि अगर उसने कारलाइल के ग्रन्थों का अध्ययन नहीं किया होता तो वह यह काम इतना अच्छा नहीं कर सकता था। फ्रेंकलिन के

कारण लन्दन की सव दूकानों को अपने व्यवहार का वदल देना पड़ा। अरस्तू और टीटियन एक-दूसरे को स्फूर्ति दान करते थे।

एक विद्वान का कथन है कि "यदि तुम मुझे बतलाओ कि तुम किसकी सराहना करते हो, तो मैं बतला सकता हूं कि तुम कैसे हो ?" एक पुस्तक अथवा कोई कलापूर्ण वस्तु उसके निर्माण करनेवाले के विचारों मे हमे डुवो दिया करती है। क्या माइकेल एंजिलो मर गया ? प्राचीन रोम के खंडहरों को देखकर हजारों दर्शक दातोतले अगुली दवाकर आश्चर्य मे पड़ जाते हैं। क्या वाशिंगटन और अब्राहम लिंकन नही रहे ? क्या इससे भी अधिक अच्छी तरह वे जीवन मे रहे हैं ? कौन देश उनके चरित्रों को अपने घर मे आदर्श मान कर नहीं पूजता ?

यदि तुम कल्पना कर सकते हो तो विना मूसा के मिस्र, डेनियल रहित वेवीलोन, डेमास्थनीज, फीडीयास, सुकरात या प्लेटो हीन एथेन्स की कल्पना करो। ईसा के दो सो वर्ष पूर्व कारथेज क्या था ? विना सीजर, सिसरो और मारकस आरेलिअस के रोम क्या था ? ह्यूगो, हाईसिन्थ और नेपोलियन के विना पेरिस क्या है ? वर्क, ग्लैडस्टन, पिट, मिल्टन और शेक्सपियर के विना इंग्लैण्ड क्या है ?

इटली के पतन के काल की शताब्दियों मे भी लोगों के मुंह से महाकवि दान्ते के शब्द निकलते थे। सिसरो और ग्राची के वचन गुलामों के दिमागों मे भी ज्योति उत्पन्न करते हैं। वायरन कहा करता था कि ये इटलीवाले ऐसे समय मे इतनी अधिकता से दान्ते की वाते करते हैं, दान्ते के विषय मे लिखते हैं, और उसीका विचार करते हैं।

यह हास्यास्पद तो है, लेकिन दान्ते इन लोगों की इतनी सराहना का पात्र भी है । आज भी पतित ग्रीसवाले अपनी प्राचीन सार्वभौमिक प्रतिभा को भूलते नहीं है । हमारे दिमाग पर स्वर्गवासी और पृथिवी-वासी दोनों ही प्रकार के मनुष्यों का असर पडता है । इन्हींके प्रभाव से हमारा मन तैयार होता है । हमारे धर्म को महान् बनाने मे हमारे धर्म पर बलिदान होनेवालों का प्रभाव पडता है, हमारे कार्य ऐसे होते है जो उसी पूर्वकालिक परिस्थितिवालों के करने योग्य सिद्ध होते ।

हम तो कीडों के समान है । जिस रंग के पत्तों और पौधों पर वे निवास करते है उसी तरह का उनका भी रंग हो जाता है । उसी प्रकार जिन बातों से हमारे मन की भूख मिटाई जाती है उसी तरह के हम भी हो जाते है । हमारे जीवन का प्रत्येक कृत्य लोहे की कलम से हमारे ऊपर लिखा करता है । नष्ट किया हुआ अवसर, खोई हुई शक्तियाँ, बिताया हुआ समय, हमेशा ही हमे उलहना देने के लिए खड़े रहते है । उन्हे हम किसी तरह दबा नही सकते । जो जैसा बोता है वह वैसा ही पाता है । बबूल से आम नही फलेंगे ।

भले आदमियों की संगति आदमी को भला बना देती है और दुष्टों की संगति बुरा बनाये बिना नही रहती । हम भले ही बुरे कृत्यों को गुप्त रूप से करें, अन्धकार मे दुष्टों से सम्बन्ध रखें, फिर भी समय आने पर ये सब बातें हमारे आचरण और चेहरे पर दिखाई देती है । हमारे हृदय की मूर्त्तिया हमारे नेत्रों से झाकती है, हमारे चालचलन मे दीखती है । चेहरों पर कुटिल हृदयों की छाया कुटिल ही पडती है और कोई शक्ति उसे दूर नही कर सकती । दुराचार-पूर्ण

जीवन के चेहरे के सामने कैसे चित्र आते है ? वहाँ तुम्हे घृणित दृश्य, विकारों की माग और विजय के लिए होनेवाला युद्ध, अनिश्चय और कष्टकारी पराजय दीखेगी। इसके विपरीत जिसने विकारों पर विजय पाकर संयम-पूर्ण जीवन विताया है, जो अपनी शक्तियों को सुसगठित रखकर आत्मसुधार मे लगा रहा है, उसके चेहरे से कैसी सुन्दर ज्योति निकलती है ?

मेरी दृष्टि मे वही सबसे बड़ा मनुष्य है, वही व्यक्ति महान है, जो मुझे मेरे आस-पास की बातों और प्रभावों के बन्धनों से मुक्त कर देता है, जो मेरी जिह्वा को स्वतंत्र कर देता है और मेरे लिए सम्भावनाओं के दरवाजों को खोल देता है।

क्रोध से क्रोध ही उत्पन्न होता है और ईर्ष्या ईर्ष्या ही उत्पन्न करती है। विकार छूत की बीमारी से किसी हालत में कम नहीं है।

इमरसन का कथन है कि "चरित्र हमेशा प्रगट हो जाता है। चोरी से कोई धनवान नहीं होता, दान से कभी कोई कंगाल नहीं होता। थोडोसी झूठ शीघ्र प्रगट होजाती है। यदि तुम सत्य बोलोगे तो सारी प्रकृति और सब जीव तुम्हारी सहायता अकस्मात आकर करेंगे।" चरित्र ही गरीब आदमी का मूलधन है।

किसी युग का इतिहास उस युग के राजाओं का इतिहास नहीं कहला सकता। उस युग के सेनापतियों की विजयें तोप-बन्दूकों का क़िस्सा नहीं हो सकता। सैकडों युद्धों से मानवजाति का कुछ लाभ नहीं होता। सच्चा इतिहास महान्पुरुषों के चरित्रों से पूर्ण रहता है। जिन्होंने भविष्य मे आनेवाली सन्तानों के लिए अच्छी-अच्छी चीजों

का निर्माण किया। जिन्होंने नहरें तैयार कीं, समुद्र से समुद्र को जोड़ दिया, सुन्दर चित्र तैयार किये, अच्छे-अच्छे ग्रन्थों की रचना की, सत्य को खोज निकाला, इत्यादि बातों का वर्णन राजाओं की सभा और रंगमहल के वर्णनों से हजार-गुना अच्छा है। वालटेयर महान आदमियों को पहला और वीरों को दूसरा स्थान देता था। उसकी परिभाषा मे महान आदमी संसार के लाभार्थ कार्य करते है और प्रान्तो को विजय करनेवाले वीर कहलाते है।

मिश्र के सतयुग के एक शासक ने कहा है—"मैंने किसी बालक को कष्ट नहीं दिया, किसी विधवा को नहीं सताया, किसी किसान के साथ बुरा बर्ताव नहीं किया। मेरे समय मे भिखारी नहीं थे। कोई भूखों नहीं मरता था। जब अकाल पडता था तब मैं अपने देश की सीमा तक की सब भूमि को जुतवा-बुवा डालता था और उसके निवासियों के भोजन का प्रबन्ध करता था। मेरे राज्य मे विधवा को कभी मालूम नहीं होने पाता था कि वह अनाथ हो गई है।" क्या कोई शासक इस बीसवीं शताब्दी के सभ्यता-मय समय मे इसके एक अंश को भी करने का दावा कर सकता है?

दुनिया मे ऐसे आदमी है जो प्रामाणिकता को अपना एकमात्र साथी बनाते है। अपने जीवन मे उसे वे ओतप्रोत कर डालते है। उनकी वाणी से, उनके कार्य से, उनके रहन-सहन से प्रामाणिकता टपकती है। उनके हाथ प्रामाणिकता से सच्चे होते है। वे उसे प्यार करते है। उससे वे सुन्दर, कुलीन, महान् और बहादुर बन जाते है।

---

[ १२ ]

## यथार्थता

"यथार्थता और ईमानदारी दोनो सगी बहने है ।"

—इमरसन

"अधूरे काम मैं पसन्द नही करता । यदि वे ठीक है तो पूरे मन से करो, यदि वे अनुचित है तो उन्हे छोड दो ।'

—गिलपिन

"यदि कोई व्यक्ति अपने पडोसी की अपेक्षा अधिक अच्छी किताब लिख सकता है, अच्छा भाषण दे सकता है अथवा अधिक अच्छी चीज बना सकता है, तो यदि वह जगल मे अपना मकान बनावेगा तो भी ससार उसके द्वार तक रास्ता बना लेगा ।"

—इमरसन

"महोदय ! यह घडी मेरी बनाई हुई है । आप इसे चाहे जहाँ ले जाइए और सात वर्ष के बाद आप लौटकर आइए, यदि पाच मिनट का भी अन्तर पावे तो मैं आपके दाम वापस कर

दूंगा।" कहते हुए मि० ग्राहम ने अपने ग्राहक को घड़ी दी। सात वर्ष के बाद वह भारतवर्ष से लौटे और कहा—"लीजिए, मैं आपकी घडी लाया हूँ।"

ग्राहम—"हाँ, मुझे अपनी शर्त याद है। कहिए क्या हाल है?"

महा०—"मेरे पास यह सात वर्ष रही और मैंने पाँच मिनट से अधिक अन्तर पाया।"

ग्राहम—"अच्छा, तो मैं आपके दाम लौटा देता हूँ।"

महा०—"लेकिन मैं घडी तो आपको दूंगा नहीं, भले ही आप इसकी दसगुनी कीमत दे।"

"और मैं अपने वचन को तोड नहीं सकता।" यह कहकर ग्राहम ने घडी लेली, दाम वापस दे दिये और घड़ियों को दुरुस्त करने मे लग गया।

ग्राहम ने टामपियन से यह काम सीखा था। टामपियन बडा ही होशियार घडीसाज था। उसका नाम घडी की उत्तमता का प्रमाण-पत्र था। एक समय एक आदमी ने एक घडी उसे सुधारने के लिए दी। वह नकली थी और उसपर टामपियन का नाम लिखा था। देखते ही उसने हथोड़े से उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले और नई घडी देते हुए कहा—"लीजिए महाशय यह मेरी बनाई हुई घडी।"

ग्राहम ने कई चीजों का आविष्कार किया। ग्रीनविच की वेध-शाला मे उसकी बनाई घडी लगी है, जो दो सौ वर्षों से काम दे रही है, पन्द्रह महीनों के बाद एक बार उसे सुधारना पडता है। टामपियन और ग्राहम की मृत्यु पर वे वेस्टमिनिस्टर के गिरजे मे दफनाये गये।

समुद्र में नौका छोड देने पर नाविक अपने मार्ग को विना किसी यंत्र के निर्दिष्ट नहीं कर सकता। दूर-दूर की यात्रा करने की समस्या सामने आते ही लोगों को एक ऐसे यंत्र की जरूरत पडी जो कम-से-कम उन्हे इतना बता सके कि वे पेरिस, ग्रीनविच अथवा वाशिगटन के किस ओर है। स्पेन की सरकार ने सोलहवीं शताब्दी मे देशान्तर बतलानेवाले यंत्र बनानेवाले को एक हजार क्राउन* देने की घोपणा की। दो सौ वर्ष बाद इंग्लैण्ड की सरकार ने भी विज्ञापन दिया कि जो व्यक्ति एक ऐसे यंत्र को बनावेगा जिसके द्वारा घर से छः महीने पहले निकला हुआ जहाज अपने देशान्तर को ६० मील के घेरे मे बतला सके तो उसे ५ हजार पौंड इनाम दिया जावेगा, यदि ४० मील के घेरे मे बतला सके तो ७५०० पौंड, और ३० मील के घेरे मे बतलानेवाले को १० हजार तथा बिलकुल ठीक बतलानेवाले को २० हजार दिया जावेगा। संसार भर के घडी बनानेवालों ने इन इनामों को पाने के लिए बड़े प्रयत्न किये। सन् १७६१ तक किसीको कुछ न मिला। उसी वर्प जान हेरीसन ने अपने क्रोनामीटर को परीक्षा के लिए उपस्थित किया। १४७ दिन की यात्रा मे इस यंत्र मे केवल दो मिनट का अन्तर पडा, १५६ दिन की यात्रा मे १५ सेकन्ड का अन्तर हुआ, और उसे २० हजार पौंड का पुरस्कार प्राप्त हो गया। इस व्यक्ति ने ४० वर्प तक अपने यंत्र को बनाने का अभ्यास किया था और इसका हाथ तथा इन्द्रियाँ भी इसके यंत्रों के समान ही सूक्ष्म ज्ञान-सूचक हो गई थीं।

*एक क्राउन ५ शिलिंग अथवा ३ रुपया १२ आने के बराबर होता है।

एक वढ़ई ने एक लुहार से कहा—"मेरे लिए एक अच्छा हथौडा वनादो । हम लोग छ: आदमी वाहर से काम करने आये हैं, मेरा हथौडा भूल से घर रह गया है ।"

वढ़ई—"हाँ, पर मुझे चीज अच्छी चाहिए ।"

कुछ दिन मे लुहार ने अच्छा हथौडा बनाकर उसे दिया। लोगों को इतना पसन्द आया कि दूसरे दिन और लोग भी हथौडा वनवाने के लिए आये । एक ठेकेदार ने भी कुछ हथौड़ों का हुक्म दिया—परन्तु साथ ही यह भी कह दिया कि जरा पहले वनाये हुए हथौडों से अच्छे बनाना ।

यह बात सुनकर लुहार ने कहा—"मैं उससे अच्छे नहीं वना सकता हूँ। जब मैं कोई चीज बनाता हू तो उसमे कोई कमी नहीं रखता, चाहे कोई भी आकर बनवावे ।" और शीघ्र ही लोग उसके यहाँ से हथौडा वनवाने लगे और उसका नाम चारों ओर फैल गया। वह चाहता तो कुछ दिनों मे धनवान् हो जाता। परन्तु वह हमेशा अपनी वनाई हुई चीजों की उन्नति मे लगा रहता था। उसके नाम की चीज बिना किसी आनाकानी के विक जाती थी ।

यथार्थता एक शक्ति है और वह संसार मे मनुष्य का सर्वोत्तम विज्ञापन है ।

एक वार एक वड़े भारी व्यापारी से एक ग्राहक ने कहा—"महाशय। आपके माल की कीमत दूसरी जगह की अपेक्षा अधिक रहती है ।"

उत्तर मिला—"निस्सन्देह, हमारा उद्देश तो अच्छा माल देने का

रहता है। हम नहीं चाहते कि चाहे-जैसा माल तैयार करके जिस-तिस भाव पर लोगों के गले मढ दे। हमारी हार्दिक इच्छा रहती है कि हमारा माल सर्वोत्तम रहे और किसी ग्राहक को यह कहने का मौका न आवे कि अमुक व्यापारी का माल खराब था।"

एकबार एक चित्रकार ने ओलीवर क्रामवेल का चित्र बनाया। चित्रकार ने उसे प्रसन्न करने के लिए चहरे पर के एक मस्से को नहीं बनाया। यह देखकर उस वीर ने कहा—"जैसा मैं हूं वैसा ही बनाओ।"

हाउस आफ कामन्स के एक सदस्य ने, वादविवाद करते समय, अपने प्रतिद्वन्दी से रुष्ट होकर कहा—"मुझे याद है, एक समय तुम मेरे पिता के जूतों पर पालिश किया करते थे।" स्वावलम्बी वीर ने बड़े ही नम्रभाव से हजारों आदमियों के सामने कहा—"आपका कहना ठीक है, परन्तु बताइए, क्या मैं अच्छी तरह से पालिश नहीं करता था?"

एक ने कहा—"अच्छी और बुरी नील को पहचानना कठिन नहीं है। एक टुकड़ा लो और उसे पानी मे डाल दो। यदि नील अच्छी होगी तो या तो तैरेगी या डूब जावेगी। मुझे यह ठीक से नहीं मालूम है। लेकिन कोई बात नहीं, तुम प्रयोग करके तो देखो।" वाह कैसी उमदा सलाह है।

विलिंगटन बहरेपन के कारण बड़े दुःखी थे। एक होशियार डाक्टर से सलाह ली। उसने एक बडी तेज दवा कानों मे डाल दी, जिससे विलिंगटन का जीवन भी खतरे मे पड गया। डाक्टर बहुत

डरा और उसने अपनी भूल का बडा पश्चात्ताप किया। साथ भी यह कहा—"यह भूल मेरे जीवन को नष्ट कर देगी।"

विलिगटन ने कहा—"मैं कभी भी इस सम्बन्ध मे कुछ नहीं करूगा।"

डा०—"फिर आप मुझे अपने यहाँ रोज-रोज आने दीजिए, जिससे लोगों का विश्वास मुझपर से न उठे।"

इस वात को विलिगटन ने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा—"नहीं, यह झूठ वोलना कहलावेगा।"

एक लडके ने कहा—"पिताजी, मैंने वहुतसे कुत्ते देखे। ५०० के लगभग होंगे—विलकुल सच वात है—कल रातको—अपनी सडक पर।"

पिताने कहा—"इतने कभी नहीं हो सकते।"

लडका—"अच्छा, सौ तो जरूर होंगे।"

पिता—"झूठ है, हमारे गाव मे सौ कुत्ते तो है ही नहो।"

लडका—"दस से कम तो नहीं हो सकते।"

पिता—"मैं तुम्हारी दस की वात पर भी विश्वास नहो कर सकता, क्योंकि जितनी दृढता से तुम ५०० की वात कह रहे थे उसी दृढता से दस की वात कह रहे हो।"

लडका—"पिताजी। मैंने अपने कुत्ते तथा एक दूसरे कुत्ते को तो अवश्य ही देखा था।"

इस तरह से अतिशयोक्तिपूर्ण वातें कहने के लिए लडके का हम तिरस्कार तो करते है, परन्तु क्या हम स्वयं ही नहीं कहा

करते—"ऐसा पानी कभी नहीं बरसा था", "ससार मे ऐसी बिल्ली है ही नहीं", "सबसे अधिक भीषण गर्मी आज ही पड़ी है"? किसी भी चीज को सर्वोत्तम या बहुत बढाकर कहदेना हमारे लिए मामूली बात हो रहा है। इस तरह हमारी नस-नस मे झूठ भिदी पडी है। इसे दूर करना ही सुखी और शान्त-जीवन व्यतीत करने की प्रथम सीढी है।

मानव जाति सीधे आडम्बर-शून्य सत्य को बड़े आदर की दृष्टि से देखती है। उससे चरित्र की दृढ़ता प्रकट होती है। दूसरे को अरुचिकर प्रतीत होने के डर से अच्छी बाते कहना, सत्य कहने की अपेक्षा आवश्यकतानुसार बात को घुमा-फिरा कर कहना, दो अर्थों को प्रकट करनेवाली शब्द-रचना करना, अतिशयोक्ति की शरण लेना, दिखाने के लिए दूसरे के विचारों से सहमत होने का भाव दर्शाना, आँखों से, मुस्कराहट से तथा हावभाव से हृदय की भावनाओ को छिपाना, किसी बात को न जानने पर भी जानकारी के चिन्हो को प्रकट करने की कोशिश करना—ये सब खोखलेपन और असत्य के भिन्न-भिन्न स्वरूप है और यथार्थता की कमी के सूचक मात्र है।

प्रकृति के कार्यों मे कभी कहीं भी भूल नहीं दीखती और यथार्थता का लोप नही दिखाई देता है। गुलाब उसी तरह से फूलते हैं, कण उसी तरह से बनता है, जिस तरह से वे सृष्टि के प्रारम्भकाल से बनते चले आये है। एक रानी के बाग को सुशोभित करनेवाला गुलाब अपने सौन्दर्य और सुगन्ध मे एकान्त निर्जीव झाडी मे उत्पन्न हुए

गुलाब की अपेक्षा क्या अधिक सुन्दर होता है ? पृथ्वी के गर्भ मे बननेवाले कण उसी आकार के बनते है जिस आकार के वे पृथ्वी-तल पर तैयार होते है। एक बर्फ का छोटासा टुकडा, क्षण भर मे जल के अपार सागर मे विलीन हो जानेवाला सुन्दर टुकडा, कैसी सुन्दरता से तैयार किया जाता है। उसकी निर्मल मनोहरता को देखकर हृदय सोचने लगता है कि क्या यह हीरे-सा टुकडा किसी प्रदर्शिनी की शोभा बढाने के लिए बना है ? नक्षत्र और तारे तूफान की गति से, विद्युत् के वेग से, आकाश मडल मे घूमते है। हजारों मील प्रति सेकन्ड की गति से घूमनेवाले नक्षत्र कितनी बारीकी से जाते होगे, इसका क्या किसीको अनुमान है ? जरा-सी भूल हो जाने से एक तारा दूसरे से टक्कर खा जायगा, सारी सृष्टि मे खलबली मच जायगी और विश्व मे प्रलय का दृश्य रच जायगा, परन्तु प्रकृति की रचना मे कही भूल नही दीखती। ग्रहण समय पर पड़ते है, समय पर ही ऋतुये आती है, दिन और रात ठीक घडी पर ही आते-जाते है। प्रकृति की ये सब घटनायें ईश्वर के कार्यों की यथार्थता को स्पष्ट रूप से बतलाती है।

जिन लोगों के आख और दिमाग बारीकी से देखने के आदी नहीं है, उनसे संसार का कोई विशेष कार्य नही होता। बड़े-बडे दूरबीनों का अविष्कार हो जाने पर भी ज्योतिष की विशेष उन्नति उन्हींके हाथों से हुई है जिनके पास ऐसे यंत्र नहीं थे। उनके पास छोटे-छोटे यत्र थे, परन्तु उन यंत्रों के पीछे बडी तीव्र एवं दक्ष आँखे थी।

एक तीन फुट व्यास के काच को तैय्यार करने मे ६० हजार डालर लग जाता है। उसका तैयार करना इतना कठिन है कि केवल मनुष्य का हाथ ही उसपर अन्तिम पालिश कर सकता है। एक वार से जरा भी अधिक हाथ फेरने से "लेन्स' विगड जाता है। एलवन क्लार्क इस तरह के लेन्स तैयार करने में वड़ा निपुण था। परीक्षा करते समय कुछ काम करनेवाले व्यक्तियों ने जरा उसको एक ओर को घुमा दिया। यह देखकर क्लार्क ने कहा—"ठहरो दूसरी परीक्षा करने के पहले उसे ठंडा हो जाने दो। वह इतना कोमल है कि तुम्हारे हाथों की गर्मी का असर उसपर पड जावेगा।"

इसी तरह की सूक्ष्मता और वारीकी के कारण क्लार्क का नाम आज ससार भर मे फैला हुआ है।

काग्रेस का अधिवेशन समाप्त होने के समय एक महाशय ने वेव्स्टर महोदय से एक प्रश्न पर वोलने के लिए कहा। उन्होंने उत्तर दिया—"मैं इस समय अन्य कार्यों मे ऐसा फंसा हूं कि मुझे इस विषय पर तैयारी करने का समय नहीं है।"

"परन्तु महोदय! आप तो हरएक विषय पर वड़ी ही उत्तमता से वोलते है।"

"हॉ, यही तो कारण है कि मै इस विषय पर नहीं वोल सकता। जबतक उस विषय पर अपना पूर्ण अधिकार नहीं कर लेता तवतक मै नहीं वोलता और इस समय वैसा करने का मुझे अवकाश नहीं है। अतएव मै आपकी वात स्वीकार नहीं कर सकता।"

एक प्रसिद्ध लेखक ने लिखा है—"जो-कुछ ठीक है उसे अपनी

पूरी सावधानी, ताकत और विश्वास के साथ करना चाहिए। हमारे पास ऐसा कई तराजू नहीं है जिसके द्वारा हम अपने कर्त्तव्यों के प्रति की हुई विश्वासपात्रता को तौल सकें अथवा यह ईश्वर की दृष्टि में उनकी क्या पारस्पिरिक विशेपता है कि जो बात हमे मामूली दीखती है वही बडी महत्वपूर्ण हो सकती है और उसपर किसी के जीवन-मरण का प्रश्न निर्भर रह सकता है।"

दांते ने नरक का वर्णन इतनी सजीवता से किया था कि लोग देखकर कहा करते थे—"देखो, यह आदमी नरक मे हो आया है।"

केनन फेरर का कथन है कि जीवन मे एक ही वास्तविक असफलता है, और वह है मनुष्य जिस बात को जैसा भी जानता है उसमे उसका तल्लीन न रहना।

लिओनारडो अपने प्रसिद्ध चित्र 'लास्ट सपर' को तैयार करते समय एक-एक रंग देने के समय मिलन का एकाध चक्कर लगा आया करता था। पोप प्रत्येक पंक्ति को दोबार लिखता था। गिवन ने अपने 'संस्मरणों' को ९ बार लिखा और इतिहास के प्रथम अध्याय को १८ बार लिखा। मान्टेस्क्यू अपनी एक रचना के विपय मे लिखते है कि "तुम उसे कुछ घन्टों मे पढ डालोगे,—परन्तु उसके लिखने मे मुझे इतना समय लगा है कि मेरे बाल पक गये।" उन्होंने उसे अपने दिन के अध्ययन का विपय और रात के स्वप्न की सामग्री बना लिया था, वही उनके उद्देश्य का आदि और अन्त था।

एक होशियार प्राणिशास्त्री ने सोचा कि थोडे समय तक अगासीज के पास अध्ययन करने से मैं अपने ज्ञान को पूर्ण कर लूँगा।

वह प्रोफेसर के पास आया। उन्होंने उसे एक मछली दी और कहा—"अपनी आखों का उपयोग कीजिए।" दो घन्टों के बाद उन्होंने अपने विद्यार्थी की परीक्षा ली और कहा—"तुमने सचमुच मछली को अभीतक नही देखा, फिर से प्रयत्न करना पड़ेगा।"

दूसरी परीक्षा करने पर उन्होंने कहा—"तुम्हारे कार्य से मालूम होता है कि तुम अपनी आँखों का उपयोग नहीं कर सकते।"

इस शब्दों को सुन विद्यार्थी की प्रयत्न करने की लालसा जागृत होगई और वह अपने कार्य मे इतना मग्न हो गया कि फिर जब प्रोफेसर ने कमरे मे प्रवेश किया तो उसे उनकी उपस्थिति का भान भी न हुआ। यह देखकर अध्यापक ने कहा—"ठीक है। बस, अब मैं समझता हूं—कि तुम अपनी आँखों का उपयोग कर सकते हो।"

सन् १८०५ ई० मे नेपोलियन ने ब्रिटिश चैनल के पास के कैम्प तोडकर डेन्यूब की ओर बढने की आज्ञा अपने विशाल दल को दी। उसके दिमाग मे बड़ी-बडी स्कीमे चल रही थी। परन्तु वह आज्ञा देकर ही नहीं रह गया। उसने प्रत्येक कार्य की छोटी-छोटी बाते अपने लेफ्टिनेन्टो पर नही छोड़ीं। जिन बातों को उसके मातहत बिलकुल छोटी और ध्यान देने के अयोग्य समझकर परवाह नहीं करते थे उनका भी उसे हमेशा ध्यान बना रहता था। धावा करने का बिगुल बजने के पहले उसने प्रत्येक सेना के जाने का मार्ग नियुक्त कर दिया, किस सेना को कब किस स्थान पर पहुच जाना चाहिए यह भी तय हो गया। कितने बजे वे अपने ठहरने के स्थान को छोडे और कितने बजे अपने लक्ष्य पर जा डटे, इत्यादि बाते अक्षरश पूर्ण

करने का उसका हुक्म था। इसका परिणाम यह हुआ कि उसने अस्टरलिज की विजय प्राप्त करके, यूरोप के भाग्य पर दस वर्ष के लिए मुहर लगादी।

सर वाल्टर स्काट जब किसी प्राचीन इमारत को देखने जाते थे तो अपनी नोटबुक मे वहाँ पर पाये जानेवाली जंगली घासों के नाम लिख लेते थे, फूलों का वर्णन नोटकर लेते थे और कहा करते थे कि इसी तरह से कोई भी लेखक वनस्पतिशास्त्र का ज्ञाता हो सकता है।

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मेकाले अपने प्रत्येक वाक्य को सर्वोत्तम विधि तक लिखे बिना सन्तुष्ट नहीं होता था।

बारीकी से काम करनेवालों को सभी पसन्द करते है। मालिक हर बात मे अपने नौकर के पीछे कैसे लगा रहा सकता है? यदि उसे दिन भर नौकर को काम के विषय मे बतलाना पड़े तो स्वय ही कर लेने मे उसे सुभीता होगा। ऐसे नौकर को रखना कोई पसन्द नहीं करता, परन्तु जो लोग हाथ मे आये हुए कार्य को करने मे अपनी समस्त शक्तियों को लगा देते है तथा दिमाग भी खर्च करते हैं, सूक्ष्मता से काम लेते है, उन्हे हर जगह काम मिल ही जाता है। एक मामूली चीज को उत्तमता से बनाने मे जो सफलता और ख्याति होती है वह एक बडी चीज को अधूरी बनाने मे कभी प्राप्त नहीं होती।

फील्ड्स का कथन है—"कई स्त्रिया ऐसी है जिनके टाके कच्चे रहते है, जिनके सिये हुए बटन जरा-से झटके मे निकल पडते हैं। लेकिन कई ऐसी भी है जो उन्हीं सुई और धागों का उपयोग करके

बटनों को इतनी उत्तमता से सी देती है कि कपड़े फट जाते है पर बटन नही टूटते।"

जीवन मे असफल होनेवालों की कब्र पर 'असावधानी', 'लापरवाही', 'आलस्य' आदि शब्द लिखे जाते है। असावधानी और अयथार्थता से कितने ही क्लर्क, अध्यापक, डाक्टर आदि अपनी प्रतिष्ठा और अपना स्थान खो बैठते है।

जाना चिकरिन ने जिस दिन से प्यानो बनाना शुरू किया था उसी दिन से वह अपने परिश्रम और सावधानी के लिए प्रसिद्ध हो गया था। बाजा बनाने मे वह कोई भी बात मामूली नहीं समझता था। बारीकी और ज्ञान की तुलना मे समय और परिश्रम को वह कुछ न समझता था। शीघ्र ही उसने पियानो का एक कारखाना खोल दिया। उसने ऐसे बाजे बनाने का इरादा किया जो बहुत थोड़े परिश्रम मे मधुर राग निकाल सकें, किसी आबहवा का उनपर असर न हो सके और उनमे से सदा एकसा सुर निकलता रहे। उसका प्रत्येक बाजा पहले बाजे से एक कदम आगे ही रहता था। जीवन के अन्तकाल तक वह अपने बाजे मे सुधार करता रहा। उसने अपने काम को किसी दूसरे के हाथ मे नहीं सौपा। किसी बात मे अनियमितता को स्थान नही था। सारे प्रतिद्वन्द्वियों को उसने हरा दिया था। चारित्र्य, व्यापारिक और नैतिक, दोनों ही दृष्टि से मूल्य रखता है।

जोसफ टरनर के पिता की इच्छा थी कि वह नाई का काम करे, परन्तु चित्रकला की ओर उसकी प्रवृत्ति बहुत तीव्र थी इसलिए आनाकानी करते हुए उसे यह कार्य करने को अनुमति मिल गई। वह

शीघ्र ही इस कार्य मे कुशल हो गया। उसके पास साधन नही थे फिर भी वह पंचागों और 'गाइड' की पुस्तकों के लिए चित्र बनाया करता था। यद्यपि उसे बहुत कम काम मिलता था, तिसपर भी, उसके काम मे कोई असावधानी दृष्टिगोचर न होती थी। उसके काम का मूल्य मिलनेवाले महनताने से कई गुना अधिक रहता था। धीरे-धीरे कीमत बढ़ने लगी और उसे ऊचे दरजे का काम मिलने लगा। अब उसके परिश्रम का भी ठिकाना नही रहा। वह बडी बारीकी से संसार के बाजार के लिए अपनी कला को तैयार करने लगा। उसके चित्रों से सजीवता फूट-फूटकर निकलती थी। उसके प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बडे-बड़े चित्रकारों को भी शर्मिन्दा करते। जो महत्व साहित्य मे शेक्सपियर को प्राप्त है वही टरनर को इस क्षेत्र मे प्राप्त है।

किसी भी काम के करने मे यथार्थता और सावधानी की आदत डाल लेनी चाहिए। यथार्थता का अर्थ चारित्र्य और चारित्र्य का अर्थ शक्ति होता है।

———

## [ १४ ]

## अध्यवसाय

"प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असम्भव रहता है।"

—कारलाइल

"हमेशा आगे वढते रहने से और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देनेवाली असम्भवता नष्ट हो जाती है।"

—जैरमी कोलियर

"पानी-जैसी चचलता से मनुष्य ऊँचा नही पहुँचता।"

—वर्क

शेरीडन के पार्लमेन्ट मे भाषण दे चुकने के वाद एक संवाददाता ने कटाक्ष करते हुए उनसे कहा—"मुझे कहते हुए अफसोस होता है कि यह कार्य आपकी शक्तियों के वाहर है।" शेरीडन थोडी देरतक सोचते रहे। फिर मुह ऊचा करके उन्होंने कहा -"महाशय। यह काम

मेरी शक्ति के भीतर है और इसकी सचाई आप शीघ्र ही देखेंगे।"
इन्ही शेरीडन के वारनहेस्टिग्ज के विरुद्ध भाषणों को सुनकर प्रसिद्ध वक्ता फाक्स ने कहा था कि ऐसा भाषण हाउस आफ कामन्स मे अभी तक कभी नहीं हुआ।

'कार्लाइल ने ठीक ही कहा है कि पहले अपने काम को जान लो, फिर उसे करो, और उसके करने मे अपनी सारी ताकत लगादो।'

किसी भी कार्य की सफलता के लिए यह बहुत जरूरी है कि जिस काम को हाथ मे लो उसीमे सारी ताकत लगादो। केनाल्ड कहते है कि कोई व्यक्ति यदि किसी भी कला मे श्रेष्ठ होना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह अपने मन की सब शक्तियों को उसीमे लगा दे सोकर उठने से रात को बिछौने पर सो जाने तक केवल उसीका विचार करे। यही बात टरनर महोदय ने अपनी सफलता की कुजी को प्रकट करते समय कही थी, कि मेरे पास कठिन परिश्रम के अलावा दूसरा कोई तरीका नहीं है।

आदमी अक्सर 'यह करें या वह करें ?' की उलझन मे पड़कर अपनी सफलता को गवा बैठता है। एक बार वह तय कर लेता है कि इस कार्य को करूंगा, लेकिन दूसरी बार दोस्त की सलाह से इरादा बदल देता है। एक विचार से वह दूसरे विचार की ओर बढ़ता है, एक तरीके को छोड़कर दूसरे तरीके को पकड़ता है। हरेक हवा का झोंका उसे अपनी ओर खींच लेता है। ऐसे व्यक्ति से संसार का कोई बड़ा कार्य नहीं हो सकता। किसी एक पथ मे उन्नति करने की

अपेक्षा वह अपने स्थान से एक इंच आगे नही वढ सकता। इतना ही नहीं वल्कि वह सव वातों मे पिछडता ही जावेगा।

इसके विपरीत, जो आदमी पहले दीर्घदृष्टि से विचार एवं सकल्प करके किसी काम के करने मे लगता है और अध्यवसाय से छोटी-वडी कठिनाइयों को पार कर जाता है और हिम्मत नहीं हारता वह हरेक लाइन म—हरेक काम मे—ऊची-से-ऊँची जगह प्राप्त कर लेता है।

सतत-परिश्रम के द्वारा ही मिश्र के मैदानों में पिरामिड तैयार किये गये, सतत-परिश्रम के द्वारा ही जेरुसलम के विशाल और भव्य मंदिर वने, चीन-साम्राज्य की सीमा का रक्षण करनेवाली दीवाल खडी की गई, वादलों से ढंके हुए आल्प्स पर्वत की चढ़ाई हुई. विशाल और तूफानवाले अटलाण्टिक महासागर का मार्ग खुला, जंगल और पहाडों को नाश करके नई दुनिया मे नगर राज्य और राष्ट्रों का निर्माण हुआ। उद्योग ने सगममंर की चट्टानों को सुन्दर रूपो मे परिवर्त्तित किया है और धातु पर अदृश्य और छायामयी चीजों को वनाया है। उद्योग के द्वारा ही हजारों मशीने चलती हैं। मोटर, हवाई जहाज, रेल आदि इधर-उधर चक्कर काटने लगे हैं। दूरी का प्रश्न ही मिटा जा रहा है। उसीने विशाल चट्टानों मे छेदकर वोगदे तैयार किये हैं। सागर की छाती को जहाजों से पाट दिया है और अज्ञात भूमि को ढूंढ निकाला है। उसने प्रकृति को विज्ञान के अगणित रूपों मे परिवर्तित कर दिया, उसे नियमों का पाठ पढाया, उसके भविष्य की हलचल का ज्ञान प्राप्त किया, जिसपर कोई न

जासका ऐसे स्थान का परिमाण निकाला, अनन्त दुनिया के समूह का गिना और उनके अन्तर, आकार एवं गति का पता लगाया।

कौडी कौडी करके आनेवाला पैसा जल्दी से आनेवाले रुपये की अपेक्षा अधिक निश्चित होता है। धीरे-धीरे चलनेवाला घोडा रेस के घोडे से अधिक लम्बी और निश्चित सफ़र कर सकता है। इसी प्रकार प्रतिभा तीव्र गति से आगे बढती है, विचलित हो जाती और अत मे थक जाती है। जीवन की घटनाओं और विजयों का भी यही हाल है। परिश्रमी मनुष्य की अन्तिम चोट विजय की सीमा को पहुचाती है।

एक दिन एक पत्र-प्रतिनिधि ने प्रसिद्ध विज्ञानशास्त्री थॉमस एडिसन से पूछा—"कहिए महाशय, क्या आपके सारे आविष्कार उत्र प्रेरणाओं के परिणाम है? रात को जब आप जागते है तब क्या उन्हीका विचार करते रहते है?"

"नहीं भाई। केवल ग्रामोफोन को छोडकर करने लायक और कोई भी काम मैने आचनक नही किया। मेरे सब आविष्कार लगातार प्रयत्नों के फलमात्र है। पहले मे देख लेता हूँ कि कौन-सी बात लाभ-प्रद होगी और फिर जान का लोभ छोड़कर उसके पीछे पड जाता हूँ। जिस बात को मै शुरू करता हूँ वह मेरे दिमाग मे रहती है और जबतक वह पूरी नहीं हो जाती, तबतक मुझे चैन नहीं पडती।"

इसी तरह जो व्यक्ति अपनी सारी शक्तियों को एक कार्य मे लगा देता है, उसे सफलता अवश्य मिलती है। इसके अतिरिक्त यदि उसमे योग्यता और बुद्धि है तो उसे विजय मिले बिना नहीं रहेगी।

बुलवर ने किस प्रकार दैव से युद्ध करके अपने भाग्य को बदल दिया ? उसका पहला उपन्यास असफल रहा। उसकी प्राथमिक कवितायें अच्छी सिद्ध न हुई। उसके यौवन-काल के भाषणों ने विरोधियों को उसकी हसी उडाने का मौका दिया। परन्तु उसने अपनी असफलता, हार और हंसी-मजाक के बादलों को भी अपनी चमक दिखाई।

प्रसिद्ध इतिहासकार गिवन ने अपने 'रोम सामाज्य का पतन' नामक ग्रन्थ की रचना मे २० वर्ष खर्च किये थे। वेब्स्टर ने अंग्रेजी का वडा कोष तैयार करने मे २६ वर्ष लगाये। शब्दों के सग्रह और परिभाषाओं के संग्रह मे उसने कितनी सराहनीय धीरता का परिचय दिया। अमेरिका का इतिहास लिखने मे जार्ज वेक्राफ्ट ने २६ वर्ष लगाये थे। प्राचीन राष्ट्रों की वंश-परम्परा का हाल पन्द्रह वार लिखा था। टिटन ने अपनी रचना (Last supper) पाचवे चार्ल्स के पास भेजते हुए लिखा था कि इसे लिखने मे सात वर्ष लगे है। जार्ज स्टीफनसन ने १५ वर्ष रेलगाडी का सुधार करने मे व्यतीत किये। वाट ने बीस वर्ष तक भाफ के इंजिन का अध्ययन किया था। हारवे ने आठ वर्ष शरीर की रक्त-सचालन-विधि को ढूंढ निकालने मे व्यय किये। उसके साथी उसे पागल कहा करते थे। २५ वर्ष तक गाली और हंसी-मजाक सहने के बाद उसके आविष्कार को डाक्टरों ने अपनाया था।

विपरीत परिस्थितियों का विरोध करने से ताकत पैदा होती है। क्योंकि विरोध से प्रतिकार करने की अधिक से अधिक ताकत पैदा

होती है। एक बाधा को दूर करने से उससे कठिन दूसरी बाधा को दूर करने को ताकत आजाती है।

कोलम्बस ने कहा—"जब सूर्य और चन्द्रमा गोल है तब पृथ्वी गोल क्यों नहीं हो सकती?"

एक आदमी बोल उठा—"जब पृथ्वी गेंद के समान है तो वह लटकी किसके सहारे है?"

कोलम्बस—"महाशय, सूर्य और चन्द्रमा को कौन रोके हुए है?'

एक पादरी ने कहा—"लेकिन यह सिद्धान्त ही बाइबल के विरुद्ध है। बाइबल कहती है कि आकाश तम्बू के समान ऊपर तना है—वह चपटा है, और उसे गोल कहना धर्म का अपमान करना है।"

यह सब सुन निराशा से कोलंबस ने अपना देश छोड दिया और सातवे चार्ल्स की शरण लेना चाही। परन्तु उसी समय एक धीमी आवाज उसके कानों मे पडी। एक पुराने दोस्त ने रानी इसाबेला को सुझाया कि यदि इस मांझी का कथन सच है तो थोड़े से खर्च मे उसकी बडी ख्याति हो जावेगी और आपको भी श्रेय मिलेगा। तब रानी ने हिम्मत करके कहा—"अच्छा बुलाओ, उसको। मैं स्वयं अपने हीरे-जवाहरात गिरवी रखकर उसे पैसा दूंगी।"

कोलम्बस लौटा और उसके साथ ही दुनिया भी लौट पडी। कोई नाविक उसके साथ जाना नहीं चाहता था। और मौत के मुह मे जाता भी कौन? धुधली-सी आशा के प्रकाश मे अपना जीवन फेंक देनेवाले वीर संसार मे विरले ही होते है। फिर भी राजा और रानी के जोर पर कुछ लोग तैयार हुए।

तीन दिन और रात तक पिन्टा नामक एक छोटा-सा जहाज महासागर की लहरों से टक्कर लेता रहा। ऊपर आकाश और नीचे आकाश से बातें करनेवाली लहरे, चारों ओर अनन्त जलराशि। ऐसे समय मे सहसा एक मस्तूल खराब हो गया। माझियों ने बलवा करना चाहा और देश को लौट जाने पर जोर देने लगे। परन्तु उद्योगी और निश्चयी कोलम्बस कब हटनेवाला था? उसके जीवन का एक काम, एक लक्ष्य और एक आशा थी। उसने साथियों को भारत के खजाने और कीमती हीरों का लोभ दिया। कनरीज द्वीप के २०० मील दूर पश्चिम के स्थान पर कुतुबनुमा-यन्त्र के खराब हो जाने से उसकी सुई ने उत्तरीय ध्रुव को बताना बन्द कर दिया। तब उपद्रवी मल्लाहों को उसने समझाया कि ध्रुव तारा बिलकुल उत्तर मे नही होता है। घर से २३०० मील की दूरी पर होने पर भी उसने साथियों को समझाया कि अभी तो हम १७०० मील ही चल पाये है, अभी हिम्मत नही हारनी चाहिए। थोड़े समय मे उसे झाडियों की कुछ लकडिया तैरती हुई दिखाई दीं। आकाश मे कुछ पक्षी उडते हुए दीख पड़े। स्वप्न सच हो गया। १२ अक्तूबर १४९२ को पश्चिमी दुनिया मे जाकर कोलम्बस ने अपना झण्डा गाड दिया। उसे नई दुनिया मिल गई।

अपने चुने हुए कार्य मे बार-बार असफलता मिलने पर भी उसमे लगे रहने के कारण जीवन-संग्राम मे मनुष्य विजय पाते है। उनकी विजय मित्रों की सहायता, अनुकूल परिस्थिति अथवा अपनी स्वाभाविक शक्तियों की अपेक्षा उद्योग करने पर कही अधिक निर्भर

रहती है। योग्यता की भी आवश्यकता जरूर रहती है, परन्तु उद्योग किसी हालत में कम उपयोगी नहीं रहता।

बाइवल मे एक वाक्य है—"मुसीबतों पर जो विजय प्राप्त करता है अपने तख्त पर उसके लिए मैं जगह करता हूँ।"

एक चीनी विद्यार्थी बार-बार अपने प्रयत्नों मे असफल होने के कारण निराश हो गया। किताबों को उसने दूर फेंक दिया। लेकिन उसकी दृष्टि एक बूढी औरत पर पडी। वह एक लोहे के टुकड़े को घिसकर सुई बनाने मे लगी हुई थी। उसके धैर्य को देखकर विद्यार्थी ने भी अपना एक नवीन निश्चय किया और चीन के तीन प्रसिद्ध विद्वानों मे उसकी गणना होने लगी।

सिडनी स्मिथ का कहना है कि साधारणतः लगभग सारे महान् पुरुषों का जीवन अत्यंत अविरत परिश्रमवाला होता है। जिन्दगी का पहला आधा भाग वे गरीबी और परिश्रम मे विताते है। लोगों का ध्यान उनकी ओर जाता ही नहीं। जब लोग नीद मे सपने देखते होते हैं तब वे वर्तमान की स्थिति मे से रास्ता निकालकर भविष्य के महान् व्यक्ति बनने का मार्ग खोजते रहते है। उनकी अंतरात्मा तो यही कहा करती है कि वे जगत् के इस उपेक्षित कचरे मे हमेशा कभी नही रह सकते, वे एक दिन जरूर चमकेंगे।

मिलिब्रान कहा करता था कि "यदि एक दिन मैं अपने काम का अभ्यास करना छोड देता हूं तो मुझे अपने अभ्यास की कमी स्पष्ट मालूम होने लगती है, यदि दो दिन निकल गये तो मेरे मित्र देखते है, और यदि एक सप्ताह तक यही हालत रही तो मेरी असफलता को

संसार देखता है।" बात ठीक ही है। बार-बार प्रयत्न करने से दिमाग की शक्तियाँ जागृत अवस्था मे रहती है।

कार्लाइल ने फ्रास की राज्यक्रान्ति का इतिहास लिखा था। उसका प्रथम भाग छपने के लिए जानेवाला था कि एक मित्र ने उसे पढने के लिए माँगा। उसने वह दे दिया। मित्र की भूल से वह कापी फर्श पर पडी रह गई और दासी ने उसे रद्दी कागज समझकर आग जलाने के काम मे लेलो। कितनी निराशा की बात थी ? परन्तु दृढव्रती कार्लाइल हतोत्साह नहीं हुआ। कई महीनों तक सैकडों ग्रन्थों, अनेकों हस्तलिखित पत्रों और दर्जनों विश्वसनीय घटनाओं से पूर्ण रचनाओं का अध्ययन करने के बाद उसने फिर से उस ग्रन्थ को लिख डाला।

- बड़े-बड़े लेखक हमेशा ही अपनी अदम्य दृढता के लिए प्रसिद्ध रहते है। उनकी रचनाये दिमाग की प्रतिभा की चिनगारियों का परिणाम नही होतीं, परन्तु वे बार-बार के सुधार का परिणाम रहती है। इस रचना कौशल के द्वारा उनमे विचित्र सौन्दर्य और महानता आ जाती है।

गतिशील पत्थर को काई नहीं लगती, काम मे आनेवाले लोहे पर जग नही लगती। लगातार बार-बार प्रयत्न करनेवाला असफल नहीं होगा। बारह वर्ष घर मे नियम से प्रतिदिन १ घंटा काम करना स्कूल के चार वर्षों के अध्ययन से कही अधिक अच्छा है। एक अच्छे ग्रन्थ के पढने से मनुष्य का जीवन सुधर जाता है। बुलवर कहता है कि धीरज विजेता का साहस है। वह सर्वोत्तम गुण है, जो मनुष्य के भाग्य के विरोध के आगे खडा होता है।

अपने हाथ मे लिये हुए कार्य मे डटे न रहने के कारण ही असफलता मिलती है। क्या तुम एक भी ऐसा उदाहरण बता सकते हो जहा सच्ची सफलता की जड़ मे दृढता न छिपी हो ? अमर चित्रकारो को अपनी कूचियों को कागज पर चलाते-चलाते क्या वरसों नही बीत जाते ? कोई अमर लेखक क्या योंही बन जाते हैं ? क्या उन्होंने वरसों अभ्यास के बाद अपनी रचना नहीं की है ? जिस समय संसार ऐश-आराम मे मग्न था उस समय वे अपने हाथ मे कलम लिये अपने दिमाग और अध्ययन को चिरस्थायी कर रहे थे। बर्क कहता है कि "निराश मत होओ। और अगर निराश होओ भी तो अपना काम बन्द मत करो। निराशा मे भी काम करते जाओ।"

---

# [ १५ ]

## संक्षेप

"चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, सक्षेप मे कहना हमेशा ही अच्छा है।"

—बटलर

"शब्द पत्तो के समान है। जहा वे बहुतायत से रहते है वहा फलरूपी ज्ञानयुक्त बाते कठिनाई से दिखाई पडती है।"

—पोप

"जो-कुछ तुम्हे कहना या लिखना हो उसे थोडे ही मे कहो या लिखो।"

—जान नील

"एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।"

—चार्ल्स बक्सटन

संक्षेप मे खतम करो। थोड़े-से मे अपनी कहने की बात पर आ जाना चाहिए। बुद्धिमत्ता और विनोद मे खास ध्यान देने योग्य बात सक्षेप है। सास के वेग से भी दूर हट जानेवाली वायु को एक

जगह खूब दबाकर रखने से उसमें इतनी ताकत आजाती है कि अपने सामने की चट्टान के भी टुकड़े-टुकड़े कर देती है। यदि तुम कोई महत्वपूर्ण काम करना चाहते हो तो एकाग्रता पर ध्यान दो। यदि तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारी बातों से लाभ उठावें तो उसके सार को एकत्र करके रखो।

'न्यूयार्क ट्रिब्यून' मे होरेस ग्रील जिस विषय पर एक लेख लिखता था उसी विषय पर थरलो वीड एक अन्य पत्र मे कुछ शब्द ही लिख देता था। उसके ये शब्द चिनगारियों का काम करते थे।

साइरस फील्ड्स अपने मुलाकातियों से कहा करते थे—"जो-कुछ आपको कहना हो सपेक्ष मे कहिए। समय अमूल्य है। ठीक समय पर काम करना, ईमानदार रहना और सक्षेप मे काम निकालना ये तीनों ही जीवन कुंजिया है। कभी लम्बी चिट्ठी मत लिखा करो। एक कामकाजी आदमी के पास उसे पढने के लिए समय नहीं है। ऐसा कोई भी काम नही है जिसे एक कागज पर न लिख सकते हो। बरसों पूर्व जब मैं अटलान्टिक महासागर मे केबिल डालने मे लगा हुआ था तब मुझे एक महत्वपूर्ण पत्र इंग्लैण्ड को लिखने का मौका आया। मुझे मालूम था कि रानी और प्रधान मंत्री उसे पढ़ेंगे। अपने विचारों को मैंने लिखा। कई कागज भर गये। मैंने उसको बीस बार पढा। हर बार कुछ-न-कुछ आवश्यक शब्दो को दूर कर देता था। होते-होते सारी बात कागज के एक टुकडे मे आ गई। फिर मैंने उसे ठीक करके समय पर भेज दिया। उसका उत्तर सन्तोपजनक आया। क्या आप सोचते है कि लम्बा पत्र भेजता तो उसका भी यही परिणाम होता?

उस पत्र को पढने के लिए उनके पास समय कहां से आता ? संक्षेप एक वडा मूल्यवान गुण है ।"

ए० टी० स्टुवर्ट अपने समय को पूजो समझता था। उसके आफिस मे कोई भी व्यक्ति दरवान को विना सूचना दिये प्रवेश नही कर पाता था। इसके वाद आफिस के पास खडे रहनेवाले नौकर को भी सूचना देनी पडती थी। यदि आगन्तुक "अकेले मे" मिलने की इच्छा प्रकट करता था तो नौकर कह दिया करता था कि "मि० स्टुवर्ट किसीसे अकेले मे नही मिलते।" जव इतनी आपत्ति उठाने के वाद कोई स्टुवर्ट के सामने पहुंचता था। तव उसे विलकुल सक्षेप मे वातचीत करनी पड़ती थी। स्टुवर्ट के भारी कारवार का समस्त कार्य योग्य प्रणाली और शीघ्रता से होता था। प्रतिद्वन्द्वी व्यापारी इसे देखकर आश्चर्य मे पड़ जाते थे। इधर-उधर कुछ नहीं होता था। व्यापारिक ढंग ही उनके जीवन की कुजी थी। सुवह से शाम तक यही वात आँखों के सामने रहती थी। वह काम-काज के समय मे अपने मित्रों से वातचीत तक न करते थे। उनके पास एक क्षण भी व्यर्थ जाने के लिए नही था।

साऊदे ने ठीक कहा है कि यदि तुम तीव्र होना चाहते हो तो सक्षेप को ग्रहण करो। जिस तरह सूर्य की किरणों के एकत्र होने से आग लग जातो है उसी तरह संक्षेप का परिणाम होता है।

स्टील ने कहा है कि "जव किसी को केवल स्पष्ट सत्य ही कहना है तव वह थोडे मे कह सकता है।"

ग्रीस के सात विद्वानो का नाम संसार मे आजतक उनके दो अथवा तीन शब्दों के छोटे-छोटे वाक्यो के कारण ही है।

एडवर्ड ट्रायन ने कहा भी है—"राष्ट्रों की विद्वत्ता उनकी कहावतों में है। हमेशा ध्यान मे रखना चाहिए कि पहले कहने के लिए कुछ सामग्री हो। सामग्री होने के वाद अपने कथन को संक्षेप मे कह दो और चुप हो जाओ।"

---

# सस्ता-साहित्य-मण्डल के

## प्रकाशन

| | |
|---|---|
| १—दिव्य-जीवन | ।=) |
| २—जीवन साहित्य (दो भाग) | १।) |
| ३—तामिलवेद | ॥।) |
| ४—शैतान की लकड़ी तर्थात् भारत में व्यसन और व्यभिचार | ॥।=) |
| ५—सामाजिक कुरीतियाँ (जब्त . अप्राप्य) | ॥।) |
| ६—भारत के स्त्री-रत्न (दो भाग) | १॥।-) |
| (तीसरा भाग) | १।) |
| ७—अनोखा (विक्टर ह्यूगो) | १।-) |
| ८—ब्रह्मचर्य-विज्ञान | ॥।=) |
| ९—यूरोप का इतिहास | २) |
| १०—समाज-विज्ञान | १॥) |
| ११—खद्दर का सम्पत्ति-शास्त्र | ॥।≡) |
| १२—गोरों का प्रभुत्व | ॥।=) |
| १३—चीन की आवाज (अप्राप्य) | ।-) |
| १४—दक्षिण अफ्रिका का सत्याग्रह | १।) |
| १५—विजयी बारडोली | २) |
| १६—अनीति की राह पर | ।≡) |
| १७—सीताजी की अग्नि-परीक्षा | ।-) |
| १८—कन्या-शिक्षा | ।) |
| १९—कर्मयोग (अप्राप्य) | ।=) |
| २०—कलवार की करतूत | =) |
| २१—व्यवहारिक सभ्यता | ॥ |
| २२—अंधेरे मे उजाला | ॥) |
| २३—स्वामीजी का बलिदान (अप्राप्य) | ।-) |
| २४—हमारे जमाने की गुलामी (जब्त अप्राप्य) | ।) |
| २५—स्त्री और पुरुष | ॥) |
| २६—घरों की सफ़ाई | ।=) |
| २७—क्या करें ? (दो भाग) | १॥=) |
| २८—हाथ की कताई-बुनाई (अप्राप्य) | ॥=) |
| २९—आत्मोपदेश | ।) |
| ३०—यथार्थ आदर्श जीवन (अप्राप्य) | ॥-) |
| ३१—जब अंग्रेज नहीं आये थे- | ।) |
| ३२—गंगा गोविंदसिंह (अप्राप्य) | ॥=) |
| ३३—श्रीरामचरित्र | १।) |

पता—सस्ता-साहित्य-मण्डल, नया बाजार, दिल्ली।